॥ ओ३म् ॥

वैदिककोषः

(निघण्टुमणिमाला)

जयपुरराजसभाप्रधानपण्डितविद्यावाचस्पति
श्रीमधुसूदनशर्मणा मैथिलेन विरचितः

द्वितीय संस्करणम्

सोऽयं

अजयमेरु नगरे वैदिक यन्त्रालये मुद्रयित्व
प्रकाशितः

प्रकाशको
वैदिक पुस्तकालय,
दयानन्दाश्रमः, केसरगंज,
अजयमेरु

॥ ओ३म् ॥

वैदिककोषः

(निघण्टुमणिमाला)

जयपुरराजसभाप्रधानपण्डितविद्यावाचस्पति
श्रीमधुसूदनशर्मणा मैथिलेन विरचितः

द्वितीय संस्करणम्

सोऽयं

अजयमेरु नगरे वैदिक यन्त्रालये मुद्रयित्व
प्रकाशितः

प्रकाशको
वैदिक पुस्तकालय,
दयानन्दाश्रमः, केसरगंज,
अजयमेरु

सं० २०५० वि०

मूल्यम् : रु. २५)

भूमिका

सुप्रतिपन्नमिदं सर्वैरपि प्रज्ञाचणैर्यद्वेद एव भारतीयानां परं निःश्रेयसकारणम्, असाधारणो गौरवहेतुः गरीयसी संपच्चेति । स चाद्य सर्वपुरुषार्थहेतुः, कालपर्ययाद्विपर्यस्तमतिभिरस्माभिरत्यर्थमुपेक्षित इत्यपि भावयन्त्येव कालेऽस्मिन् भावुका विपश्चितः । परं चिराद्वेदार्थपरिशीलनपरम्पराया विच्छिन्नत्वेन तदर्थमतितरां प्रयतमानैरपि बहुभिर्नाशानुरूपं फलमुपभुज्यत इति तस्य पुनः प्रचाराय तदर्थबोधनायोपयुज्यमानानामङ्गग्रन्थानां प्रचार इदानीं बहुतरमपेक्ष्यते, अर्थबोधनाय चोपयुज्यमानेष्वपि बहुष्वङ्गेषु कोश एव प्रथमं सोपानमिति लोकसाम्यादेवावगम्येत विद्वद्वरैः । वेदाङ्गः कोशश्च समाम्नायापरपर्यायो निघण्टुनामातिप्राचीनो भगवद्यास्ककृतनिरुक्ताख्यभाष्यसंवलितः प्रसिद्ध्यत्येव सर्वत्र । परमत्र पठितानां नाम्नां मुक्तकरूपतया न तानि सौकर्येणाभ्यासितुं पारयन्ति विद्यार्थिनः, न चात्राभ्यसनसौकर्यार्थमुपयुज्यमानः सन्निवेशक्रमोऽपि यथावद् दृश्यते, बहवश्च शब्दा अत्र सन्दिग्धार्थकत्वेनैवोपनिबद्धाः, भाष्येकारेण च भगवता यास्केन सुविचार्य कृतेऽपि तदर्थनिर्णये न ततः सम्यगवगन्तुं पार्यते प्रथमाधिकारिभिः । ताभिरेताभिर-

नुपत्तिभिर्जायमानां वेदार्थाधिगमेच्छूनामुत्साहक्षतिमालोक्य तन्निवर्तनाय यथाशक्यमहं प्रावर्तिषि । तत्र देशेऽस्मिश्चिरात्प्रवृत्तां पद्यमयकोशाभ्यसनपरिपाटीमनुरुध्य पद्यमयेनानेन प्रबन्धेन निघण्टूक्ताः शब्दाः प्रकरणशो विभज्योपनिबद्धाः सन्दिग्धाश्चापि निरुक्तप्रतिपादितार्थेन व्याख्याताः, किं च बहुतरोपयुक्तो दैवतनिरूपणांशोऽपि निरुक्तविवृतः सूक्ष्मरूपेणेह प्रतिपादितः । तदवश्यं सम्यगभ्यस्तोऽयं निबन्धो वेदार्थविज्ञानप्रेप्सूनामत्यर्थमुपकुर्यादिति विश्वसिमः ।

अत्र च ग्रन्थे निघण्टुप्रतिपादिता एव शब्दा उपनिबद्धा नातिरिक्ताः । यद्यपि सन्त्येवापरेऽपि बहवः शब्दा वेदेषु श्रूयमाणा ये नोपनिबद्धा भगवता निघण्टुकृता, न च स्पृष्टा भगवता यास्केनापि; परं नतेऽत्राप्युपनिबद्धाः । तेषामपि तु शब्दानां ब्राह्मणग्रन्थानुसारि निरूपणं चिकीर्षितमस्माभिः; तद्यदि ग्रन्थमिमं पर्यालोच्य प्राज्ञवरा वर्द्धयिष्यन्त्यस्मदुत्साहं तर्ह्य चिरादेवापरेण भागेन निघण्टुष्वनभिहितानामपि शब्दानां कोशं प्रकाशयिष्यामः । अन्ततश्च प्रीयतामेतेन व्यापारेण भगवान् भूतभावनो वेदपुरुष इत्याशासाना यत्नमिमं सफलयितुं विदुषां सापेक्ष दृष्टिपातमभ्यर्थयामहे । इति शुभम् ।

—:**:—

प्रकाशकीय

सभा द्वारा दुर्लभ आर्ष साहित्य प्रकाशन के क्रम में वैदिक विद्वान् पं. मनोहर विद्यालंकार से चर्चा चल रही थी, उन्होंने अपने संग्रह से यह पुस्तक प्रदान करते हुए इसे प्रकाशित करने की प्रेरणा दी । हमने परोपकारी के माध्यम से पाठकों तक इसे पहुँचाया है तथा भविष्य की सुलभता के लिए इसे पुस्तकाकार भी प्रकाशित किया है ।

इस पुस्तक को उपयोगी बनाने के लिए वेद एवं शास्त्रों के पण्डित श्री अनन्त शर्मा, ब्यावर ने अपनी विद्वतापूर्ण भूमिका लिखकर इस पुस्तक के महत्त्व को उद्घाटित किया है और इसकी विशेषताओं से पाठकों को परिचित कराया है ।

पुस्तक में शोधकर्त्ताओं के लिए सूचियों का होना आज की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है । इस कठिन कार्य को मान्य विद्वान् डॉ. वेदपाल सुनीथ ने अपने पटु शिष्यों के सहयोग से सम्पन्न कराया है ।

ये सभी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं । हमें विश्वास है भविष्य में भी इसी प्रकार विद्वानों का सद्भावपूर्ण मार्गदर्शन सदा प्राप्त होता रहेगा । सभा की ओर से इन सबका बहुत धन्यवाद ।

श्री मधुसूधन ओझा के विचार ऋषि दयानन्द प्रतिपादित शैली से भिन्न होने पर भी उनके पाण्डित्य पूर्ण प्रयास का आदर करना वेद की प्रतिष्ठा बढ़ाने व वेद के रहस्य को समझने में सहायक है । इस भावना के साथ यह पुस्तिका पाठकों की सेवा में समर्पित है ।

—धर्मवीर
सं० मन्त्री

—:**:—

वैदिक-कोष

एक परिचय

भगवान् यास्क द्वारा प्रोक्त निघण्टु निरुक्त वेदाङ्ग का एक मात्र उपलब्ध प्रतिनिधि ग्रन्थ है। अत्यन्त प्राचीन काल के अनेक पूर्ववर्ती निघण्टु ग्रन्थों के अस्तित्व का पता यास्क के ही निरुक्त से चलता है। ये निघण्टु अथवा निरुक्त के आचार्य अकारादिक्रम में निम्नलिखित हैं, कोष्ठक में दी गयी संख्या निरुक्त में इनके स्मरण को बताती है—

१. आग्रायण (४) २. औदुम्बरायण (१) ३. औपमन्यव (१२) ४. और्णवाभ (५) ५. कात्थक्य (७) ६. क्रौष्टुकि (१) ७. गार्ग्य (३) ८. गालव (१) ९. चर्मशिरा (१) १०. तैटिकि (२) ११. वार्ष्यायणि (१) १२. शतबलाक्ष मौद्गल्य (१) १३. शाकटायन (२) १४. शाकपूणि अथवा शाकपूणि रथीतर (२१) १५. शाकपूणि पुत्र (१) १६. स्थौलाष्ठीवि (२)। पुराण आदि वाङ्मय विधाओं में प्रायः इनका निरुक्तकारत्व तो बताया ही गया है अन्य विविध शास्त्रों के प्रमाणभूत आचार्यों के रूप में इनकी गणना है। भारतीय वाङ्मय में सभी शास्त्रों की प्रवृत्ति ब्रह्मा से मानी गयी है तथा वेदांगों के द्वितीय प्रवचनकर्त्ता बृहस्पति हैं। निरुक्त की ब्रह्मा से प्रारम्भ यह अक्षुण्ण परम्परा महाभारत के कुछ पूर्व नष्टप्राय हो चली थी। उदार धी यास्क ने प्राचीन परम्परा को निघण्टु निरुक्त के प्रवचन से पुनः उद्धृत किया ऐसा भगवान् व्यास नेमहाभारत में निबद्ध किया है—

यास्को मामृषिरव्यग्रो नैक यज्ञेषु गीतवान् ।
शिपिविष्ट इति ह्यस्माद् गुह्यनाम धरोह्यहम् ।।

—शांतिपर्व ३४२ । ७२

स्तुत्वा मां शिपिविष्टेति यास्क ऋषिरुदारधीः ।
मत्प्रसादादधो नष्टं निरुक्तमभिजग्मिवान् ।। ७३ ।।

सोलह आचार्यों के मत तथा २२ बार उद्धृत 'इति नैरुक्ताः' प्रतीक से दिये गये निरुक्त सम्प्रदाय के मत, स्वप्रतिपाद्य समर्थन में दिये गये ब्राह्मणवाक्य तथा निर्वक्तव्य मन्त्र के भाष्य के प्रसंग में दिये गये याज्ञिक पूर्वयाज्ञिक वैयाकरण ऐतिहासिक नैदान आख्यानसमय आदि के विभिन्न सम्प्रदायों का उद्धरण यास्क के निरुक्तोद्धार के व्यापक प्रयत्नों का निर्विवाद प्रमाण है। निरुक्त के अन्तःसाक्ष्य से ज्ञात होता है कि निरुक्त प्रवचनकाल में सभाजित् की स्यमन्तक मणि अक्रूर के पास थी 'धारणार्थक दद धातु से दण्ड का निर्वचन' बताने के प्रसंग में ददकी धारणार्थकता का लोक व्यवहार बताते हुए यास्क 'अक्रूरो ददते मणिम्' वाक्य उपन्यस्त करते हैं तथा बताते हैं कि लोग इस वाक्य को प्रायः बोलते सुने जाते हैं 'इत्यभि भाषन्ते'। वर्तमान काल की ये दोनों क्रियायें निरुक्त प्रवचन की समकालिकता को स्पष्ट करती हैं। हरिवंश पुराण के हरिवंश पर्व ३१-३६-३७ से तथा विष्णु पुराण (४. १३. ११०) से इस मणिका अक्रूर के पास ६०-६२ वर्षों तक रहना प्रतीत होता है। यह कौरव-पाण्डव युद्ध पूर्व की घटना है।

अपने प्रवचन काल में ही निरुक्त सर्वत्र समादृत हो गया था। कुलपति महाशाल शौनक के बृहद्देवता का उपोद्घात पूर्णतया निरुक्त पर आधारित है तथा अन्य प्रकरणों में भी उन्होंने यास्क को सबहुमान वृद्ध सम्मति के रूप में उद्धृत किया है। इस प्रकार गत

पाँच सहस्र वर्षों से एकमात्र यास्क निरुक्त ही निरुक्त का प्रतिनिधि ग्रन्थ है इसमें कहीं कोई विवाद नहीं है।

यद्यपि निरुक्त में उद्धृत निगम प्रायः ऋग्वेद के ही हैं तथापि यह ग्रन्थ वेदमात्र का सामान्य वैसा ही व्यवहार्य है जिस प्रकार भगवान् पाणिनि का तन्त्र सर्ववेदपारिषद शास्त्र है।

निघण्टु वेद के अति परोक्ष वृत्ति पदों का संग्रह है तथा निरुक्त इनका निर्वचनात्मक सोदाहरण व्याख्यान है।

निघण्टु के तीन काण्ड हैं नैघण्टुक नैगम तथा दैवत। नैघण्टुक काण्ड में तीन अध्याय हैं जो क्रमशः १७, २२ और ३० खण्डों में विभाजित हैं। इस काण्ड में कुल ६९ खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड एक-एक नाम के पर्यायवाचक पदों का संग्रह है। यहाँ कुल १३४० पद हैं जो अध्याय क्रम से ४१४, ५१६ तथा ४१० हैं। यास्क ने इन तीन अध्यायों में आये इन सभी पदों का निर्वचन नहीं किया है। शास्त्रानुशासन की पद्धति को लेकर निदर्शन रूप में एक-एक, दो-दो पदों का निर्वचन किया है। जैसे निघण्टु के प्रथम अध्याय के प्रथम खण्ड में पृथिवी के गौः ग्मा आदि २१ नाम पढ़े गये हैं। निरुक्त में इनमें से गौ और निर्ऋति को लिया गया है। व्याख्याप्रसंग में गौ के अन्य भी सम्भव अर्थों को देते हुए उनका भी सोदाहरण निर्वचन किया गया है। इसकी कृत् और तद्धित वृत्ति से होने वाले अर्थभेद को भी बताया गया है। निरुक्त विद्या का सम्पूर्ण वैभव प्रदर्शित कर यास्क ने कहा कि इस प्रकार निर्वचन करने चाहिये। प्राणियों के निरमण का स्थान होने से पृथिवी जहाँ निर्ऋति है वहीं कष्टकर अवस्था भी निर्ऋति है। इन दोनों का सूक्ष्म अन्तर समझना चाहिये तथा तदनुकूल ही निर्वचन होना चाहिये। इसके लिए उद्धृत ऋचा के अभिप्राय में यास्क ने परिव्राजकों तथा नैरुक्तों का

दृष्टिभेद बता कर मन्त्र के दोनों अर्थ दिये हैं। परिव्राजकों के मत में बहुप्रजावाला कष्ट भोगता है फलतः निर्ऋति कष्टकर अवस्था अर्थ में है। नैरुक्त इसे वर्षा अर्थ से सम्बद्ध मानकर निर्ऋति का भूमि अर्थ लेते हैं। यह दैवतज्ञान एवं निरुक्त के सम्बन्धों को स्पष्ट करने वाला प्रसंग है अतः यह पद चुना गया। तीनों अध्यायों में इसी दृष्टि से निर्वचन रहस्य खोलने वाले पद चुने गये हैं।

नैगम काण्ड में अनवगतार्थ तथा अनेकार्थ पदों का संग्रह है, इसके लिए एक ही अध्याय—निघण्टु का चतुर्थ—है। इस अध्याय में कुल तीन खण्ड हैं। इनमें क्रमशः ६२, ८४, १३२ कुल २७८ पद हैं। निरुक्त में इन सभी पदों का निर्वचन है।

निघण्टु का पञ्चम अध्याय दैवत काण्ड है। इसमें ६ खण्ड हैं। इनमें क्रमशः ३, १३, ३६, ३२, ३६ और ३१ पद हैं। इनकी कुल संख्या १५१ है। ये सभी विभिन्न देवताओं के नाम हैं तथा इन्हें पृथिव्यायतन अन्तरिक्षायतन एवम् द्युवायतन रूप में विभाजित किया गया है।

निघण्टु के तीनों काण्डों में कुल ७८ खण्ड तथा १७६९ पद हैं। निघण्टु निरुक्ताध्ययन को उपेक्षित कर अथवा इससे अपरिचित रह कर कोई वैदिक पदों का वास्तविक अर्थ नहीं जान सकता है यह सर्वथा सत्य है। पर्वत गिरि व्रज चरु वराह शम्बर रौहिण वृत्र असुर आदि मेघ के नाम हैं। लोकप्रसिद्धि में पर्वत गिरि= पहाड़, व्रज=गोष्ठ, चरु=हव्य, वराह=शूकर, शम्बर वृत्र असुर= दैत्यविशेष के रूप में है। इन अर्थों से वेदार्थ करना वेदार्थ का नाश है। निघण्टु निरुक्त से ही उपयुक्त अर्थ मिलेंगे।

निघण्टु की इस उपयोगिता की दृष्टि से सभी पदों का अविकल स्मरण अनिवार्य है। इस अनिवार्यता को दृष्टि में रखकर

विद्यावाचस्पति श्री मधुसूदनजी ओझा ने निघण्टु को पद्यबद्ध करने का श्लाघनीय प्रयास किया है।

स्मृति के लिए स्मरणीय वाङ्मय की पद्यात्मकता आदिकाल से ही व्यवहार्य रही है। वेद जैसा अलौकिक ईश्वरीयज्ञान पद्यबद्ध है। आयुर्वेद की सुश्रुत चरक वाग्भट आदि की संहिताएँ, ज्योतिष की पुरातन एवं नवीन पाराशरी व वाराही जैसी संहिताएँ शिल्प-वेद के मूर्धन्य ग्रन्थ, रामायण-महाभारत आदि ऐतिह्यविषयक ग्रन्थ, सभी पद्यबद्ध ही हैं। यहाँ तक कि प्रातिशाख्य एवम् व्याकरण विषय के ग्रन्थों का भी कारिकात्मक रूप प्राप्त है। धातु गण उणादि आदि के अनेक ग्रन्थ पद्य रूप में प्राप्त हैं। संस्कृत के प्राचीन अर्वाचीन, एकार्थक नानार्थक कोष वनस्पति कोष पद्यात्मक ही हैं। निरुक्त श्लोकवार्तिक के उद्धरण अनेकत्र मिलते हैं। निरुक्त की पद्यबद्ध व्याख्या का प्राप्य भाग रामलाल कपूर ट्रस्ट ग्रन्थमाला से प्रकाशित भी हो चुका है। इसी परम्परा में ओझाजी का यह वैदिक-कोष भी है।

ऐसा प्रयास एकमात्र श्री ओझाजी का ही नहीं है। श्री छज्जूरामजी शास्त्री ने भी निघण्टु के प्रारम्भिक तीन अध्यायों को पद्यबद्ध किया है। सम्भवतः कहीं पुराने और नवीन भी ऐसे अन्य प्रयास अप्रकाशित हों तथापि ऐसे प्रयास निघण्टु के विषय में अत्यल्प ही रहे हैं ऐसा लगता है।

निघण्टुस्थ प्रत्येक पद स्वतन्त्र है अतः उसके स्वर पदस्वर हैं। श्लोकबद्धता में संहितास्वर की अनिवार्यता है तथा अस्वर ग्रथन से स्वरज्ञान के लाभ से वञ्चित रहना होता है अतः सम्भवतः अप्रवृत्ति का यह प्रमुख कारण रहा हो।

प्रथम तीन अध्यायों में पर्यायवाचक पदों का संग्रह होने से इनकी पद्यबद्धता के उपयोग में कहीं कोई प्रश्नचिह्न नहीं है किन्तु

चतुर्थ पञ्चम अध्यायों में प्रत्येक पद स्वतन्त्र है अतः अर्थादेश के अभाव में इनका ज्यों का त्यों पद्य रूप में ग्रथन लाभ की दृष्टि से अकिञ्चित्कर है, अतः इस प्रकार का अपूर्ण प्रयास करना व्यर्थ समझकर भी इस ओर प्रवृत्ति नहीं रही होगी। प्रत्यक्ष भी है, श्री छज्जूरामजी शास्त्री ने केवल प्रथम तीन अध्यायों को पद्यबद्ध कर शेष को छोड़ दिया।

एक तीसरा कारण और भी सम्भव है। जितना स्थान पठन-पाठन में निरुक्त का रहा है उतना निघण्टु का नहीं। ब्रह्म-स्वाध्याय-यज्ञ में भले ही निरुक्त के बाद ही सही निघण्टु को स्थान प्राचीन परम्परा देती रही है और नित्यकर्त्तव्यविधि में लेती रही है किन्तु व्यवहार में निघण्टुपाठ नित्यकर्मविधि में अनिवार्यतः नहीं रहा। इस युग में महर्षि दयानन्द सरस्वती ही प्रथम व्यक्ति थे जिनके द्वारा निघण्टु के स्वाध्याय पर समुचित बल दिया गया, इसे मुद्रित करा कर सर्वत्र उपलब्ध कराया गया, विभिन्न पाठभेदों को दृष्टि में रखकर परिष्कृत तर संस्करण का रूप दिया गया जो वर्षों से अप्राप्य था। सम्भवतः इस उपेक्षा वृत्ति से भी इसके पद्यात्मक रूप की ओर मनीषियों का ध्यान न गया हो।

श्री ओझाजी ने इस पर ध्यान देकर इसका सम्पूर्ण पद्यात्मक रूप ग्रथित किया। यह स्मरणीय है कि निघण्टु बिना निरुक्त तथा निरुक्त बिना निघण्टु अपूर्ण हैं। व्याख्येय एवम् व्याख्या का सह प्रकाशन ही पूर्णता अथवा कृत्स्नता के रूप में उपादेयतर है। 'समाम्नायः समाम्नातः स च व्याख्यातव्यः' रूप निरुक्त प्रथम वाक्य इस तथ्य को प्रकट कर रहा है। उपोद्घात की समाप्ति पर निघण्टु पदों की व्याख्या का आरम्भ 'अथातोऽनुक्रमिष्यामः' जिस क्रम को सूचित कर रहा है वह निघण्टु के सह पाठ की अपेक्षा रखता है। एक खण्ड की समाप्ति के अनन्तर 'हिरण्यनामान्युत्तराणि पञ्चदश' पाठ आगे पढ़े जाने वाले हिरण्य के १५ नामों की अपेक्षा रखता है। इसे दृष्टि में रखकर निघण्टु के निरुक्तसम्मत अर्थों को देने का अतीव स्तुत्य प्रयास भी श्री ओझाजी ने किया है। निघण्टु के चतुर्थ अध्याय के तीनों खण्डों में पठित पदों को यथावत् पद्यबद्ध कर बाद में उनके अकारादिक्रम में महर्षि यास्क सम्मत अर्थ भी पद्यबद्ध रूप में दे दिये हैं। इसी भाँति पञ्चम अध्याय के पदों को सर्वप्रथम दैवत वर्ग में पढ़कर अन्त में बृहद्देवता के आधार पर दशम वर्ग में उसी के मूल पद्यों में उनका अर्थ देने का यत्न किया है।

यहाँ यह भी स्मरण रखने योग्य तथ्य ध्यान में रखना चाहिये कि बृहद्देवता निर्वचन क्षेत्र में पूर्णतया निरुक्त को लेकर ही चलता है। पाश्चात्य विद्वानों ने विशेषतः बृहद्देवता के सम्पादक एवम् व्याख्याता श्री मैक्डॉनल ने एक भ्रान्त धारणा को जन्म दिया कि शौनक यास्क का आलोचक है विशेषतः यास्क की भ्रान्त व्याख्याओं का निर्देश शौनक ने किया है। दुर्भाग्य है कि दोनों ग्रन्थों का यथावत् हृदय समझे बिना भारतीय विद्वान् भी मैक्डॉनल के स्वर में स्वर मिलाकर इस भ्रान्ति को तूल देते रहे। शौनक की दृष्टि में यास्क आप्ततम हैं तथा उनकी सरणि को ग्राह्यतम रूप में शौनक ने स्थान-स्थान पर सादर उद्धृत किया है। श्री ओझाजी ने इसी कारण बृहद्देवता के पद्य यथावत् ले लिये हैं।

निघण्टु का पञ्चम अध्याय निरुक्त विद्या का हृदय है, यह निरुक्त का वास्तविक प्रतिपाद्य है; निर्वचन तो उस तक जाने का सोपान अथवा जरिया है। यही कारण है कि निघण्टु के प्रथम चार अध्यायों की व्याख्या यास्क ने निरुक्त के छः अध्यायों में की है उनमें भी प्रथम सवा या डेढ अध्याय तो उपोद्घात अथवा पतंजलि के शब्दों में निरुक्त के पस्पशाध्याय हैं। पञ्चम अध्याय की व्याख्या निरुक्त के उत्तरषट्क में है। इस अध्याय के एक-एक खण्ड के लिए

निरुक्त में पूरा एक-एक अध्याय है। इन खण्डों में आये हुए पदों में से एक भी पद निरुक्त में नहीं छोड़ा गया है। इससे तो दैवत काण्ड का महत्त्व स्पष्ट है ही, अर्थ को वाणी का पुष्पफल मानकर तथा याज्ञ-दैवत को एवम् देवता-अध्यात्म को पुष्प और फल कहकर यास्क कर्म का प्रतिपाद्य एवम् फल देवता को मानते हैं तथा दैवतज्ञान का पर्यवसान अध्यात्म में करते हैं। निरुक्त परिशिष्ट में अति स्तुति लेकर परिशिष्ट का अवसान ऊर्ध्वमार्गगति में कर इस विचार पर मोहर लगा देते हैं। साक्षात् निर्वचन को १२ अध्याय में पूर्ण कर उसके उद्देश्य को परिशिष्ट में बताते हुए यास्क ने प्राचीन परम्पराओं का निर्वाह भी पूरी तरह किया है। दैवत काण्ड को उत्तरषट्क कहना केवल पूर्वोत्तर दिग्भाग मात्र तक ही सीमित नहीं है। उत्तर श्रेष्ठता अर्थ में भी है। **'नैघण्टुक मिदं देवतानाम, प्राधान्येनेदमिति। तद् यद् अन्यदैवते मन्त्रे निपतति नैघण्टुकं तत्। तद्यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां तद् 'दैवतम्' इत्याचक्षते, तदुपरिष्टात् व्याख्यास्यामः। नैघण्टुकानि नैगमानीहेह**। (१.२०) इस विषय विभाजन से नैघण्टुक व नैगम काण्ड की गौणता तथा दैवतकाण्ड की प्रधानता स्पष्ट है। इस अभिप्राय से पूर्वषट्क एवम् उत्तरषट्क विभाजन किया गया है। श्री ओझाजी ने वैदिककोष का प्रारम्भ दैवतवर्ग से कर समाप्ति बृहद्देवता वर्ग से कर निघण्टु के अभिप्राय को स्पष्ट कर दिया है कि इसका मूल प्रतिपाद्य 'देवता' ही है। सम्भवतः यही दृष्टि अमरसिंह की नामलिंगानुशासन में रही है जहाँ प्रारम्भ देवता वर्ग से तथा अन्त अव्यय वर्ग में है। काण्ड भी तीन ही हैं। शेष कोष अमर की ही अनुकृति हैं।

ओझाजी के इस क्रम घटन पर विचार कर निघण्टु का अध्ययन करने से अनेक रहस्य खुलते जाते हैं। प्राचीन आचार्यों ने

स्थान-स्थान पर क्रम की ऐसी व्याख्या देने का यत्न किया है। आचार्य दुर्ग का वार्तिककार के साक्ष्यपूर्वक यह कथन द्रष्टव्य है—

शाकपूणिस्तु पृथिवीनामभ्य एवोपक्रम्य स्वयमेव सर्वत्र क्रमप्रयोजनमाह। तदुक्तं वार्तिककारेण—

क्रमप्रयोजनं नाम्नां शाकपूण्युपलक्षितम्।
प्रकल्पयेदन्यदपि न प्रज्ञामवसादयेत्॥ इति॥

—द. ४. (१)

इन सब बातों की दृष्टि से वैदिक कोष का 'सरस्वती मणि-माला' अथवा 'निघण्टु मणिमाला' नाम सार्थक है।

नीचे वैदिककोष के क्रमिक उल्लेख के साथ निघण्टु निरुक्त एवं बृहद्देवता के सम्बद्ध भाग का निर्देश तालिका के रूप में पाठकों के सौकर्य एवं तुलनात्मक अध्ययन के लिये प्रस्तुत किया जा रहा है—प्रथम वैदिककोष के पद्यों की संख्या है तदनन्तर प्रतिपाद्य विषय, उसके बाद निघण्टु के अध्याय खण्ड की क्रमसंख्या और कोष्ठक में नामों की कुल संख्या, जहाँ निरुक्त का उल्लेख है वहाँ निरुक्त के अध्याय की संख्या, बृहद्देवता के सन्दर्भ में अध्याय व श्लोक संख्या है।

१. दैवतवर्ग

१—९ = ९	त्रिलोकीस्थ देवों की सामान्यगणना
१०—२० = ११	भूमिष्ठदेवता। निघण्टु ५.१, ५.२, ५.३, बृ. दे. १.६७, २.२५, ३.६१
२१—२६ = ६	अन्तरिक्षस्थ देवता। निघण्टु—५.४, ५.५
२७—३५ = ९	दिविष्ठ देवता। नि.—५.६, निरुक्तम् १३।

२. दिव्यवर्गः

१—३ = ३	द्यावापृथिव्यौ	३/३०	(२४)
४—४½ = १½	पृथ्वी	१/१	(२१)
४½—६ = १½	हिरण्यम्	१/२	(१५)
७—७½ = १½	अन्तरिक्षम्	१/३	(१६)
७½—९ = १½	दिशः	१/६	(८)
९½—११ = १½	किरणाः	१/५	(१५)
१२—१२ = १	दिनम्	१/९	(१२)
१३—१४ = २	उषाः	१/८	(१६)
१५—१६ = २	रात्रिः	१/७	(२३)
१७—१८½ = २½	मेघः	१/१०	(३०)
१८½—२६ = ८½	जलम्	१/१२	(१०१)
२७—३० = ४	नदी	१/१३	(३७)
३१—३२½ = २½	अश्वाः	१/१४	(२६)
३२½—३४½ = २	आदिष्टोपयोजनानि	१/१५	(१०)

३. मनुष्यवर्गः

१—२½ = २½	मनुष्यः	२/३	(२५)
२½—४½ = २	मेधावी	३/१५	(२४)
४½—५½ = १	स्तोता	३/१६	(१३)
५½—६½ = १	ऋत्विक्	३/१८	(८)
६½—७ = ½	अध्यक्षः	२/२२	(४)

८—८½ = १½	चौरः	३/२४	(१४)
८½—९½ = १	अपत्यम्	२/२	(१५)

४. धर्मवर्गः

१—२ = २	महान्	३/३	(२५)
३ = १	क्षुद्र	३/२	(११)
४ = १	बहुः	३/१	(१२)
५—५½ = १½	समीपः	२/१६	(११)
५½—६ = ½	दूरः	३/२६	(५)
६—६½ = ½	पुराणः	३/२७	(६)
६½—७ = ½	नवीनः	३/२८	(६)
८ = १	अन्तर्हितः	३/२५	(६)
९ = १	सुन्दरः	३/८	(१०)
१०—१०½ = १½	रूपम्	३/७	(१६)
१०½—१२ = १½	हस्तौ	२/४	(१२)
१३—१४ = २	अंगुलयः	२/५	(२२)
१५ = १	कर्म	२/१	(२६)
१६—१६½ = १½	यज्ञः	३/१७	(१५)
१६½—१७ = ½	सत्यम्	३/१०	(६)
१८—२१½ = ४½	वाक्	१/११	(५७)
२१½—२२½ = १	प्रज्ञा	३/९	(११)
२२½—२४½ = ३	सुखम्	३/६	(२०)

२४½—२७=२½	बलम्	२/९	(२८)
२८=१	क्रोधः	२/१३	(११)
२९—२९½=१½	वज्रम्	२/२०	(१८)
२९½—३४=४½	युद्धम्	२/१७	(४६)
३५—३६=२	धनम्	२/१०	(२८)
३७=१	गौः	२/११	(९)
३८=१	अन्नम्	२/७	(२८)
३९—४०=२	गृहम्	३/४	(२२)
४१=१	कूपः	३/२३	(१४)
४२—४२½=१½	प्रज्वलनम्	१/१७	(११)
४२½—४५=२½	शीघ्रः	२/१५	(२६)

५. क्रियावर्गः

१—१०=१०	गतिः	२/१४	(१२२)
११=१	व्याप्ति	२/१८	(१०)
११½=½	ईशनम्	२/२१	(४)
११½—१२=½	अध्येषणा	३/२१	(४)
१३—१६=४	अर्चा	३/१४	(४४)
१७=१	परिचर्या	३/५	(१०)
१८—१९=२	याचना	३/१९	(१७)
२०=१	ईक्षणम्	३/११	(८)
२१=१	इच्छा	२/६	(१८)

२२=१	दानम्	३/२०	(१०)
२३=१	भोजनम्	२/८	(१०)
२४=१	प्रज्वलनम्	१/१६	(११)
२५=१	क्रोधनम्	२/१२	(१०)
२६—२८=३	हननम्	२/१९	(३३)
२९=१	शयनम्	३/२२	(२)

६. उपसर्गवर्गः

१—४½=४½	उपसर्गाः	निरुक्ते १.३.७—१.३.२१	(२०)
४½—१२=७½	निपाताः	निरुक्ते १.४.११—१.११.३.	(लगभग ३२)
१३=१	सर्वपदसमाम्नायाः	निघण्टु—३/१२ निरुक्ते—३.१३.२१	(९)
१४=१	उपमा	निघण्टु—३/१३ निरुक्ते—३.१३.२२—३.१८.११	(१३)

७. ऐकपदिकवर्गः

१—६=६	द्विषष्टिपदानि	निघण्टु	४/१
७—१३½=७½	चतुरुत्तरमशीतिःपदानि	निघण्टु	४/२
१३½—२६½=१३	द्वात्रिंशच्छतं पदानि	निघण्टु	४/३

८. ऐकपदिकार्थवर्गः

१—२९ = २९	द्विषष्टिपदानामर्थाः निरुक्ते चतुर्थोऽध्यायः
३०—६७½ = ३८½	चतुरशीतिपदानामर्थाः निरुक्ते पञ्चमोऽध्यायः
६७½—१२८ = ६१½	द्वात्रिंशशतपदानामर्थाः निरुक्ते षष्ठोऽध्यायः
१२९—१३० = २	निरुक्तदर्शिनार्थग्राह्यत्वे प्रकारः सीमा च
१३१—१४० = १०	दशानवगमाः शब्दाः, निरुक्तम् ४.३.२ दुर्गवृत्तिश्च,
१४१—१४३ = ३	वेद-पदार्थानुशासन विषये (२६)
१—४ = ४	द्विपदैकार्थसंग्रहः निघण्टु ३/२९ (२६) निरुक्ते ३.२०— ३.२१.६
१—४ = ४	द्व्यर्थसाधारणपदानि । निघ. १/४ (६) १/५ (५) १.१० (१९)
तत्र १ = १	निघण्टुः १.४ निरुक्ते २.४.१३—१४ (६)
२ = १	निघण्टुः १.५ निरुक्ते २.५.१५ (५)
३—४ = २	निघण्टुः १.१० निरुक्ते २.२१ (१९)

९. अनेकार्थवर्गः

(अकारादिक्रमेण)

१—५९ = ५९	अनेकार्थानिनामादिपदानि निरुक्ते ४—६ अध्यायेषु
१—८ = ८	अनेकार्थानिक्रियापदानि निरुक्ते ४—६ अध्यायेषु

१०. बृहद्देवतावर्गः

१—२० = २०	विभूतिस्थानजन्मादि रूपेण सामान्यपरिचयः बृहद्देवता प्रथमाध्यायगतानिपद्यानि, निरुक्त सप्तमस्योपोद्घातः ।
२१—२७½ = ७½	अग्निभक्तयः देवाः, निघण्टु ५/१, २, (३, १३) बृहद्देवता प्रथमोऽध्यायः
२७½—३४ = ६½	पृथिव्यायतनानिसत्त्वानि ५/३ (३६) बृहद्देवता प्रथमोऽध्यायः
३५—३९ = ५—	पृथिव्यग्न्याश्रयः गणः, निरुक्ते भक्तिसाहचर्यम् ७.८.१—७.९.१, बृ.दे. प्रथमः
४०—४४ = ५	अन्तरिक्षस्थानम् इन्द्रभक्तयः, निघण्टु ५/४ (३२), निरुक्तम्, ७.१०.१—७. निरुक्तम् दशमोध्यायश्च
४५—४८ = ४	अन्तरिक्षस्थानम् इन्द्रभक्तयः, निघण्टु ५/५ (३६), निरुक्तम् एकादशोऽध्यायश्च बृहद्देवता द्वितीयोऽध्यायः
४९—५६ = ७	साकल्येन मध्यमस्थानः गणः
५७—६१ = ५	सूर्यभक्तयः निघण्टुः ५/६ (३१), निरुक्तम् १२ ऽध्यायः, बृहद्देवता द्वितीयोऽध्यायः
६२—६६ = ५	द्युस्थानोगणः निरुक्तम् ७.११.१—७,
६७ = १	ऋतुदेवताः सप्त
६८—६९ = २	प्रातःसवने शस्त्रे प्रउगे सप्तदेवताः

७०=१	अग्निसूर्येन्द्राणां क्रमशः पञ्च सप्त षड्विंशति-नाम सूचनम्
७१—७६=६	अग्नेः पञ्चनामानि, बृहद्देवता २.२४—२९ निरुक्ते ७.१४.२—६, ८.१.१—८.३.१, ८.६.१—८.७.३, ८.७.१—३.
७७—१०६=३०	इन्द्रस्य षड्विंशतिनामानि., बृ. दे. २.३०—५८
१०७—११८=१२	सूर्यस्य नवनामानि—बृ. दे. २/५९—६९,
१—९=९	ग्रन्थ विषयकानिपद्यानि

इस तुलना से स्पष्ट है कि वैदिक कोष में निघण्टु तो सम्पूर्ण आ ही गया है, निघण्टु के चतुर्थ अध्याय में पठित सभी २७८ पदों के निरुक्त व्याख्यात सभी अर्थ जो निरुक्त के चतुर्थ पञ्चम षष्ठ अध्यायों में आये हैं यहाँ अविकल रूप से समाविष्ट हुए हैं। दैवत-काण्ड (निघण्टु पञ्चम अध्याय निरुक्त उत्तरषट्क के ७ से १२ अध्याय) के पदों का सव्याख्यासंग्रह होने से निघण्टु व निरुक्त के सम्बद्ध भाग का अध्ययन सुकर हो जाता है। बृहद्देवता के पद्य देकर दैवतज्ञान का विषय तथा अग्नि इन्द्र व सूर्य के ५, २६, ९ नामों के निर्वचन भी दे दिये गये हैं। दशानवगम विमर्श में दुर्गवृत्ति को पद्य रूप से लेते हुए इस विषय को स्पष्ट किया गया है तथा इसकी उप-लक्षणमात्रता बताकर जिज्ञासुओं के लिए वेदज्ञान मार्ग प्रशस्त किया गया है। निरुक्त का प्रमुख प्रतिपाद्य दैवतज्ञान यहाँ अनति संक्षिप्त शैली में लगभग पूर्ण रूप से लेकर निरुक्ताध्ययन की शैली को स्पष्ट रूप में रखा गया है। निघण्टु में अनाम्नात भी उपसर्ग यहाँ लिये गये हैं तथा यथासम्भव निरुक्त के वाक्यों में ही उनका अर्थ भी

दिया गया है। निपात आदि की निरुक्तस्थ व्याख्या भी पूरे रूप में दी गयी है। निरुक्त के त्रयोदशाध्यायस्थ अतिस्तुतिसम्बद्ध देवताओं का भी संकलन यहाँ है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि निरुक्त में अच्छी पैठ के लिए निघण्टु का यह वैदिककोष रूप अतीव उपयोगी ग्रन्थ है।

श्री ओझाजी का संकल्प था कि निघण्टु व निरुक्त में असमाहृत ऐसे ही और भी वैदिक पदों का ऐसा कोष वे शीघ्र ही प्रकाशित करना चाहते थे। सम्भवतः यह विचार पाण्डुलिपि के रूप में पूरा हो भी गया हो अथवा मात्र बुद्धिस्थ ही हो, नहीं कहा जा सकता है। उनके अनेक मातृकाकोष इतस्ततः विनष्ट हो गये हैं, यह भी उनमें हो सकता है। जैसे अन्य अनेक ग्रन्थ मिल गये हैं सम्भवतः श्री कुलिशजी के अनवरत अहर्निश प्रयत्नों से यह भी मिल जावे। ओझाजी के छन्दःसमीक्षा पथ्यास्वस्ति आदि शास्त्रीय ग्रन्थों की भाँति यह कोष निरुक्त में प्रवेशार्थियों के लिए अनुपम वरदान है इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है।

यह सनातन सत्य है कि मानव मानव है, वह पूर्ण नहीं हो सकता है, एकमात्र पूर्ण निर्भ्रान्ति और सर्वज्ञ तो भगवान् वेद पुरुष ही है। ओझाजी की दृष्टि से पाठक का मतभेद हो सकता है, मात्र इससे न तो वे उपेक्षणीय ही हो जाते हैं और न तिरस्करणीय ही। व्यक्ति दृष्टि को दूर रखकर तथ्य प्राप्ति हेतु प्रवृत्त पाठक को यहाँ निराश नहीं होना पड़ेगा, यह सत्य है।

—अनन्त शर्मा

—:❋❋:—

वैदिककोषस्य विषयानुक्रमः

		पृष्ठे	श्लोकाः
देवतवर्गे—			
१	त्रिलोकीस्था देवताः	१	१—९
२	भूमिष्ठा देवताः	२	१०—२०
३	अन्तरिक्षस्था देवताः	३	२१—१६
४	दिविष्ठा देवताः	४	२७—३३
दिव्यवर्गे—			
१	द्यावापृथिव्यौ	४	१—३
२	पृथ्वी	४	४—४॥
३	हिरण्यम्	४	४॥—६
४	अन्तरिक्षम्	५	७—८
५	दिशः	५	८—९
६	किरणाः	५	१०—११
७	दिनम्	५	१२
८	उषाः	५	१३—१४

		पृष्ठे	श्लोकाः
९	रात्रिः	५	१५—१६
१०	मेघः	६	१७—२०
११	जलम्	६	२०—२६
१२	नदी	७	२७—३१
१३	अश्वाः	७	३१—३५
	मनुष्यवर्ग—		
१	मनुष्यः	८	१—२।।
२	मेधावी	८	३
३	स्तोता	८	४
४	ऋत्विक्	८	५
५	अध्यक्षः	८	६
६	चौरः	८	६—७
७	अपत्यम्	९	८
	धर्मवर्ग—		
१	महान्	९	१—२
२	क्षुद्रः	९	३
३	बहुः	९	४
४	समीपः	९	५
५	दूरः	१०	६

		पृष्ठे	श्लोकाः
६	पुराणः	१०	७
७	नवीनः	१०	७
८	अन्तर्हितः	१०	८
९	सुन्दरः	१०	९
१०	रूपम्	१०	१०
११	हस्तौ	१०	११—१२
१२	अङ्गुलयः	११	१३—१४
१३	कर्म	११	१५
१४	यज्ञः	११	१६
१५	सत्यम्	११	१६।।—१७
१६	वाक्	११	१८—२१
१७	प्रज्ञा	१२	२१।।—२२।।
१८	सुखम्	१२	२३—२४।।
१९	बलम्	१२	२५—२७
२०	क्रोधः	१२	२८
२१	वज्रम्	१२	२९
२२	युद्धम्	१३	३०—३४
२३	धनम्	१३	३५—३६
२४	गौः	१३	३६—३७
२५	अन्नम्	१३	३७—३८
२६	गृहम्	१४	३९—४०

		पृष्ठे	श्लोकाः
२७	कूपः	१४	४०—४१
२८	प्रज्वलनम्	१४	४१—४२॥
२९	शीघ्रः	१४	४३॥—४५
	क्रियावर्गे—		
१	गतिः	१४	१—१०
२	व्याप्तिः	१५	१०—११
३	ईशनम्	१५	११—१२
४	अध्येषणा	१६	११॥—१२
५	अर्चा	१६	१३—१६
६	परिचर्या	१६	१६—१७
७	याचना	१६	१८—१९
८	ईक्षणम्	१६	१९—२०
९	इच्छा	१७	२१—२१
१०	दानम्	१७	२१—२२
११	भोजनम्	१७	२२—२३
१२	प्रज्वलनम्	१७	२३—२४
१३	क्रोधनम्	१७	२४—२५
१४	हवनम्	१७	२६—२८
१५	शयनम्	१८	२८—२९

		पृष्ठे	श्लोकाः
	उपसर्गवर्गे—		
१	उपसर्गसंग्रहः, निपातसंग्रहश्च	१८	१—१४
	ऐकपदिकवर्गे—		
१	द्वाषष्टिपदानि	२०	१—६
२	चतुरशीतिपदानि	२०	७—१३
३	द्वात्रिंशशतपदानि	२१	१४—१७
	ऐकपदिकार्थवर्गे—		
१	द्वाषष्टिपदानामर्थाः	२२	१—२९
२	चतुरशीतिपदानामर्थाः	२४	३०—६७
३	द्वात्रिंशशतपदानामर्थाः	२८	६८—१२८
४	दशानवगमोदाहरणानि	३३	१२९—१४३
५	द्विपदैकार्थसंग्रहः	३५	१—४
	अनेकार्थवर्गे—		
१	द्व्यर्थसाधारणपदानि	३५	१—४
२	अनेकार्थशब्दाः	३६	१—६०
३	अनेकार्थधातवः	४२	१—८

		पृष्ठे	श्लोकाः
	बृहद्देवतावर्ग—		
१	प्रधानदेवताविचारः	४३	१—२०
२	अग्निभक्तयः	४५	२१—३९
३	इन्द्रभक्तयः	४७	४०—५६
४	सूर्यभक्तयः	४८	५७—६९
५	अग्निनामानि पञ्च	५०	७०—७६
६	इन्द्रनामानि षड्विंशतिः	५१	७७—१०६
७	सूर्यनामानि नव	५५	१०७—१२०
८	वर्गसंग्रहः कविपरिचयश्च	५७	

॥ इति शुभम् ॥

॥ ओ३म् ॥

वैदिककोषः

ऋग्यजुःसामभिस्तत्त्वं निर्दिशन् सर्वतः सुखम् ।
प्रवर्तयन् ज्ञानरूपी भगवान् मे प्रसीदतु ॥ १ ॥

वेदमन्त्रस्तुताः सर्वा निर्दिश्यन्तेऽथ देवताः ।
सोमपास्तु त्रयस्त्रिंशत् त्रयस्त्रिंशदसोमपाः ॥ २ ॥

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवगणावपि ।
प्रजापतिर्वषट्कारौ वाश्विनौ वेति सोमपाः ॥ ३ ॥

प्रयाजाश्चानुयाजाश्चावयाजाश्चेत्यसोमपाः ।
एकादशक्रमेणैते भूमौ मध्ये दिवि स्थिताः ॥ ४ ॥

अथाग्निरिन्द्रवायुश्चादित्यश्चेति प्रधानतः ।
देवतास्तिस्र एवैताः पृथ्वी-मध्य-द्य्वधिष्ठिताः ॥ ५ ॥

आदित्यस्यादित्या, रुद्रा इन्द्रस्य, वसवोऽग्नेः, ।
अधिदेवा अथ मरुतो देवविशो रुद्रपुत्राश्च ॥ ६ ॥

अथवेन्द्रस्य तु मरुतो, रुद्राः सोमस्य, वसवोऽग्नेः ।
आदित्या वरुणस्य तु गणिनः सहवासिनो देवाः ॥ ७ ॥

केशिनः कथिता अग्निर्वायुः सूर्य्य इति त्रयः ।
प्रजापतय उद्दिष्टाः सूर्य्यसंवत्सरादयः ॥ ८ ॥

भारतीडासरस्वत्यस्तिस्रो देव्य उदाहृताः ।
दिवि भुव्यन्तरिक्षे च क्रमेण निवसन्ति याः ॥ ९ ॥

॥ इति त्रिलोकीस्था देवताः ॥

		पृष्ठे	श्लोकाः
	बृहद्देवतावर्ग—		
१	प्रधानदेवताविचारः	४३	१—२०
२	अग्निभक्तयः	४५	२१—३९
३	इन्द्रभक्तयः	४७	४०—५६
४	सूर्यभक्तयः	४८	५७—६९
५	अग्निनामानि पञ्च	५०	७०—७६
६	इन्द्रनामानि षड्विंशतिः	५१	७७—१०६
७	सूर्यनामानि नव	५५	१०७—१२०
८	वर्गसंग्रहः कविपरिचयश्च	५७	

।। इति शुभम् ।।

।। ओ३म् ।।

वैदिककोषः

ऋग्यजुःसामभिस्तत्त्वं निर्दिशन् सर्वतः सुखम् ।
प्रवर्तयन् ज्ञानरूपी भगवान् मे प्रसीदतु ।। १ ।।

वेदमन्त्रस्तुताः सर्वा निर्दिश्यन्तेऽथ देवताः ।
सोमपास्तु त्रयस्त्रिंशत् त्रयस्त्रिंशदसोमपाः ।। २ ।।

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवगणावपि ।
प्रजापतिवषट्कारौ वाश्विनौ वेति सोमपाः ।। ३ ।।

प्रयाजाश्चानुयाजाश्चावयाजाश्चेत्यसोमपाः ।
एकादशक्रमेणैते भूमौ मध्ये दिवि स्थिताः ।। ४ ।।

अथाग्निरिन्द्रवायुश्चादित्यश्चेति प्रधानतः ।
देवतास्तिस्र एवैताः पृथ्वी-मध्य-द्व्यधिष्ठिताः ।। ५ ।।

आदित्यस्यादित्या, रुद्रा इन्द्रस्य, वसवोऽग्नेः, ।
अधिदेवा अथ मरुतो देवविशो रुद्रपुत्राश्च ।। ६ ।।

अथवेन्द्रस्य तु मरुतो, रुद्राः सोमस्य, वसवोऽग्नेः ।
आदित्या वरुणस्य तु गणिनः सहवासिनो देवाः ।। ७ ।।

केशिनः कथिता अग्निर्वायुः सूर्य्य इति त्रयः ।
प्रजापतय उद्दिष्टाः सूर्य्यसंवत्सरादयः ।। ८ ।।

भारतीडासरस्वत्यस्तिस्रो देव्य उदाहृताः ।
दिवि भुव्यन्तरिक्षे च क्रमेण निवसन्ति याः ।। ९ ।।

।। इति त्रिलोकीस्था देवताः ।।

द्रविणोदा जातवेदा वैश्वानर इमेऽग्नयः ।
पार्थिवा उत्तरत्रापि प्रयोगो दृश्यते क्वचित् ।। १० ।।

द्वादश आप्रिय एता, बर्हिर्द्वारस्तनूनपादिध्मः ।
ईल उषासानक्ता, स्वाहाकृतयो नराशंसः ।। ११ ।।

दैव्या होतारा अपि, तिस्रो देवीर्वनस्पतिस्त्वष्टा ।
एषामभिधेयार्थे मतभेदो दृश्यते विदुषाम् ।। १२ ।।

अथ सत्त्वानि वर्ण्यन्ते पृथिव्यायतनानि हि ।
अश्वः शकुनिमण्डूकावक्षो ग्रावा नरस्तुतिः ।। १३ ।।

वृषभो द्रुघणो नद्य आप ओषधयः पितुः ।
रात्रि-श्रद्धा-पृथिव्यप्वारण्यान्यग्नायि चेत्यपि ।। १४ ।।

रथ-दुन्दुभि-हस्तघ्ने-षुधी-षु-ज्या-धनुः-कशाः ।
अभीषु-कवचादीनि युद्धोपकरणानि च ।। १५ ।।

शुनासीरौ हविर्धाने मुसलोलूखले तथा ।
देवी ऊर्जाहुती, देवी जोष्ट्री, आर्त्नी च रोदसी ।। १६ ।।

विपाट्शुतुद्र्यावित्यष्टौ द्वन्द्वान्यन्यानि यान्यपि ।
इति षट्त्रिंशदुक्तानि स्तूयन्ते यानि भूरिशः ।। १७ ।।

नद्यो नव, सुषोमा चार्जीकीया च वितस्तिका ।
असिक्नी च परुष्णी च शुतुद्री च सरस्वती ।। १८ ।।

गङ्गा च यमुना चेति स्तूयन्ते तत्र तत्र हि ।
सिन्धुर्विपाट् वितस्ता च चन्द्रभागा इरावती ।। १९ ।।

शतद्रुरिति चैतासामादितो लौकिकाभिधाः ।
अन्त्यास्तिस्त्रः प्रसिद्धाख्या उक्ता एतास्तुभूगताः ।। २० ।।

इति भूमिष्ठा देवताः ।।

वायुर्वरुणरुद्रेन्द्राः पर्जन्योऽथ बृहस्पतिः ।
वास्तु-क्षेत्र-ब्रह्म-वाचां पतयोऽपांनपाद् यमः ।। २१ ।।

कः सरस्वान् विश्वकर्म्मा—तार्क्ष्यंक मन्यवः ।
दधिक्राः सविता त्वष्टा वातोऽग्निरिति मध्यगाः ।। २२ ।।

श्येन-प्रजापति-सुपर्ण—पुरुरवोऽहि—
विश्वानरा निधन-धातृ-विधातृ-सोमाः ।
एतेऽपि पूर्ववदिहापि च हव्यभाजो
वेनोऽसुनीतिर्ऋत इन्दुरिमे त्वहव्याः ।। २३ ।।

मरुतोरुद्राःपितरो भृगवोऽङ्गिरसोऽप्यथर्व ऋभवःस्युः ।
अथ च वशिष्ठा आप्त्या एता गणदेवतास्तत्र ।। २४ ।।

अदितिःसरमा पृथिवी, राकाऽनुमतिः कुहूः सिनीवाली ।
अघ्न्या सरस्वती वाग्, गौरी गौरुर्वशी यमीन्द्राणी ।। २५ ।।

धेनुरिलोषाः पथ्यास्वस्तिर्वै रोदसी, स्त्रियस्त्वेताः ।
एते सर्वे देवा मध्यस्थाना विनिर्दिष्टाः ।। २६ ।।

इति अन्तरिक्षस्था देवताः ।

अथ देवा द्युस्थानाः, सविता भगसूर्य्यपूषणो विष्णुः ।
विश्वानरोऽथ वरुणः, केशि-वृषाकपि-यमै-कपात्सिन्धुः ।।२७।।

दध्यङ् ङथर्वमनवोऽथ सप्तऋषयो वसुश्च नासत्यः ।
दस्रोऽपि त्वष्टोषा वृषाकपायी-सरण्यु-सूर्य्याश्च ।।२८।।

धाता मित्रो वरुणोऽर्य्यमा भगोंऽशुर्विवस्वांश्च ।
इन्द्रश्चादितिपुत्रास्त्वष्टृ सवितृ-पूष-विष्णवोऽप्युक्ताः ।। २९ ।।

सप्तर्षयोऽथ देवा विश्वेदेवाश्च साध्यदेवाश्च ।
द्युस्थानानां संज्ञाः प्राणानां वाथ रश्मीनाम् ।। ३० ।।

अग्निश्चेन्द्रश्चादित्यरश्मयो वासवाः कथिताः ।
इन्द्राणीवरुणान्यग्नाय्याद्या देवपत्न्यः स्युः ।। ३१ ।।

अग्निर्वरुण आदित्य इन्द्र आदित्यरश्मयः ।
यज्ञः सोमोऽश्विनौ वाचश्चेत्यतिस्तुतयो मताः ।। ३२ ।।

पितरः प्रायशोऽथर्व - ऋभुभृग्वङ्गिरोगणाः ।
आप्त्या नामर्षयस्त्रेधा एकताश्च द्विताास्त्रिताः ।। ३३ ।।

इति दिविष्ठा देवताः ।।

इति दैवतवर्गः १ ।।

दिव्यवर्गः २

द्यावापृथिव्यौ

स्वधे पुरन्धी धिषणे रोदसी सदसी मही ।
अही गभीरे गम्भीरे ओण्यौ चम्वावथादिती ।। १ ।।

अम्भसी नभसी क्षोणी सद्मनी बहुले अपि ।
उर्वी पृथ्वी च रजसी पार्श्वौ घृतवती अपि ।। २ ।।

दूरे अन्ते अपारे च बृहती रोधसी अपि ।
नप्त्रौ द्यावापृथिव्योस्तु नामान्येतानि सन्ति हि ।। ३ ।।

पृथ्वी

भूर्भूमिरवनिः पूषा गातुर्गोत्राऽदितिः क्षितिः ।
क्षोणिः क्षामा मही पृथ्वी गौरिला निर्ऋती रिपः ।। ४ ।।

उर्वी ग्मा ज्मा क्षमा क्ष्मा क्षा पृथिव्या अभिधा इमाः ।

हिरण्यम्

हेम चन्द्रमयो रुक्मं हिरण्यममृतं मरुत् ।। ५ ।।

लोहं पेशो जातरूपं कनकं भर्म्मं काञ्चनम् ।
कृशनं दत्रमित्येता हिरण्यस्याभिधा मताः ।। ६ ।।

अन्तरिक्षम्

वियदम्बरमाकाशं व्योम पुष्करमध्वरम् ।
भूः स्वयम्भूः पृथिव्यापोऽन्तरिक्षं धन्वबर्हिषी ।। ७ ।।
अध्वा समुद्रः सगरोऽन्तरीक्षस्याभिधा इमाः ।। ८ ।।

दिशः

हरितः ककुभः काष्ठा आष्ठा व्योमोपरा दिशः ।
आता आशा दिशामाख्या एताः प्रायेण भूमनि ।। ९ ।।

किरणाः

खेदा तु किरणा गावो रश्मयोऽभीषवो वनम् ।
गभस्तयो दीधितयः साध्या उस्रा मरीचिपाः ।। १० ।।
सुपर्णाः सप्तऋषयो मयूखा वसवोंऽशुषु ।। ११ ।।

दिनम्

भानुर्घर्म्मो घृणो घ्रंसो वासरं स्वसराणि च ।
वस्तोर्दिनं दिवा द्युर्द्यौ द्यविद्यवि दिवेदिवे ।। १२ ।।

उषाः

अहना द्योतना श्वेत्या वाजिनी वाजिनीवती ।
ओदती भास्वती सुम्नावरी चित्रा मघाऽर्जुनी ।। १३ ।।

विभावरी सूनरी च सूनृता सूनृतावती ।
सूनृतावर्य्यरूषी स्यादरुषीत्युषसोऽभिधाः ।। १४ ।।

रात्रि

नक्ताऽक्तुः शर्वरी श्यावी शोकी मोकी हिमा रजः ।
पयः पयस्वती वस्वी तमोऽसिक्नी तमस्वती ।।१५।।

दोषोर्म्योधि उधा राम्या घृताची शिरिणा क्षपा ।
यम्या नम्येति नामानि रात्र्या इति विभावय ।। १६ ।।

मेघः

अद्रिर्गोत्रो गिरिर्ग्रावा पर्वतोऽश्मा व्रजो बलः ।
अभ्रं बलाहको मेघो वराहः शम्बरश्चरुः ।। १७ ।।
रौहिणो रैवतो वृत्रः फलिगाह्युपरोपलाः ।
वृषन्धिरसुरः कोशश्चमसो दृतिरोदनः ।। १८ ।।
बलिशानः पुरुभोजा अश्नो मेघाभिधा इमाः ।। १९ ।।

जलम्

इदं जलं जलाषं वार्वारि तेजः स्वधा वनम् ।
गभीरं गम्भरं शुक्रं कृपीटं गहनं वपुः ।। २० ।।
तूयं तोयं शम्बरं सत् पवित्रममृतं घृतम् ।
अध्वमम्बु हविः पूर्णं सर्वं सर्पिरपोऽक्षितम् ।। २१ ।।
नामान्नं र्बाहिरीमाप इन्दुर्हेम महो महत् ।
स्वःसर्गाः सद्म सदनं सुखं क्षत्रं शुभं यशः ।। २२ ।।
भविष्यद् भुवनं भूतमृतं सत्यं रयिः प्रयः ।
रसः सरः सहो व्योम यादुरोजो यहः शवः ।। २३ ।।
तुग्या सतीनं सर्णीकं स्वृतीकं भेषजं क्षपः ।
आवया अक्षरं स्रोतस्तृप्तिर्जाम्यायुधान्यहिः ।। २४ ।।
सुक्षेम धरुणं जन्म क्षीरं नीरं वुसं विषम् ।
बृबूकं बर्बुरं रेतः पुरीषं पिप्पलं मधु ।। २५ ।।
कशः कबन्धं सलिलं धस्मन्वदुदकं सिरा ।
क्षोदःक्षद्म नभोऽम्भोऽर्णा अररिन्दानि जामिवत् ।। २६ ।।

ऋतस्ययोनिर्योनिः के जलनामानि भावय ।

नदी

यव्या अवनयः सराः स्रोत्याः खा धुनयोऽग्रुवः ।। २७ ।।
एन्यो रुजाना हरितः सरितो रोहितोऽजिराः ।
स्वादो अर्णा रोधचक्रा उर्व्यो वर्य्यश्च सस्रुतः ।। २८ ।।
नभन्वा वक्षणा वध्वः कुल्या अर्णाश्च सिन्धवः ।
हिरण्यवर्णाः पार्वत्य इरावत्यश्च मातरः ।। २९ ।।
हरस्वत्यस्तरस्वत्यः सरस्वत्यः स्रवन्तिकाः ।
ऊर्जस्वत्यः पयस्वत्यो रोधस्वत्यश्च निम्नगाः ।। ३० ।।
भास्वत्यो नद्य इत्येवं नदीनामानि भावयेत् ।

अश्वाः

अत्यो वाजी हयः सप्तिरर्वोच्चैःश्रवसोऽरुषः ।। ३१ ।।
दधिक्रावा दधिक्राश्च दौर्गह-ब्रध्न-वह्नयः ।
तार्क्ष्यो मांश्चत्व आशुश्च पैद्व एतग्व एतशः ।। ३२ ।।
अश्वाः सुपर्णा हंसासः श्येनासोऽव्यथयो नरः ।
ह्वार्य्याः पतङ्गा इत्येते सामान्येनाश्ववाचिनः ।। ३३ ।।

* *

पूष्णोऽजाः, सवितुः श्यावाः, विश्वरूपा बृहस्पतेः ।
अश्विनो रासभद्वन्द्वं, पृषत्यो मरुतामपि ।। ३४ ।।
हरी इन्द्रस्य, हरितस्त्वादित्यानामथोषसाम् ।
गावोऽरुण्योऽथ नियुतो वायोर्वह्निस्तु रोहितः ।। ३५ ।।

इति दिव्यवर्गः ।

मनुष्यवर्गः ३

मनुष्यः

जगतस्तस्थुषो मर्त्या मर्ता मर्य्या धवा नरः ।
द्रुह्यवस्तुर्वशा व्राता जन्तवः क्षितयो विशः ।। १ ।।
मनुष्या नहुषः कृष्टिहरिचर्षणयो नराः ।
विवस्वन्तः पञ्चजना यदवः पूरवोऽनवः ।। २ ।।
आयवः पृतना एते मनुष्यार्थाभिधायकाः ।

मेधावी

मन्धाता मतयो मतश्चिदुशिजो वेनो विधाता विपः
कीस्तासोऽपि विपन्यवोऽपि मतुथा आकेनिपः केनिपः ।
धीरो विप्रविपश्चितावृभुकवी अद्धातयो वाघतो
गृत्सः कण्वमनीषि-वेधस इमे विग्रो नवेदाः समाः ।। ३ ।।

स्तोता

रेभस्तामुर्नदो नादः सूरि-स्तुप्-कारु-कीरयः ।
छन्दो रुद्रः कृपण्युर्गोर्जरिता स्तोतृवाचकाः ।। ४ ।।

ऋत्विक्

भरताः कुरवो वृक्तवर्हिषोऽपि यतस्त्रुचः ।
सवाधो वाघतो देवयवो मरुत ऋत्विजः ।। ५ ।।

अध्यक्षः

अर्य्यो नियुत्वान् राष्ट्री स्युरीश्वरार्था इनः पतिः ।

चौरः

तक्वा रिक्वा रिपू रिभ्वा रिहायास्तायुतस्करौ ।। ६ ।।

तृपुस्तृक्वा वृको रिह्वा ह्वुरश्चिच्च मलिम्लुचः ।
अघशंसो मुषीवांश्च वनर्गुः स्तेनवाचकाः ।। ७ ।।

अपत्यम्

तुक् तोकं तनयस्तौक्म तक्मापत्यं नपात् प्रजा ।
वीजमप्नो गयः शेषो यहुर्जाः सूनुरित्यपि ।। ८ ।।

इति मनुष्यवर्गः ।। ३ ।।

धर्म्मवर्गः ४

महान्

महिषस्तविषस्तवसो रभसःककुहो महद् बृहद् व्राधन् ।
व्रध्नोऽद्भुतं विरप्शी बंहिष्ठो बर्हिषद् विहायाश्च ।।१।।
अभ्वोऽम्भृणो गभीरो माहिन ऋष्वो विवक्षसे तुक्षः ।
उक्षित उक्षर्भुक्षा ववक्षिथो यह्व—इत्यमी महति ।। २ ।।

क्षुद्रः

क्षुल्लकेऽल्प ऋहन् ह्रस्वः प्रतिष्ठा मायुकः कृधु ।
अर्भको वभ्रको दभ्रं निघृष्वस्तृषमः समाः ।। ३ ।।

बहुः

उरु पुरु शश्वद् विश्वं परीणसा व्यानशिः कुवित्सलिलम् ।
तुवि च शतं च सहस्रं भूरि च बहुवाचका एते ।। ४ ।।

समीपः

आसात् स्यादस्तमीके च तुर्वशे तडिदम्बरम् ।
आके उपाके अर्वाके अवमे उपमेऽन्तमम् ।। ५ ।।

अन्तिकार्था इमे प्रोक्ता अथ दूरार्थकाः परे।

दूरः

आरे आके पराके च पराचैश्च परावतः ॥ ६ ॥

पुराणाः

प्रवयाः प्रदिवोऽह्नाय पूर्व्यं पत्रं सनेमि च।

नवीनः

इदानीं नूतनं नूत्नं नवं नव्यमिदा इति ॥ ७ ॥

अन्तर्हितः

निण्यं सस्वरपीच्यं च प्रतीच्यं सनुतर्हिरुक्।
पुराणे षट्, नवीने षट्, निर्णीतान्तर्हितस्य षट् ॥ ८ ॥

सुन्दरः

अनवद्योऽनभिशस्तः पाकोऽनेद्योऽप्यनिन्द्य उक्थ्योऽपि।
वयुनमनेमाऽस्रेमा वामसुनीथौ प्रशस्यनामानि ॥ ९ ॥

रूपम्

पेशः पिष्टं वपुरपुर्वव्रिर्वर्पोऽमतिर्म्मरुत्।
प्सरः प्सुरप्सः कृशनमरुषे शिल्पमर्जुनम् ॥ १० ॥

अप्नस्ताम्रं च निर्णिक् च रूपनामान्यमूनि हि।

हस्तौ

अथ बाहू च भुरिजावभीशू च विनङ्गृसौ ॥ ११ ॥

क्षिपस्ती च गभस्ती च भरित्रे चायती च तौ।
अप्नवाना च्यवाना च करस्नौ शक्वरी करे ॥ १२ ॥

अङ्गुलयः

अण्व्योऽग्रुवो व्रिशः शर्य्या रशना धीतयो धुरः।
अथर्य्योऽवनयः कक्ष्या योजनानि विपः क्षिपः ॥ १३ ॥

स्वसारोऽभीशवः शाखा जामयश्च सनाभयः।
गभस्तयो दीधितयो योक्त्राणि हरितस्तथा ॥ १४ ॥

कर्म

कर्त्तोः कर्त्वं करन्ती क्रतु-करुण-करः कर्तवै कर्तुमप्नः
कृत्वी चक्रत् करिक्रद् व्रत-करण-शची-शक्तयः कर्वरं धीः।
विष्ट्वी वेषश्च वेपोऽप-इति शिमि-शमी-शक्म शिल्पं च दंसो।
नामान्येतानि वेदे कलयति कुशलः कर्म्मणि व्यत्ययाच्च ॥१५॥

यज्ञः

यज्ञो वेनोऽध्वरो मेधो विदथः सवनं मखः।
इष्टिर्होत्रा देवताता विष्णुरिन्दुः प्रजापतिः ॥ १६ ॥
घर्म्मः नार्य्यः पञ्चदश यज्ञनामानि चक्षते।

सत्यम्

सत्ये सत्यमृतं सत्रा अदित्थाद्धा वडित्यमी ॥ १७ ॥

वाक्

श्लोको घोषो गणो वाणः स्वनः शब्दः स्वरः सरः।
धारा गौरी गौरिला गीर्गान्धिर्वी भारती गणा ॥ १८ ॥

गाथा गभीरा गम्भीरा मन्द्रा मन्द्राजनी नना।
वाशी वाणी च वाणीची सूर्य्या स्वाहा सरस्वती ॥ १९ ॥

नौर्धेनुर्धिषणा धेना मेना मेडिः कशा निवित्।
होत्रा ऋग् धमनिर्नाडीर्म्मायुकाकुदुपब्दयः ॥ २० ॥

वागनुष्टुप् शची गल्दा वल्गुर्वग्नुर्विपा पविः ।
सुपर्णी बेकुरो जिह्वा मही ग्नाऽदितिरक्षरम ।। २१ ।।
एतानि सप्तपञ्चाशद्वाचो नामानि चक्षते ।

प्रज्ञा

केतुः केतश्चेतश्चित्तं माया शची ऋतुर्वयुनम् ।। २२ ।।
धीरसुरेवमभिख्या प्रज्ञानामानि कथ्यन्ते ।

सुखम्

शिम्बाता शतरा शर्म्मं शिवं शेवं च शेवृधम् ।। २३ ।।
स्योनं सुम्नं शुनं शूषं जलाषं भेषजं मयः ।
सुग्म्यं शग्मं शातपन्ता स्यूमकं सुदिनं तथा ।। २४ ।।
शिल्गुः शं कमिमे शब्दाः सुखार्था एकविंशतिः ।

बलम्

ओजः पाजः शवः शर्द्धस्तृक्षं त्वक्षस्तवस्तरः ।। २५ ।।
शूषं शुष्णं वीडु शुष्मं नृम्णं च्यौत्नं यहः सहः ।
दक्षो वर्गो वधो बाधो बृजिनं वृक् च शम्बरम् ।। २६ ।।
स्यन्द्रासो द्रविणं पौंस्यं धर्णसिस्तविषी तथा ।
मज्मना बलनामानि पदार्थज्ञाः प्रचक्षते ।। २७ ।।

क्रोधः

हरो ह्वरो हृणिर्जूर्णिरेहो हेडो व्यथिस्त्यजः ।
भामो मन्युश्च तपुषी क्रोधनामानि मानय ।। २८ ।।

वज्रम्

मेनिर्नेमिर्नमः कुत्सः कुलिशः सायकस्तुजः ।
सृको वृको वधो वज्रः स्वधितिः परशुः पविः ।। २९ ।।

हेतिर्दिद्युत्तिग्ममर्को वज्रनामानि भावय ।

युद्धम्

विवाग् विखादो नदतुः प्रधने च महाधने ।। ३० ।।
पृतनाः पृतनाज्यं च पृक्षे पृत्सु खले खजे ।
स्पृधो मृधो भरे मीढ्वे पौंस्य आक्रन्द आह्वे ।। ३१ ।।
आजावाणौ वाजसातौ शूरसातौ च सद्म च ।
वृत्रतूर्य्ये समर्य्ये च समोहे च समत्सु च ।। ३२ ।।
समीथे सङ्गथे सङ्गे सङ्गमे संयुगेऽज्म च ।
समितिः समनं सङ्काः संख्ये संयच्च संवतः ।। ३३ ।।
समनीके समीके चाभीके समरणे रणः ।
ममसत्यं नेमधिता वाजे सङ्ग्रामवाचकाः ।। ३४ ।।

धनम्

रेक्णो रिक्थं मघं वेदो वरिवो बन्धुरिन्द्रियम् ।
श्वात्रं क्षत्रं रयी रत्नं भगो मीढुं गयस्तना ।। ३५ ।।
रायो राधो यशो मेधा भोजनं द्रविणं वसु ।
द्युम्नं नृम्णं वृतं वृत्रं श्रवो ब्रह्म धनार्थकाः ।। ३६ ।।

गौः

[illegible]घ्न्योस्त्रियोस्रा जगती शक्वरीलादितिर्म्मही ।
अहीति नव नामानि गवामित्यवधारय ।। ३७ ।।

अन्नम्

वाजोऽन्धः क्षु सुतः सिनं पितुरवो ब्रह्म स्वधा सूनृता
क्षद्मार्कः ससमायुरूर्गिषमिरा नेमो नमः क्षुद्वयः ।
पृ[illegible]ी धासिरिला यशो रसपयोवर्चः प्रयांसि श्रवः
कीलालं क्षुमदेव सीनमिति वा पाजोऽपि वाऽन्नार्थकाः ।। ३८ ।।

गृहम्

अस्तं पस्त्यं नीडं, कृत्तिः कृदरो गयो गर्त्तः ।
दुर्य्याः सद्म दुरोणे, शरणं स्वसराणि योनिरमा ।। ३९ ।।
छाया छर्द्दिश्छदिरपि, वर्म्म च हर्म्यं वरूथं च ।
अज्म च शर्म्म दमे गृहनामानि त्रीणि विंशतिश्चेति ।। ४० ।।

कूपः

कूपे कर्तः कातुः खातः काटोऽवटोऽवतो वव्रः ।
केवट उत्सः कारोतरः क्रिविः सूद ऋश्यदः कुशयः ।। ४१ ।।

प्रज्वलनम्

ज्वलतो नामधेयानि शृङ्गं स्यात् कल्मलीकिनम् ।
जञ्जणाभवदित्येवं मल्मलाभवदित्यपि ।। ४२ ।।
अर्चिः शोचिस्तपस्तेजो हरो हृणिघृणी जमत् ।

शीघ्रः

क्षिप्रार्थे तुज्यमानासस्तूतुजानो नु तूतुजिः ।। ४३ ।।
भुरण्युरजिरं जीरा जूर्णिस्तूर्णिः शु साचिवित् ।
आशु प्राशुः शीभमोषं मक्षु शूर्ता तृषु द्रवत् ।। ४४ ।।
वातरंहाः शूघनासस्तूयं ताजद् द्युगद् युगत् ।
अज्रास्तरणिरित्येते—धर्म्मवर्गोऽयमीरितः ।। ४५ ।।

इति धर्म्मवर्गः ४

क्रियावर्गः ५

लोठते कसति लोटतेऽयते स्यन्दते स्यमति वर्ततेऽवति ।
स्रंसति स्रवति सर्पतीषति ध्वंसति ध्रजति मार्ष्टि वञ्चति ।।१।।

कालयत्यतति गाति सश्चति श्चोतति भ्रमति पेलयत्यपि ।
कण्टति स्वरति सर्सृते सिसर्त्यर्य्यति त्रयति हर्यतीङ्खते।।२।।
नक्षति क्षियति सक्षतीषति म्यक्षति त्सरति जेहतेऽर्द्दति ।
मर्द्दति ध्रपति हन्ति जिन्वति ध्राति वाति पवते भुरण्यति ।।३।।
द्राति याति पततीन्वति द्रमत्येजति द्रवति वेति वेनति ।
प्साति सेधति जिगाति रेजति द्रूलति ध्रति ऋणोति ऋण्वति ।।४।।
रीयतेऽरूपाते सीयते धवत्येति धावति तुरीयतीति च ।
ऋच्छति व्रजति डीयतेऽनिति क्षोदति प्लवति युध्यतीति च ।।५।।
इर्याति ईर्त्ते यतते रथर्यति विषिष्टि योषिष्टिरिणाति दीयति ।
इयक्षतिक्षुम्पतिरंहतिक्षिणोत्यृणोतिजङ्गन्तिजगन्तिगन्तिच ।।६।।
पिस्यति बिस्यति मिस्यति दघ्यति दघ्नोति धन्वति ध्रुवति ।
प्रवते प्लवते च्यवते कवते गवते च नवते च ।। ७ ।।
चतति च सचति च शवति च हनति च वहते मिनाति धमतीति
रजति च लजति च तकति श्वात्रति नसते मिनोति फणतीति ।।८।।
जवति च जसति च जमति च गमति जगायादगन्नजगन् ।
अयथुःष्वःकति हन्ताद् हयति हयन्तादथागनीगन्ति ।। ९ ।।
सस्रति सिस्रति हम्मति हम्यति दभ्नोति कणति नख्यति च ।
रुढति राति जगाति द्रुम्मत्याद्या गतिक्रिया बोध्याः ।। १० ।।

व्याप्तिः

आनडाक्षाण आपानोऽप्यानशे नशदश्नुते ।
नक्षतीन्वत्यशश्चाष्ट दश व्याप्तिक्रिया इमाः ।। ११ ।।

ईशनम्

ऐश्वर्य्यार्था राजतीरज्यति क्षयति पत्यते ।

अध्येषणा

परिस्रव पवस्वाभ्यर्षाशिषोऽध्येषणाक्रियाः ॥ १२ ॥

अर्चा

अर्चति गायति रेभति नदति पपृक्षा गृणाति गूर्द्धयति ।
वल्गूयति शशमानो जरते रञ्जयति मन्यते मदति ॥ १३ ॥

शंसति रसति पनस्यति पनायते भनति वेनति स्तौति ।
नौति च यौति च रौति च रजयति वाजयति पूजयति ॥ १४ ॥

स्वदति स्वरति स्तोभति पृच्छति जल्पति च कल्पते धमति ।
पणते रिहति पणायति सपति कृपायति कृपण्यति ह्वयते ॥ १५ ॥

मन्त्रयते मन्द्रयते छन्दति च च्छदयते च महयति च ।
एतेऽथ वन्दते चाथ भन्दते चाथ मन्दतेऽर्च्यर्थाः ॥ १६ ॥

परिचर्य्या

परिचरणे तु इरज्यति सपति विवासति ऋणद्धि ऋघ्नोति ।
ऋच्छति किञ्च सपर्यति विधति नमस्यति दुवस्यति च ॥ १७ ॥

याचना

यन्तारः पीपरत् पूर्द्धि मदेमहि मनामहे ।
मन्महे मायते यामि यन्धीषुध्यति चेमहे ॥ १८ ॥

मिमिड्ढि च मिमीहीति रिरीहीति रिरिड्ढि च ।
दद्धि शग्धीत्यमी शब्दाः श्रूयन्ते याचनक्रियाः ॥ १९ ॥

ईक्षणम्

चष्टे विचष्टे चिक्यच्च चाकनच्चावचाकशत् ।
विश्वचर्षणिराचक्ष्म विचर्षणिरितीक्षणे ॥ २० ॥

इच्छा

वष्टि वेति वनोति वेनति कानिषत् कनतीति च
च्छन्त्सदुश्मासि वश्मि वेशति मन्यते जुषतेऽपि च ।
चाकनच्चकमान आचक एव हर्य्यति वाञ्छति
व्याहरन्ति हि कान्तिकर्म्मणि को विदा उशिगित्यपि ॥ २१ ॥

दानम्

तुञ्जीत शिक्षति दाशति दाति च दासति च राति रासति च
अपि च पृणक्षि पृणाति च मंहत एते हि दान कर्म्माणः ॥२२॥

भोजनम्

बब्धां बभस्त्यावयति भसथो वेति भर्वति ।
ह्वरत्यविष्यन् वेवेष्टि वप्सतीत्यत्तिकर्म्माणि ॥ २३ ॥

प्रज्वलनम्

भ्राजि-भ्राशी भ्राश्यतिश्च भन्दि-मन्दि-द्युति-ज्युति ।
रुक शोचती दीदयति द्युमज्ज्वलतिकर्म्मकाः ॥ २४ ॥

क्रोधनम्

रेडि-हेडी कम्पि-भोजी भामिभ्र्रेपति दोधति ।
हृणीयते च भ्रीणाति वनुष्यति क्रुधिक्रियाः ॥ २५ ॥

हननम्

दभ्नोति धूर्वति वृणक्ति तडिच्छ्रणाति
द्रूणाति ताढि नभते धमति स्तृणाति ।
रम्णाति क्रुण्वति मिनाति मिनोति शम्ना-
त्याखण्डलार्द्दयतियातयती वियातः ॥ २६ ॥

स्नथयति तृणेढि वृश्चति
निवपन्तु श्वसिति कृन्तति ध्वरति ।

स्नेहयति वर्हयत्यव—
तिरति स्नेहति नितोशते श्वसति ।। २७ ।।
श्लथति श्रथति स्फुरति
स्फुलति च निवहयति जूर्वति च ।
आतिरदर्दति मर्द्दति
वधकर्म्मणो बुधैरुदिताः ।। २८ ।।

शयनम्

द्वौ तु स्वपितिकर्म्माणौ सस्ति च स्वपितीति च ।
इत्येवं पञ्चदशभिः क्रियावर्गोऽयमीरितः ।। २९ ।।

इति क्रियावर्गः ५

उपसर्गवर्गः ६

आ इत्यर्वागर्थे, प्रपरेति प्रातिलोम्यमेतस्य ।
अभिरभिमुखतां, प्रतिरिति तद्विपरीतं समाचष्टे ।। १ ।।
अतिसू पूजितमर्थं, प्राहतुरनयोर्विपर्य्ययं निर्दुः ।
अवनी विनिग्रहार्था, वुदिति प्रतिलोमतामनयोः ।। २ ।।
एकीभावं समिति, व्यपेति तस्माद्विपर्य्ययं ब्रूतः ।
अधिरर्थद्वयमाहोपरिभावं तद्वदैश्वर्य्यम् ।। ३ ।।
सादृश्यापरभावं संसर्गोपजन—सर्वतोभावान् ।
क्रमतोऽन्विति चापीति च तद्वदुपेति च परीति च ब्रूते ।। ४ ।।
इत्युपसर्गा उक्ता विंशतिरेषां क्वचेतरेऽप्यर्थाः ।
अथ च निपाताः केचिद्दर्श्यन्ते ये त्रिधाऽर्थभेदेन ।। ५ ।।

उपमायामिव, ननु, चिद्, नेति निषेधेऽपि पूर्वतः पठितः ।
पूजावकुत्सयोश्चिद्धेत्वपदेशानुपृष्टयोरपि नु ।। ६ ।।
अर्थोपसङ्ग्रहार्थाः, समुच्चये चेति आ इति च ।
वेति विचारे चार्थे, विनिग्रहे प्रथमवाक्यगावहहो ।। ७ ।।
परवाक्यगो विनिग्रह, उ अयं पदपूरणोऽपि स्यात् ।
किल इति विद्यातिशये, न ननुभ्यां संप्रयुक्तमनुपृष्टे ।। ८ ।।
त्वदिति समुच्चयवाची, हीति न्वर्थेऽप्यसूयायाम् ।
मेति निषेधे खल्विति तत्र च पदपूरणे च स्यात् ।। ९ ।।
नूनं विचिकित्सायां पदपूर्तो चाथ शश्वदिति ।
अनुपृष्टे तु पुरस्तादुपरिष्टादस्वयंपृष्टे ।। १० ।।
सीमिति परिग्रहे पदपूर्तो चेत्येवमितरेऽपि ।
पदपूरणानि तु विदुः कमिदीमितिये च पूर्वानिर्दिष्टाः ।। ११ ।।
इव ननु चिदु खलु नूनं घ कमित्सीमीमिमानि चान्यानि ।
पदपूरणानि, नेदिति परिभयकेऽथानुपृष्टके तु नचेत् ।। १२ ।।
आकीं नकीं नकिर्माकिर्हिकमाहिकमाकृतम् ।
नुकं सुकं नवैतानि व्यर्थान्युक्तिप्रपुष्टये ।। १३ ।।
अन्ते था, वद्, रूप-वर्ण-भूता, नु-न-चिदा-इव ।
यथा, तथा, लाक्षणिका उपमार्था उदाहृताः ।। १४ ।।

इत्युपसर्गवर्गः

ऐकपदिकवर्गः ७

अथोच्यन्ते पदान्यत्र द्वे शते चाष्टसप्ततिः ।
दमूना मेहना मूषः शिताम जठरं जहा ॥ १ ॥
ईर्मान्तासः कायमानो द्रुपदे विद्रधे निधा ।
शीरं नसन्त नंसन्ते शिप्रे तितउ तुग्वनि ॥ २ ॥
मध्या कुरुतन व्यन्तः परितक्म्याह्मसद् रजः ।
सुविते दयते बाहो मन्दू आहनसो हरः ॥ ३ ॥
इषिरेणेष्मिणः क्राणा अकूपारस्य दावने ।
लोधं वाशी नू च नूचिद्विषुणो मन्दिनेऽदितिः ॥ ४ ॥
शिशीते सुतुको जामिः पिता जसुरिरेरिरे ।
शंयोरप्रायुवोऽस्यास्या गातुस्तूताव दंसयः ॥ ५ ॥
सुप्रायणा गौश्च्यवनो जरते वियुते ऋधक् ।
चयसे जुहुरे चेति द्वाषष्टिपदसंहतिः (६२) ॥ ६ ॥

*

सस्निमन्धो वावशानो वार्य्यं दूतो वनुष्यति ।
भन्दना आहनः सोमो अक्षाः श्वात्रं तरुष्यति ॥ ७ ॥
नद ऊतिर्हसमाने ससं पड्भिर्द्विता पविः ।
वाहिष्ठो व्रा वराहोऽर्को धन्व वक्षः सचा सिनम् ॥ ८ ॥
पृथुज्रया असश्चन्ती शर्य्या इत्था चिदाघृणिः ।
द्युम्नं पवित्रमाङ्गूषः काणुका शिपिविष्ट आ ॥ ९ ॥
तोदः स्वञ्चाः श्मशा विष्णुरुर्वशी वयुनं वृकः ।
आपान्तमन्युस्तूर्णाशं गधिता गध्यमारितः ॥ १० ॥
वाजगन्ध्यं वाजपस्त्यं जोषवाकं निचुम्पुणः ।
कौरयाणस्तौरयाणः क्षुम्पं पादुः पर्दि परि ॥ ११ ॥

हरयाणोऽप्यह्लयाणो निष्षपी तूतुमाकृषे ।
काकुदं केपयोंऽसत्रं वीरिटे चर्षाणिः सृणिः ॥ १२ ॥
शम्ब ईं सीमेनमनां समस्याच्छ कुटस्य च ।
अथर्य्यु मध्रिगुः कृत्तिः श्वघ्नी च स्वसराणि च ॥ १३ ॥
अन्दी चेति पदानि स्युरशीतिश्चतुरुत्तरा (८४) ।

*

आशुशुक्षणि राशाभ्यः सललूकमलातृणः ।
कुणारु कल्पयं काशिर्नक्षद्दाभं सवीमनि ॥ १४ ॥
ऋदूदर ऋदूपे किरस्कृधोयुरसिन्वती ।
पुलुकामो भाऋजीको रुजाना जूर्णिरोमना ॥ १५ ॥
उपलप्रक्षिणी पाथः सप्रथाः कपना कृपा ।
बृबदुक्थं प्रकलविद्वीरुधः शुरुधश्चनः ॥ १६ ॥
शशमानः शाशदानः श्रायन्तः पचताऽग्रिया ।
विदथानि विजामातुरीक्षे क्षोणस्य विस्रुहः ॥ १७ ॥
अभ्यर्द्धयज्वा दुरितं स्तियानां तुर्वणिः स्तिपाः ।
श्रुष्टी सोमानमोमासोऽमिनोऽमूरः किमीदिने ॥ १८ ॥
सृप्रः शिप्रे सुशिप्रोऽक्रोऽसूर्तेसूर्तेऽप्रतिष्कुतः ।
सुविदत्रः सुदत्रोऽम्यग् रंसु गिर्वणसेऽमतिः ॥ १९ ॥
आशीरस्मे जारयायि यादृश्मिन्नानुषक् सुमत् ।
तुञ्जोऽमीवाऽमवानप्वा ततनुष्टिमिलीविशः ॥ २० ॥
अह्रुरो बकुरोऽसक्रां रुशदुल्वं रिशादसः ।
निशृम्भा अनवायं च कियेधाश्च प्रतद्वसू ॥ २१ ॥
गल्दया जल्हवोऽसामि कीकटेषु पराशरः ।
शिरिम्बिठो वेकनाटान् बृन्दं वुन्दोऽनवब्रवः ॥ २२ ॥

हिनोतोराण उपसि दिविष्टिष्वभिधेतन ।
जिन्वत्यजीगः कुलिशोऽनर्शरातिं क्रिविर्द्दति ॥ २३ ॥
तुरीपं रास्पिनोऽमत्र ऋजुनीति ऋचीषमः ।
द्विवर्हा बर्हणा चाकन् जरूथं दूत ऋञ्जतिः ॥ २४ ॥
जबार्वनर्वा चोष्कूयमाणश्चोष्कूयते भृमिः ।
वतः पुरन्धिर्वाताप्यं रथर्य्यति करूळति ॥ २५ ॥
सदान्वे जज्झतीदंयुः शरारुर्दन आधवः ।
विष्पितः स्याद्बृबीसं च पदान्येतानि भावय ॥ २६ ॥
शब्दाः सन्दिग्धसंस्काराः संदिग्धार्था अनेकधा ।
विगृहीता निगमतः संगृह्य ते प्रदर्शिताः ॥ २७ ॥

इति ऐकपदिकवर्गः ॥ ७ ॥

ऐकपदिकार्थवर्गः ८

एषां पदानां यानर्थान् भावयन्ति विपश्चितः ।
तानपीह प्रवक्ष्यामि यथावदनुपूर्वशः ॥ १ ॥
दमूना इष्यते दान्ते यस्य वाभिरुचिर्गृहे ।
यस्य दान्ते मनस्तस्मिंस्तथा दानमनस्यपि ॥ २ ॥
मेहना महनीयेऽर्थे धनादाविष्यतेऽथवा ।
न गृहेऽस्ति ममेत्यर्थे छन्दोगानां पदत्रयम् ॥ ३ ॥
मूषस्तु मूषिकायां स्युः शिताम गुदमुच्यते ।
केचिद्वदन्त्यपि श्यामे बाह्वोरपि यकृत्यपि ॥ ४ ॥
जठरं तूदरे सिद्धं जघानार्थे जहापदम् ।
ईर्म्मान्ताः पृथुजङ्घत्वात्सूर्य्याश्वाश्चेरितान्तकाः ॥ ५ ॥

यस्तु कामयमानः स्यात्कायमानः स उच्यते ।
कायमानश्चायमान इत्यप्यन्ये प्रचक्षते ॥ ६ ॥
द्रुपदं पादुकायां स्यान्निगडे वा द्रुमश्रये ।
विद्रधं तु भयावस्थे व्यूढे वा विदृढेऽपि वा ॥ ७ ॥
निधा पाशसमूहे स्याच्छीरोऽग्नावनुशायिनि ।
तथैवाशनशीलेऽपि शीरं केचित्प्रचक्षते ॥ ८ ॥
भवेदभिनमन्त्यर्थे नंसन्ते च नसन्त च ।
शिप्रे हनू नासिके वा चालन्यां तितउः स्मृतः ॥ ९ ॥
तुग्व तीर्थं नदीनां स्यात्स्नातुं यत्रावतीर्य्यते ।
मध्या मध्ये कुरुतनेत्यादिषूपजनोऽस्ति नः ॥ १० ॥
व्यन्तो वीधातुनिर्वृत्तो गतिप्रजननादिषु ।
पश्यत्सु गन्तृष्वश्नत्सु व्यन्त इत्यपि चक्षते ॥ ११ ॥
परितक्म्याऽभितोगन्त्र्यां रात्रौ वा केचिदूहिरे ।
अद्मान्नं तत्र सदनादद्मसत् पाककारिणी ॥ १२ ॥
रजस्तु ज्योतिरब्लोकासृगहर्वाचिकं मतम् ।
सुवितं तु प्रसूते वा प्रजायां वाऽपि सुष्ठुगे ॥ १३ ॥
दानादानगतित्राणहिंसादाहविभक्तिषु ।
दयते पदमाख्यातं वाहः सोमेऽपि कथ्यते ॥ १४ ॥
वाहः स्तुतौ चर्म्मणि वा सोमाधिषवणात्मके ।
मन्दू मदिष्णू विख्यातावथवापि मदिष्णुना ॥ १५ ॥
आहनाः स्याद्वञ्चनवान् ह्वरस्तु रजसा समम् ।
मनस्त्वपेक्षासंपन्नमिषिरं प्रणिधीयते ॥ १६ ॥
इष्म दृष्टिगतीच्छासु तद्योगादिष्मिणो मताः ।
क्राणा भवन्ति कुर्वाणा अकूपारस्तु कच्छपे ॥ १७ ॥

आदित्ये च समुद्रे च दावा स्याद्दातृदानयोः ।
लोधं लुब्धेऽथ वाशी स्याद्वाचि च्छेदनसाधने ।। १८ ।।
इदानीमपि चेत्यर्थे नूच स्यान्नूचिदित्यपि ।
विषुणो विषमेऽपि स्यान्मन्दीति स्तुतिमत्यपि ।। १९ ।।
अदितिर्देवमाता स्यात्प्रकृतिर्भूरखण्डिता ।
शिशीते तु श्यतीत्यर्थे सुतुकः सुप्रजाः सुगः ।। २० ।।
पुनरुक्ते जामिशब्दो भगिन्यादौ च बालिशे ।
पिता तु प्रभुराजन्म जसुरिस्ताडिते तथा ।। २१ ।।
वद्धमुक्ते च निहतवेगश्रान्ते बुभुक्षिते ।
एरिरे प्रेरयामासुः शंयुः सुखयुरुच्यते ।। २२ ।।
बृहस्पतिसुते रोगशमने भयनाशने ।
अप्रायुवोऽप्रमाद्यन्तोऽप्रगच्छन्तोऽपि वा मताः ।। २३ ।।
अस्या अस्येति षष्ठ्यन्तं पदद्वन्द्वमुदात्तवत् ।
आदेशेऽथानुदात्तं स्यादन्वादेशे यदा भवेत् ।। २४ ।।
भुव्यध्वनि गतौ गातुस्तूतावववृधे समौ ।
दंसयो दासकर्माणि सन्ति सुप्रायणाः सुगाः ।। २५ ।।
तास्तु यज्ञगृहद्वार इति यास्कोऽभिमन्यते ।
अर्चिषः शाकपूणेस्तु मते सुप्रायणा इति ।। २६ ।।
रश्मौ सूर्ये बलीवर्दे धेनौ भुवि च वाचि च ।
वजेऽम्बुनि शरे स्वर्गे लोम्नि गौरिति पठ्यते ।। २७ ।।
च्यवनो वा च्यवानो वा भार्गवे स्तोतरि स्मृतः ।
जरते स्तौति वियुते पृथग्भावे ऋधक् पृथक् ।। २८ ।।
चयसे नाशयस्यर्थे जुहुरे जुह्विरे यथा ।
द्विषष्टिपदजातानामेवमर्था निरूपिताः ।। २९ ।।

सस्निर्मेघेऽपि संस्नातेऽप्यन्धोऽन्नादृक्तमः स्वपि ।
अथ कामयमाने स्याद्वावशानोऽभिवक्तरि ।। ३० ।।
वार्य्यं तु वरणीयं स्याद्यदत्यन्तं वरं भवेत् ।
दूतो वृत्तवहे सिद्धः, क्रोधे घाते वनुष्यति ।। ३१ ।।
भन्दना तु स्तुतौ, क्रूरवाक्यादाहन्तराहनः ।
आशिष्टाक्षैषमक्षारीदित्यर्थेऽक्षा इतीष्यते ।। ३२ ।।
श्वात्रं धने च क्षिप्रे च तरुष्यति जिघांसति ।
जपत्यध्येतरि ऋषौ नद ऊतिस्तु तर्पणे ।। ३३ ।।
रक्षायां हासमानन्तु स्पर्द्धमाने च हृष्यति ।
ससं माध्यमिकं ज्योतिरुच्यतेऽनित्यदर्शनात् ।। ३४ ।।
स्पर्शनैर्बाधनैः पानैः पादैः पड्भिर्द्विता द्विधा ।
पविर्वज्रे वाचि यज्ञे रथचक्रप्रधावपि ।। ३५ ।।
वाहिष्ठोऽत्यधिकं वोढाऽऽह्वाता वाऽत्यधिकं च यः ।
व्रा व्रात्या वरितारश्च केषांचिदुषसो मते ।। ३६ ।
वराहोऽभ्रे च भूदारे वराहा अङ्गिरोगणाः ।
ये च माध्यमिका देवगणास्ते तु वराहवः ।। ३७ ।।
प्रजापतिः पुरा वायुर्भूत्वाऽप्सु विचरँस्ततः ।
उज्जहार स एमूषो वराहः पृथवीमिमाम् ।। ३८ ।।
वृक्षे चान्ने च मन्त्रे च देवे चार्कः प्रतिष्ठितः ।
अन्तरिक्षे तु धन्व स्याद्धन्वा स्यान्मरुदेशके ।। ३९ ।।
भुजयोरन्तरं वक्षः पक्षसी ये द्विदिङ्नते ।
सचा सह सिनं त्वन्नं महावेगः पृथुज्रयाः ।। ४० ।।
असश्चन्ती न सज्येते न व्युदस्यत एव वा ।
अन्तरेण समानेनान्योन्यमाश्रित एव ये ।। ४१ ।।

इषवोऽङ्गुलयः शर्य्या इत्था त्वित्थमुभौ समौ ।
या सोमक्रयणी गौः स्यात् तत्र नामैव चित्पदम् ॥ ४२ ॥

पूजोपमावकुत्सादावनुदात्तं तु चित्पदम् ।
आघृणिस्त्वागतक्रोधे तथैवागतदीप्तिके ॥ ४३ ॥

द्युम्नं धनयशोऽन्नेषु पवित्रं त्वप्सु रश्मिषु ।
मन्त्रेऽप्यग्नौ च वायौ च सोमे सूर्य्ये मघोनि च ॥ ४४ ॥

अङ्गूषः स्तोम एवेष्टः, काणुका कामुकोऽथवा ।
हतपानाभिलाषो वा काणुका कणशः कृतम् ॥ ४५ ॥

शिपिविष्टपदेनासौ विष्णुः प्रायो विशेष्यते ।
अर्वागर्थे तूपमार्थे चार्थेऽध्यर्थेऽपि आ इति ॥ ४६ ॥

तोदस्तुदो गृहस्थः स्यात् कूपो भूबिलमेव वा ।
स्वञ्चाः सुगमनो योऽर्थो नाडी कुल्या नदी श्मशा ॥ ४७ ॥

आदित्ये द्वादशे विष्णुर्यज्ञे वा व्यापकेऽपि वा ।
उर्वश्यप्सरसि प्रज्ञाकान्त्योस्तु वयुनं भवेत् ॥ ४८ ॥

वृकस्तु चन्द्र आदित्यः श्वा वज्रोऽथ वृकी शिवा ।
आपान्तमन्युः सोमे स्यादिन्द्रे वा मन्युयोगतः ॥ ४९ ॥

तूर्णाशं शीघ्रसंव्यापि शीघ्रभक्ष्यथवोदकम् ।
गाढमङ्गैः परिष्वक्ता गधिता परिकीर्तिता ॥ ५० ॥

गध्यं तु ग्रहणीयेऽर्थे सोमे भूयः प्रयुज्यते ।
स्तोमं प्रति गतो यज्ञं प्रति वा गत आरितः ॥ ५१ ॥

वाजपस्त्यो वाजगन्ध्यः सोमे ह्यन्नविशेषिते ।
जोषवाकमविस्पष्टवचनं श्रव्यवागपि ॥ ५२ ॥

निचुम्पुणपदेनासौ सोमः प्रायो विशेष्यते ।
निचुम्पुणः समुद्रोऽपि वरुणोऽवभृथोऽपि च ॥ ५३ ॥

कृतयात्रे कौरयाणस्तौरयाणस्तु शीघ्रगे ।
क्षुम्पं त्वहिच्छत्रकं स्यात् क्षुभ्यते यदयत्नतः ॥ ५४ ॥

पादुः पादतलासक्तचर्म्मकाष्ठादिके गमे ।
पदिः पक्षी, परीत्येतत् सर्वतोभाव इष्यते ॥ ५५ ॥

भागवीप्सालक्षणेत्थंभूताख्यानेषु वर्जने ।
हरयाणो नित्यकालमभिप्रस्थितयानके ॥ ५६ ॥

प्राणैश्वर्यादिहरणप्रयाणे वापि गद्यते ।
अह्रयाणो वदान्यत्वादलज्जितगतिर्मतः ॥ ५७ ॥

निष्षपी स्त्रीरतो यस्य शेपो नित्योद्धतः स्त्रियै ।
तूतुमाकृष इत्येतत्तूर्णमाकुरुषेऽपि वा ॥ ५८ ॥

त्वरया कुरुषे वापि काकुदं तालु कथ्यते ।
केपयस्तु कपूयाः स्युर्य्ये हि दुष्कर्म्म कुर्वते ॥ ५९ ॥

अंसत्रं कवचं वा स्याद्धनुर्वाऽप्यथ बीरिटे ।
शून्यस्थानेऽन्तरिक्षे वा समवायेऽपि वा नृणाम् ॥ ६० ॥

चर्षणिस्तु जनो द्रष्टा सृणिर्दात्रेऽङ्कुशेऽपि च ।
शम्बो वज्रेऽथ निर्देशेऽपीदमर्थेऽपि वेमिति ॥ ६१ ॥

सीम् स्यात् सीमान इत्यर्थे व्यर्थं वा पदपूरणम् ।
एनामेनं द्वितीयान्तं पदद्वन्द्वमुदात्तवत् ॥ ६२ ॥

आदेशेऽथानुदात्तं स्यादन्वादेशे यदा भवेत् ।
समः सर्वोऽच्छशब्दस्याभिमुख्ये वृत्तिरिष्यते ॥ ६३ ॥

अथवा प्राप्तुमित्यर्थो मन्यते शाकपूणिना ।
कुटः कृतेऽथर्य्युरिति वह्नौ गमनशालिनि ॥ ६४ ॥

अथर्य्यवो बाहवः स्युरथर्य्योऽङ्गुलयः स्त्रियः ।
अध्रिगुस्त्वग्निरिन्द्रश्च यस्याप्रतिहता गतिः ॥ ६५ ॥

मन्त्रोऽप्यध्रिगुरुद्दिष्टः कृत्तिरन्नं यशोऽपि च ।
कृत्तिश्चर्ममयं वस्त्रं कन्था सूत्रमयी तथा ॥ ६६ ॥

श्वघ्नी स्यात् कितवोऽह्नानि स्वसराणि भवन्ति हि ।
ब्रन्दी तु मृदुलो वा स्यान्मार्द्ववापादकोऽपि वा ॥ ६७ ॥

इत्यर्थाश्चतुराशीतिपदानामूहिता बुधैः ।

※

आशुशुक्षणिरग्निः स्यादाशास्तूपदिशो दिशः ।
सललूकं तुतद्रक्षः संलुब्धं पापकं च यत् ॥ ६८ ॥

संमूढं प्रच्युतं स्थानादथवाऽप्यपसारि यत् ।
अलमातर्द्दनो योऽर्थः स मेघः स्यादलातृणः ॥ ६९ ॥

अलातृणः कुणारुश्च कियेधाश्च शिरिम्बिठः ।
इलीबिशः कत्पयं च पड्भिर्मेघो विशिष्यते ॥ ७० ॥

कुणारुः कणनस्तद्वत् कत्पयः स्यात् सुखोदकः ।
नक्षद्दाभमभिव्याप्य हन्तारं विद्धि वज्रिणम् ॥ ७१ ॥

काशिर्मुष्टिः सबीमेति स्यादनुज्ञार्थकं पदम् ।
मृदूदरस्तु यः सोमः स एव स्यादृदूदरः ॥ ७२ ॥

अर्द्दनात्पालकौ बाहू ऋदूपे भवतोऽथवा ।
ऋदुशब्दो मर्मवाची बाहू स्तो मर्मपालकौ ॥ ७३ ॥

किः कर्ता, यस्तु दीर्घायुः सोऽस्कृधोयुः कृधुर्लघुः ।
हनू असंखादन्त्यौ चेत् कथयेते असिन्वती ॥ ७४ ॥

प्रसिद्धदीप्तिमत्त्वात्तु भाऋजीकोऽग्निरुच्यते ।
पुलुकामस्तु बह्विच्छो रुजाना नद्य ईरिताः ॥ ७५ ॥

जूर्णिर्हेतिश्चमूः क्रोध ओमना त्ववनेन वा ।
उपलप्रक्षिणी धान्यभर्जनी सक्तुकारिका ॥ ७६ ॥

पाथोऽन्तरिक्षमापोऽन्नं सप्रथाः सर्वतः पृथुः ।
कपनाः कृमयो, देवाच्या कृपेति पदे युजौ ॥ ७७ ॥

देवान् प्रत्यक्तया तद्वत् कल्प्ययेत्यर्थमाहतुः ।
बृबदुक्थो महोक्थः स्याद्यस्मै वोक्थं प्रयुज्यते ॥ ७८ ॥

बणिक् प्रकलविद् यो हि गणितं वेत्ति तत्त्वतः ।
ओषध्यो वीरुधोऽथापः शुरुधोऽन्नं चनः स्मृतम् ॥ ७९ ॥

शशमानः शंसमानः शाशदानस्तु यो मुहुः ।
अत्यन्तं वा शातयति श्रायन्तस्तु समाश्रिताः ॥ ८० ॥

समाश्रयन्तः श्रायन्तः, पक्रस्तु पचता समौ ।
अग्रिया तु भवेदग्र्या ऽग्रगत्याप्यग्र एव वा ॥ ८१ ॥

विज्ञानानि च यज्ञाश्च विदथानि प्रचक्षते ।
विजामाता न यत्रास्ति जामातुः सर्वलक्षणम् ॥ ८२ ॥

ईक्षे तथेशिषे तुल्यौ क्षोणो निवसिता भवेत् ।
क्षोणं निवासस्थानं स्याद् भवन्त्यापस्तु विस्रुहः ॥ ८३ ॥

अभ्यर्द्धयज्वा पूषा स्मान्मरुद्भ्योऽभ्यर्धयन् रसान् ।
भूतानि वाभिमुख्येन वृद्ध्या योजयतीह सः ॥ ८४ ॥

दुरितं दुर्गतिकरं स्तिया आपोऽतिसंहताः ।
शीघ्रं सम्भाजको योऽर्थः स तुर्वणिरुदाहृतः ॥ ८५ ॥

स्तिपा अग्निर्हिमात् पाति कूपो वा पात्वुपस्थितान् ।
श्रुष्टी क्षिप्रं सुखं धान्यशलाकाप्यभिधीयते ॥ ८६ ॥

सोमानमभिषोतारमोमासो रक्षकास्तथा ।
तर्पकास्तर्पणीयाश्च सोऽमिनो यो ह्यहिंसितः ॥ ८७ ॥

अमिनोऽमितमात्रश्चानन्तकालोऽपि वामिनः ।
अमूर इत्यमूढः स्यात् किमीदी पिशुनो मतः ॥ ८८ ॥

सृप्रः सर्पोऽथ सर्पिर्वा तैलं वा सर्पणाद् भवेत् ।
शिप्रे हनू नासिके वा सुशिप्रो यस्य ते शुभे ॥ ८९ ॥

अक्रः प्राकार इत्युक्तो यदाक्रामति सोऽम्बरम् ।
सूर्ते सुविस्तृते व्योमन्यसूर्ते वायुविस्तृते ॥ ९० ॥

यस्त्वप्रत्यागतो युद्धेऽन्येनाप्रतिगतोऽपि वा ।
योऽप्रतिस्खलितः पूर्वमन्याप्रतिहतोऽपि वा ॥ ९१ ॥

पराङ्मुखः कृतो नो यः स च स्यादप्रतिष्कुतः ।
सुविदत्रः सुविद्यः स्यात् सुदत्रस्तु सुदातरि ॥ ९२ ॥

अम्यक् त्वसम्यगेव स्याद्ऋष्टिर्वाभिगता रिपून् ।
सहभूतापि वा सा स्याद् रमणीयेषु रंस्विति ॥ ९३ ॥

गिर्वणाः स्तुतिसंभक्ताः शक्रो गीर्वाण एव वा ।
सूर्य्यस्यवे स्वतो भूतः प्रकाशोऽमतिरुच्यते ॥ ९४ ॥

आशीः सान्ता शुभाशास्ति रान्ता त्वाशिरमाह च ।
आशिरं दधि मन्यन्ते दध्यर्थं पय एव वा ॥ ९५ ॥

अस्मदः सर्वलिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु ।
वचनेषु च सर्वेषु वृत्तमस्मे इदं पदम् ॥ ९६ ॥

जारयायीति चाख्यातमजनीत्यर्थ इष्यते ।
तमीजरयिता गन्ता चोस्रः स्याज्जारयायि वा ॥ ९७ ॥

यादृस्मिन् यादृशेऽथानुपूर्व्यमेवानुषक् स्मृतम् ।
उपर्य्युपरिसंलग्नमनुषक्तं तदानुषक् ॥ ९८ ॥

सुमत् स्वयमथो तुञ्जः कथितो दानवज्रयोः ।
अमीवा गर्भविध्वंसी कृमिर्वा रोग एव वा ॥ ९९ ॥

अमात्यवान् यत्नवान् वा रोगभूतोऽपि वाऽमवान् ।
अप्वा व्याधिर्भयं वापि मेघस्तु स्यादिलीविशः ॥ १०० ॥

ततनुष्टिस्तु विषयोपभोगैकक्रियापरः ।
अंहूरणोऽन्धकूपः स्यादंहस्वानथवांहुरः ॥ १०१ ॥

बकुरो भास्करो दीप्तो ज्योतिर्हेतिर्भयंकरः ।
स भास्वद्द्रविणो वापि रुशद्वर्णस्तु रोचनः ॥ १०२ ॥

असक्रा त्वनपाया स्यादथासाधारणी च सा ।
उल्वं जरायोरप्यन्तर्गर्भवेष्टनमुच्यते ॥ १०३ ॥

ये नाशयन्ति हिंसन्तं ते कथ्यन्ते रिशादसः ।
अविश्लथमविश्रान्तं शीघ्रं वापि हरन्ति ये ॥ १०४ ॥

तेऽश्वानिश्रृम्भाः कथ्यन्तेऽनवायं त्ववियोजनम् ।
निःशेषं चानवायं स्यात् कियेधा इन्द्रमेघयोः ॥ १०५ ॥

प्राप्तौ धाना ऋजीषं च ताविन्द्राश्वौ प्रतद्वसू ।
स्यादागल्दापि गल्दापि नाडी गलितधारिणी ॥ १०६ ॥

जह्लवोऽग्निविहीनः स्यादसमाप्तमसामि च ।
कीकटा असदाचारास्तद्देशाः कृपणा अपि ॥ १०७ ॥

ऋषिः कृषिः पराभूतिकर्तेन्द्रश्च पराशरः ।
शिरिम्बिठस्तु मेघः स्याद् भारद्वाजः शिरिम्बिठः ॥ १०८ ॥

बेकनाटा वादुर्धुषिका वृन्दं जनसमूहके ।
इषुर्बुन्दोऽशनिर्बुन्दो हिनोत हिनुतेतिवत् ॥ १०९ ॥

यस्त्वप्रतिहताज्ञः स्यात् कथ्यते सोऽनवब्रवः ।
उराणो बहु कुर्वाण उपस्थे तूपसीति च ॥ ११० ॥

दिविष्टयो दिव्यगतिप्रसाधिन्यः क्रिया मताः ।
अभिधेतनशब्दस्य भाषायामभिधावत ॥ १११ ॥

जिन्वन्ति प्रीणयन्तीति कुलिशं वज्रमुच्यते ।
अजीगरिति चागारी रत्सि गृह्णासि वा तथा ॥ ११२ ॥

अनश्लीलप्रदाता योऽनर्शरातिः स उच्यते ।
अनश्लीलप्रदानं वानर्शरातिरुदाहृता ।। ११३ ।।

क्रिविर्दती शतघ्नी स्यात् तुरीपमुदकं मतम् ।
रास्पिनः शब्दवन्नीरं तद्वान्मेघोऽपि रास्पिनः ।। ११४ ।।

उच्चार्यमाणस्तोत्रेण स्तोता वा रास्पिनः स्मृतः ।
अमत्रोऽपरिमाणः स्यात् स च योऽनभिहिंसितः ।। ११५ ।।

ऋजुनीती त्ववक्राध्वनेतारौ साधुसंविदौ ।
यथेच्छस्तूयमानार्थगुणशाली त्वृचीषमः ।। ११६ ।।

द्विबर्हा वर्द्धमानो यो द्वयोरपि दिवोः समम् ।
हिंसा वृद्धिः परिवृढो बर्हणा परिबर्हणा ।। ११७ ।।

चायन् कामयमानो वा चाकन् कामयतेऽपि वा ।
स्तोत्रं जरूथं दूतस्तु वृत्तावाह्यथ ऋञ्जतिः ।।११८ ।।

आत्मसात्करणे धातुः स समीकरणेऽपि च ।
जवारू मण्डलं भानोरनर्वाऽन्यमनाश्रितः ।। ११९ ।।

चोष्कूयमाणस्तु भृशं व्युदस्यन् वा भृशं ददत् ।
चोष्कूयते भृशं दत्ते व्युदस्यत्यथवा भृशम् ।। १२० ।।

भ्रमिता वा भ्रमयिता भृमिरग्निर्विशेष्यते ।
बतस्तु दुर्बलोऽर्थः स्याद बत खेदानुकम्पयोः ।। १२१ ।।

बहुकर्मा बहुप्रज्ञः पुरन्धिः स्यात् पुरन्दरः ।
वरुणोऽपि पुरन्धिः स्याद् वाताप्यं वर्षणोदकम् ।। १२२ ।।

रथं वा रंहणं वापि यदिच्छति रथर्य्यति ।
कृत्तदन्ततया देवः पूषा प्रोक्तः करूळती ।। १२३ ।।

स्यादलक्ष्मीः सदान्वेति दुर्भिक्षस्यापि देवता ।
जज्झतीरीदृशं शब्दं कुर्वाणा आप एव च ।। १२४ ।।

इदं कामयमानो यः स इंदयुरुदाहृतः ।
वसूयुर्विप्रयुः शंयुः कियुरित्यादयस्तथा ।। १२५ ।।

शरारुः संशिशरिषुर्विद्धि दानपरान् दनः ।
आकम्पनस्त्वाधवः स्याद् विप्राप्तत्वात्तु विष्पितः ।। १२६ ।।

इतश्चेतश्च विस्तीर्णो विप्राप्त इति कथ्यते ।
ऋबीसं पृथिवीमाहुर्नैगमार्थविशारदाः ।। १२७ ।।

इतीत्थमर्था आख्याता यास्कव्याख्यानुसारतः ।
द्वात्रिंशशतसंख्यानां पदानामपि पूर्ववत् ।। १२८ ।।

*

शब्दसारूप्यसम्बन्धादर्थबोधाविरोधतः ।
प्राचीनैरूहिता अर्थाः सर्व एवात्र दर्शिताः ।। १२९ ।।

श्रद्धेया नैव ते सर्वे प्रादेशिकतया कृताः ।
अनैकान्त्यात् प्रदेशस्य मण्डलीमण्डपादिषु ।। १३० ।।

पदजात्याऽभिधेयेन संस्कारेण स्वरेण वा ।
गुणेन वा विभागेन विक्षेपेण क्रमेण वा ।। १३१ ।।

अध्याहारेण वा तद्वद् व्यवधानादितोऽपि वा ।
यानि यानि पदान्यत्र निर्द्धार्य्यन्ते न तत्त्वतः ।। १३२ ।।

यानि वा परिदृष्टानि बहुष्वर्थेषु कानिचित् ।
तेषां कृतो विमर्शाय पदानामेष संग्रहः ।। १३३ ।।

त्वेति नाम निपातो वा पदं जात्या न निश्चितम् ।
शितामेति गुदं शाकपूणेर्यास्कस्य दोः पशोः ।। १३४ ।।

तैटिकेस्तु यकृच्छ्यामं तस्माद्वाच्यं न निश्चितम् ।
ईर्म्मान्तास ऋबीसं च संस्कारे नावधार्यते ।। १३५ ।।

"वने न वायो"[1]— इत्यत्र स्वरान्नावगतं पदम् ।
प्रदेशतोऽनवगतं "करूडेत्यादिकं पदम्" ।। १३६ ।।

मेहनेत्यत्र न ज्ञातो विभागोऽस्ति विरोधतः ।
तत्रैकपद्यं शाकल्यो मेने गार्ग्यः पदत्रयम् ।। १६७ ।।

द्यावा नः पृथिवीत्येतद्विक्षेपानवधारितम्[2] ।
क्रमस्तूपरमध्वं म—इत्यादौ नावगम्यते[3] ।। १३८ ।।

का क्रिया "दानमनसो नो मनुष्यान्" इति स्थले ।
वायुर्नियुत्वान्[4]—इत्येतद् व्यवधानान्न निश्चितम् ।। १३९ ।।

इत्थं दशानवगमाः शब्दा एते प्रदर्शिताः ।
ततोऽन्यथापि बहुधा दृश्यते सङ्करक्रमः ।। १४० ।।

---

१. वने न वायो न्यधायि चाकञ्छुचिर्वां स्तोमो भुरणावजीगः ।
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्य्यो नृतमः क्षपावान् ।।
—ऋ. सं. ७ । ७ । २२ । १; ऐ. आ. ५ । ३

अत्र वेति य इति पदद्वयं शाकल्यो मेने । किन्तु पदद्वयसत्त्वे यद्वृत्तात्परस्यन्यधायीत्याख्यातस्योदात्तत्वमभविष्यत् । दृश्यते तु निघातः । तस्माद्—वाय—इत्येकमेव पदम् ।

२. द्यावा नः पृथिवी इमं सिध्रमद्य दिविस्पृशम् । यज्ञं देवेषु यच्छताम् ।
—ऋ. २ । ८ । १० । ५

३. रमध्वं मे वचसे सोम्याय ऋतावरीरुप मुहूर्त्तमेवैः ।
प्र सिन्धुमच्छा बृहती मनीषाऽवस्युरह्वे कुशिकस्य सूनुः ।।
—ऋ. ३ । २ । १२ । ५ ।

४. प्र वावृजे सुप्रया वर्हिरेषामा विश्पतीव वीरिट इयाते ।
शामक्तो रुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान् ।
—ऋ. ५ । ४ । ६ । २ ।

तत्र तत्र प्रकरणे यादृगर्थोऽवभासते ।
तथा तथार्थं कल्पन्ते मतिभेदात् पृथक् पृथक् ।। १४१ ।।

इत्थमेवेति नाद्यापि तेऽर्थाः शक्याः प्रकल्पितुम् ।
अन्योऽप्यर्थो भवेदेषां प्रज्ञया संप्रधारितः ।। १४२ ।।

कानिचित्तु पदान्यत्र बह्वर्थानि भवन्ति हि ।
रजोहरःसदृक्षाणि तेषां पाठः प्रसङ्गतः ।। १४३ ।।

इति ऐकपदिकार्थवर्गः ।।८।।

स्तृभिर्ऋक्षा च नक्षत्रे, तथाऽल्पे दभ्रमर्भकम् ।
मेना ग्नाः स्त्रीष्वया एनाऽन्वक्षनिर्द्देशकर्म्मणि ।। १ ।।

अभित्वे च प्रपित्वे चासन्ने, प्राप्ते तिरः सतः ।
स्यातामावपने शब्दावूर्द्दरं कृदरं तथा ।। २ ।।

रम्भः पिनाकं दण्डे स्याद्, वम्रीभिरुपजिह्विका ।
सीमिकासु, प्रजनने शेपः स्याद् वैतसोऽपि च ।। ३ ।।

अर्द्धे त्वनेमौ, सचते सिषक्तु च निषेवणे ।
भयवेपनयोः स्यातां भ्यसते रेजतेऽपि च ।। ४ ।।

इति द्विपदैकार्थसंग्रहः ।।८।।

स्वर्गौः पृश्निर्नभो नाको विष्टप् चेति पदानि षट् ।
समानि दिवि चादित्ये साधर्म्यात् परिचक्षते ।। १ ।।

खेदा तु किरणा गावो रश्मयोऽभीशवस्तथा ।
आदित्यरश्मिवत् प्रोक्ता एते पञ्चाश्वरश्मिषु ।। २ ।।

अद्रिर्गोत्रो गिरिर्ग्रावा पर्वतोऽश्मा व्रजो बलः ।
रौहिणो रैवतोऽप्यश्नो वराहः शम्बरुश्चरुः ।। ३ ।।

पर्शानः[1] पुरुभोजाश्च फलिगश्चोपरोपलौ ।
शैलेऽपि मेघवत् प्रोक्ताः शब्दा एकोनविंशतिः ।। ४ ।।

इति द्वयर्थसाधारणपदानि ।।९।।

अनेकार्थवर्गः ।। ६ ।।

अ

अथादित्ये समुद्रे चाकूपारः कच्छपेऽपि च ।
अक्षरं वाचि तु क्लीवेऽक्षये त्रिषु तथोदके ।
यज्ञेऽध्वरोऽध्वरं व्योमन्यपस्तूदककर्म्मणोः ।। १ ।।
अप्नस्तु पदनाम स्याद्रूपेऽपत्ये च कर्म्मणि ।
अभ्वो महति पुंसि स्यादभ्वं तूदकमेघयोः ।। २ ।।
अमतिः पदनाम स्याद्रूपेऽप्यमतिरुच्यते ।
अम्बरं त्वन्तिकव्योम्नोरर्कौ वज्रान्नयोः पदम् ।। ३ ।।
ह्रस्वेऽर्भकोऽर्भकं तु स्यादुत्तराणि पदान्यधि ।
पृथिव्यामवनिर्नद्यङ्गुलिष्ववनयः पृथक् ।। ४ ।।
अश्वः पदं च मेघे च पदमघ्न्या तथा गवि ।
नदीषु च जले चार्णाः द्विरग्निः पदनामसु ।। ५ ।।
अजिरं चाजिराश्चेति क्रमात् क्षिप्रे नदीष्वपि ।
अदितिः पदनाम द्विः पृथिव्यां गवि वाचि च ।। ६ ।।
द्यावाभूम्योरेकयोक्त्याऽप्यदितो इति चक्षते ।
अहिः पदं जले मेघे द्यावाभूम्योस्तु गव्यही ।। ७ ।।

अभीके इति सङ्ग्रामे चोत्तराणि पदान्यधि ।
अभीशवः पदं रश्म्यङ्गुलिषु द्वित्वतो भुजे ।। ८ ।।
नद्यङ्गुलिष्वग्रुवस्युर्महत्यद्भुतमद्भुतः ।
पुंसि क्लीवे चोदकेऽम्ब्वर्जुनं रूपेऽर्जुनीत्युषाः ।। ९ ।।
अश्वेऽरुषोऽरूषं रूपे उषसि त्वरुषी भवेत् ।
उषस्येव त्वरूषी स्याद्धिरण्ये चोदकेऽमृतम् ।। १० ।।

आ

आपस्तु पदनाम स्यादन्तरिक्षे तथोदके ।
आशुरश्वे त्रिषु क्षिप्रे आके अन्तिकदूरयोः ।। ११ ।।

इ

वागन्नपृथिवीगोषु स्यादिला पदनाम च ।
इत्था पदं च सत्ये चेन्दुर्यज्ञोदकयोः पदम् ।। १२ ।।

ई—उ

ईं जले च पदं च स्यात्, पदनाम द्विरुर्वशी ।
दिक्षूपराः पुमान् मेघे, गव्युस्रोस्रास्तु रश्मयः ।। १३ ।।
उषाः पदं द्विरुर्वी तु द्यावाभूम्योस्तथा भुवि ।

ऋ

ऋतः पदमृतं सत्ये धने स्यादुदकेऽपि च ।। १४ ।।

ओ—क

उदकेऽपि बलेऽप्योज उदकेऽपि सुखेऽपिकम् ।
क्षद्म इत्यन्न एव स्यात् क्षद्म स्यादुदकान्नयोः ।। १५ ।।

---

[1] बलिशानः इत्यपि शब्दपाठः ।

उदकेऽपि धने क्षत्रं कशा वाच्युदके कशः ।
क्षपा जल क्षपा रात्रौ क्षितिर्भूः क्षितयो नराः ॥ १६ ॥
वज्रे पदं च कुलिशः कृत्तिर्गेहे पदं तथा ।
कृदरं तूत्तरपदं कृदरः स्याद्गृहार्थकः ॥ १७ ॥

ग—घ

बाह्वोर्गभस्ती भूम्नि स्याद्रश्मिष्वप्यङ्गुलिष्वपि ।
गम्भीरमुदके क्लीवे गंभीरो महति त्रिषु ॥ १८ ॥
गंभीरा वाचि गंभीरे द्यावाभूम्योर्गभीरवत् ।
गयो गृहधनापत्ये गातुर्भूमौ पदं तथा ॥ १९ ॥
गोत्रो मघो मही गोत्रा गौः पदं द्विरुदीरितम् ।
गौः स्तोता वाक्पृथिव्योर्गौः गौः साधारणनाम च ॥२०॥
गौरी वाचि पदं च स्याद् घर्म्मयज्ञे दिने पुमान् ।
घृर्णिदिने घृणिः क्रोधे ज्वलद्वस्तु तथा घृणिः ॥ २१ ॥

च—ज

चर्षणिः पदनाम स्याद्भूम्नि चर्षणयो जनाः ।
पुनरुक्ते जामिशब्दो भगिन्यादौ च वालिशे ॥ २२ ॥
सुखे जले जलाषं स्याज्जूर्णिः क्रोधे च सत्वरे ।
जूर्णिः पदं सत्वरे तू जूर्णीरित्यपि दृश्यते ॥ २३ ॥

त

त्वष्टा पदं त्रिरुद्दिष्टं ताक्ष्योऽश्वः पदनाम च ।
यज्ञाकाशवरिष्ठाग्निवाचकस्तुग्र इष्यते ॥ २४ ॥
तुञ्जः पदं च वज्रे च तुर्वशस्तुर्वशेऽन्तिके ।
तुर्वशास्तु मनुष्याः स्युस्तूयं क्षिप्रे तथोदके ॥ २५ ॥
तेजो जले ज्वलत्यर्थे तोयं क्षिप्रे तथोदके ।

द

अश्वनाम दधिक्रेति दधिक्राः पदनाम च ॥ २६ ॥
दभ्रं परपदं ह्रस्वे द्रविणं तु धने बले ।
दिधीतयो दीधितयोऽप्यङ्गुलिष्वपि रश्मिषु ॥ २७ ॥
द्युम्नं पदं धनेऽपि स्याद् दूतो द्विः पदमुच्यते ।

ध—न—प

अन्तरिक्षे पदं धन्व धीः प्रज्ञायां च कर्म्मणि ॥ २८ ॥
धेनुः पदं वाच्यपि स्यान्नदः स्तोतरि वा पदम् ।
नद्यः पदं च नद्यां च नभः साधारणं जले ॥ २९ ॥
वज्रान्नयोर्नमःशब्दो नरोऽश्वे च मनुष्यके ।
नराशंसः पदं द्विः स्यान्नृम्णं तु स्याद्धने बले ॥ ३० ॥
नेमः परपदं चान्ने, पयोऽन्नजलरात्रिषु ।
पयो ज्वलद्वस्त्वपि स्यात्पदं यज्ञः प्रजापतिः ॥ ३१ ॥
पविः पदं वज्रवाचोः स्यादन्नोदकयोः प्रयः ।
जले पदं पवित्रं स्यात्पाजस्त्वन्ने बलेऽपि च ॥ ३२ ॥
द्यावाभूमी पुरन्धी स्यात्पुरन्धिः पदनाम च ।
पूषा पदं पृथिव्यां च पृतना मानुषे रणे ॥ ३३ ॥
अन्तरिक्षे तु पृथिवी पदनाम च तत्त्रिधा ।
द्यावाभूमी च भूः पृथ्वी पेशो रूपहिरण्ययोः ॥ ३४ ॥

ब

अश्वे महति च ब्रध्नो ब्रह्म त्वन्ने धने जले ।
उदके चान्तरिक्षे च वर्हिः स्यात्पदनाम च ॥ ३५ ॥

भ—म—य

भगः पदं धनेऽपि स्याद्भूर्भूमौ चान्तरिक्षके ।
सुखे जले भेषजं स्यान्मन्युः क्रोधे पदं तथा ।। ३६ ।।

मेधाविषु मनुष्याः स्युर्मनुष्या मनुजेष्वपि ।
मरुद्धिरण्ये रूपे च ऋत्विक्षु मरुतः पदम् ।। ३७ ।।

महोमहदिमौ शब्दौ महत्यप्युदकेऽपि च ।
गोवाग्धरित्रीषु मही द्यावाभूमी तथा मही ।। ३८ ।।

यज्ञमेधाविनोर्मेधो मेधा तु धनमुच्यते ।
परं पदं वाक् च मेना द्विरुद्दिष्टं पदं यमः ।। ३९ ।।

यशो धनोदकान्नेषु योनिः स्यादुदके गृहे ।

र

रजः पदं रजो रात्रि रयिस्तु स्याद्धने जले ।। ४० ।।

रसो वागुदकान्नेषु रुजानास्तु पदं नदी ।
रुद्रः पदं स्तोतरि च द्युभुवौ रोदसी पदम् ।। ४१ ।।

रोहितोऽग्ने रोहितश्वाङ्गुलिष्वपि नदीष्वपि ।

व

वधो बले च वज्रे च वनं रश्मिषु चोदके ।। ४२ ।।

वयुनं पदनाम स्यात् प्रशस्यप्रज्ञयोरपि ।
वराहस्तु पदं मेघे वरुणो द्विः पदं मतम् ।। ४३ ।।

वसवो रश्मिषु पदं वसु रात्रौ धनेऽपि च ।
वाक्पदं वाक् च भाषायां मेधाव्यृत्विक्षु वाघतः ।। ४४ ।।

वाज्यश्वे समरे वाजे वाजस्त्वन्ने बलेऽपि च ।
वाशी वाचि पदं च स्याद्विधाता पण्डिते पदम् ।। ४५ ।।

विपो विदुष्वङ्गुलिषु द्विस्तु विश्वानरः पदम् ।
विष्णुर्यज्ञे द्विः पदञ्च, स्तेने वज्रे पदं वृकः ।। ४६ ।।

वृत्रो मेघे धने वृत्रं, वेनो विद्यज्ञयोः पदम् ।
व्योमान्तरिक्षेऽप्युदके व्योमा तु दिशि दिश्यते ।। ४७ ।।

श

शची प्रज्ञाकर्म्मवाक्षु शर्म्म तु स्यात्सुखे गृहे ।
मेघे तु शम्बरः पुंसि शम्बरं तूदके बले ।। ४८ ।।

शर्य्यापदं चाङ्गुलिषु श्रवस्त्वन्ने धनेऽपि च ।
शवो धने बलेऽपि स्यात् श्वात्रं तु स्याद्धने पदम् ।। ४९ ।।

शिप्रे द्विः पदनाम स्यात्, शिल्पं रूपे च कर्म्मणि ।
शूषं बले सुखेऽपि स्यात् श्येनासोऽश्वे पदं त्वपि ।। ५० ।।

स—ह

सद्मोदके सद्म गृहे सद्म स्यात्समरेऽपि च ।
पदं तु सप्त ऋषयो रश्मिष्वपि तथोच्यते ।। ५१ ।।

अन्तरिक्षे समुद्रः स्यात्समुद्रः पदनाम च ।
सरो वाच्युदकेऽप्येवं पदं वाक् च सरस्वती ।। ५२ ।।

सलिलं बहु नाम स्यात्सलिलं जलनाम च ।
स्वः साधारणनाम स्यात्तथा स्वरुदकेऽपि च ।। ५३ ।।

यज्ञाहः सूर्य्यदेवानां वाचकं स्वः पदं मतम् ।
सविता पदमुक्तं द्विः स्वधा त्वन्ने तथोदके ।। ५४ ।।

स्वधे द्यावापृथिव्यौ स्तः स्वसराणि गृहेऽहनि ।
स्वसराणि पदं च स्यात्ससमन्ने पदं तथा ।। ५५ ।।

सहो बले जलेऽपि स्यात्साध्या रश्मिषु वा पदम् ।
सिनमन्ने पदं च स्यात्सुपर्णः पदमुच्चते ।। ५६ ।।

सुपर्णा वाक् सुपर्णाः स्युरश्वेष्वपि च रश्मिषु ।
सूर्या वाचि पदं क्रोधज्वलतोस्तु हरःपदम् ॥ ५७ ॥

प्राहुः परे हरःशब्दं ज्योतिर्लोकोदकेषु च ।
हरितोऽङ्गुलयो नद्यो दिशश्चादित्यवाहनम् ॥ ५८ ॥

हविःपदं जलेऽपि स्याद् हेमोदकहिरण्ययोः ।
हिरण्योदकयोर्हेमा होत्रा यज्ञे च वाचि च ॥ ५९ ॥

अनेकार्था इमे शब्दाः पूर्वमत्र प्रदर्शिताः ।
प्रागुक्ता एव नानार्थे दर्श्यन्ते केऽपि धातवः ॥ ६० ॥

अर्द्दति स्याद्वधे गत्यां व्याप्तिगत्योस्तु इन्वति ।
इरज्यतीति धातुस्तु ऐश्वर्यपरिचर्य्ययोः ॥ १ ॥

ऋच्छिः परीचारगत्योर्वधगत्योर्ऋणत्ति च ।
जरते पदमर्चायां जिन्वतीति पदं गतौ ॥ २ ॥

दभ्नोत्यपि वधेगत्यां धमत्यर्चाविधे गतौ ।
ध्रुवत्यपि वधे गत्यां व्याप्तिगत्योस्तु नक्षति ॥ ३ ॥

भन्दते भन्दतीति द्वौ ज्वलने पूजने क्रमात् ।
मन्दते ज्वलनेऽर्चायां मन्यते कान्तिपूजयोः ॥ ४ ॥

मर्द्दत्यापि वधे गत्यां मिनात्यपि वधे गतौ ।
मिनोत्यपि वधे गत्यां रथर्य्यति गतौ पदम् ॥ ५ ॥

राति दाने गतौ च स्याद्राजत्यैश्वर्यपूजयोः ।
वनुष्यति पदं क्रोधे वेति गत्यत्तिकान्तिषु ॥ ६ ॥

वेनत्यर्चागतीच्छासु परिचारे गतौ शविः ।
सपत्यर्चापरीचारे स्वपित्यर्चननिद्रयोः ॥ ७ ॥

स्वरतीत्यर्चने गत्यां कान्तिगत्योस्तु हर्य्यति ।
ह्वयत्यर्चाभोजनयोरित्यनेकार्थधातवः ॥ ८ ॥

यज्ञवेदार्थयाथार्थ्यविज्ञानाय कृतश्रमः ।
मधुसूदनशर्म्मेमां मणिमालां विनिर्म्ममे ॥ ९ ॥

सरस्वत्याः करे सेयं निघण्टुमणिमालिका ।
समर्प्यते मैथिलश्रीमधुसूदनशर्म्मणा ॥ १० ॥

इत्यनेकार्थवर्गः ॥ ९ ॥

बृहद्देवतावर्गः ॥ १० ॥

अथ केचित्प्रदर्श्यन्ते शौनकोक्ता यथायथम् ।
देवताविषयश्लोका दैवतज्ञानसिद्धये ॥ १ ॥

भवद्भूतं भविष्यच्च जङ्गमं स्थावरञ्च यत् ।
अस्यैके सूर्य्यमेवैकं प्रभवं प्रलयं विदुः ॥ २ ॥

असतश्च सतश्चैव योनिरेषा प्रजापतिः ।
यदक्षरञ्च वाच्यञ्च यच्चैतद् ब्रह्म शाश्वतम् ॥ ३ ॥

कृत्वैष हि त्रिधात्मानमेषु लोकेषु तिष्ठति ।
देवान् यथायथं सर्वान् निवेश्य स्वेषु रश्मिषु ॥ ४ ॥

अग्निरस्मिन्नथेन्द्रस्तु मध्यतो वायुरेव च ।
सूर्य्यो दिवीति विज्ञेयास्तिस्र एवेह देवताः ॥ ५ ॥

अर्चिभिः केश्ययं त्वग्निर्विद्युद्भिश्चैव मध्यमः ।
असौ तु रश्मिभिः केशी तेनैनानाह केशिनः ॥ ६ ॥

न चैवैषां प्रसूतिर्वा विभूतिः स्थानजन्म वा ।
निर्वक्तुं शक्यमेतैर्हि कृत्स्नं व्याप्तमिदं जगत् ॥ ७ ॥

एतासामेव माहात्म्यान्नामान्यत्वं विधीयते ।
नत्तत्स्थानविभागेव तत्र तत्रोपलक्षयेत् ।। ८ ।।

तासामियं विभूतिर्हि नामानि यदनेकशः ।
आहुस्तासां तु मन्त्रेषु कवयोऽन्योन्ययोनिताम् ।। ९ ।।

यथास्थानं प्रदिष्टास्ता नामान्यत्वेन देवताः ।
तद्भक्तास्तत्प्रधानाश्च केचिदेवं वदन्ति ताः ।। १० ।।

एतद्भूतेषु लोकेषु अग्निभूतं स्थितं त्रिधा ।
त्रिस्थानं चैनमर्चन्ति होत्रायां वृक्तबर्हिषः ।। ११ ।।

इहेष पवमानोऽग्निर्मध्यमोऽग्निस्तु पावकः ।
अमुष्मिन्नेष विप्रैस्तु लोकेऽग्निः शुचिरुच्यते ।। १२ ।।

इहाग्निभूतस्त्वृषिभिर्लोके स्तुतिभिरीडितः ।
जातवेदाः स्तुतो मध्ये स्तुतो वैश्वानरो दिवि ।। १३ ।।

वैश्वानरं श्रिता ह्यग्निरग्निं वैश्वानरः श्रितः ।
अनयोर्जातवेदाश्च तथैतौ जातवेदसि ।। १४ ।।

सालोक्याच्चैकजातत्वाद् व्याप्तिमत्वात्तु तेजसः ।
यस्य यस्येह देवत्वं दृश्यते ते पृथक् स्तुताः ।। १५ ।।

सत्वान्यमूर्त्तान्यपि च देवतावन्महर्षयः ।
तुष्टुवुः प्रशशंसुश्च तासु तासु स्तुतिष्विह ।। १६ ।।

पृथक् पुरस्ताद् ये तूक्ता लोकादिपतयस्त्रयः ।
तेषामात्मैव तत्सर्वं यद्यद्भक्तिः प्रकीर्त्यते ।। १७ ।।

तेजस्त्वेवायुधं प्राहुर्वाहनञ्चैव तस्य तत् ।
(यदन्यच्चोपकरणं तत्सर्वं तत्र कल्पितम्) ।। १८ ।।

स्थानं नामानि भक्तीश्च देवतायाः स्तुतौ स्तुतौ ।
सम्पादयन्नुपेक्षेत यां काञ्चिदिह सम्पदम् ।। १९ ।।

अग्निभक्तिस्तुतान् सर्वानग्नावेव समापयेत् ।
यदिन्द्रभक्ति तच्चेन्द्रे सूर्य्ये सूर्य्यानुगञ्च यत् ।। २० ।।

अग्निभक्तयः

तत्र यत्पृथिवीस्थानं पार्थिवञ्चाग्निमाश्रितम् ।
तत्सर्वमानुपूर्व्येण कथ्यमानं निबोधत ।। २१ ।।

जातवेदाः श्रितो ह्यग्निमग्निं वैश्वानरः श्रितः ।
द्रविणोदास्तथेध्मश्च[1] श्रितश्चाग्नितनूनपात्[2] ।। २२ ।।

नराशंसः[3] श्रितश्चैनमेनमेवाश्रितस्त्विलः[4] ।
[5]बर्हिद्वारश्च[6] देव्योऽग्निमेनमेव तु संश्रिताः ।। २३ ।।

नक्तोषासा[7] च देव्यो च होतारा[8]वेतदाश्रयौ ।
देव्यस्तिस्रः[9] श्रिताश्चैनं त्वष्टा[10] चैवैतदाश्रयः ।। २४ ।।

श्रितो वनस्पतिश्चैनं[11] स्वाहाकृतय[12] आप्रियः ।
दैव्यौ दिव्यप्रसूतौ द्वावग्नी मध्यमपार्थिवौ ।। २५ ।।

यदि वा वरुणादित्यावग्न्यादित्यौ प्रचेतसौ ।
तथाग्नीवरुणौ वापि केचिदिच्छन्ति सूरयः ।। २६ ।।

इडा सरस्वती देवी भारती च यथाक्रमम् ।
पृथिव्यामन्तरिक्षे च दिवि देव्य इमा मताः ।। २७ ।।

तनूनपातमाप्रीषु पठन्ति न पठन्ति च ।

*

अश्वश्च शकुनिश्चैव मण्डूकाश्चैतदाश्रयाः ।। २८ ।।

ग्रावाणश्चैवमक्षाश्च नराशंसस्तथा रथः ।
दुन्दुभिश्चेषुधिश्चैतं हस्तघ्नोऽभीषवो धनुः ।। २९ ।।

ज्या चैतदाश्रितेषुश्च श्रिता अश्वाजनी च या ।
वृषभो द्रुघणश्चैनमेनं पितुरुलूखलम् ॥ ३० ॥
नद्यश्चैवैनमापश्च सर्वाश्चौषधयस्तथा ।
रात्र्यप्वाग्नाय्यरण्यानी श्रद्धेडा पृथिवी तथा ॥ ३१ ॥

*

भजेते चैनमेवार्त्नी द्वन्द्वभूते च रोदसी ।
मुसलोलूखले चैनं हविर्द्धाने च ये स्मृते ॥ ३२ ॥
जोष्ट्री चोर्जाहुती चैनं शुतुद्रया च विपाट् सह ।
यौ च देवौ शुनासीरौ तौ चाग्नी चैतदाश्रयौ ॥ ३३ ॥
शौनकस्य शुनासीरौ वायुसूर्य्यावुदाहृतौ ।
शाकपूणेरिन्द्रसूर्य्याविन्द्रो यास्कस्य केवलम् ॥ ३४ ॥

*

लोकोऽयं, यच्च वै प्रातःसवनं क्रियते मखे, ।
अनुष्टुप् च त्रिवृत्स्तोमो, वसन्तशरदावृतू ॥ ३५ ॥
गायत्री, चैकविंशश्च, यच्च साम रथन्तरम् ।
साध्याः, साम च वैराज, माप्त्याश्च वसुभिः सह ॥ ३६ ॥
इन्द्रेण च मरुद्भिश्च सोमेन वरुणेन च ।
पर्जन्येनर्तुभिश्चैव विष्णुना चास्य संस्तवः ॥ ३७ ॥
अस्यैवाग्नेस्तु पूष्णा च साम्राज्यं वरुणेन च ।
देवतावाहनञ्चैव हविषां वहनं तथा ॥ ३८ ॥
कर्म दृष्टया च यत्किञ्चित्सम्वद्धं विषये स्थितम् ।
अग्नेरेव तु तत्सर्वं कर्मेति परिभाष्यते ।
इत्युक्तोऽयं गणः सर्वःपृथिव्यग्न्याश्रयो महान् ॥ ३९ ॥

इन्द्रभक्तय

यश्चेन्द्रो मध्यमस्थानो गणः सौऽयमतः परः ।
विमानानि च दिव्यानि गन्धर्वाप्सरसां गणाः ॥ ४० ॥
इन्द्राश्रयस्तु पर्जन्यो रुद्रो वायुर्बृहस्पतिः ।
वरुणः कश्च मृत्युश्च देवश्च ब्रह्मणस्पतिः ॥ ४१ ॥
मन्युश्च विश्वकर्मा च मित्रः क्षेत्रपतिर्यमः ।
तार्क्ष्यो वास्तोष्पतिश्चैव सरस्वांश्चैवमत्र ह ॥ ४२ ॥
अपां नपाद् दधिक्राश्च सुपर्णोऽथ पुरूरवाः ।
ऋतोऽसुनीतिर्वेनश्च तस्यै तस्याश्रयेऽदितिः* ॥ ४३ ॥
त्वष्टा च सविता चैव वातो वाचस्पतिस्तथा ।
धाता प्रजापतिश्चैव अथर्वाणश्च ये स्मृताः ॥ ४४ ॥
श्येनश्चैवैवमग्निश्च तथेला चैव या स्मृता ।
विधातेन्दुरहिर्बुध्न्यः सोमोऽहिरथ चन्द्रमाः ॥ ४५ ॥
विश्वानरश्च वै दैवो रुद्राणां[1] संस्तुतो गणः ।
मरुतोऽङ्गिरसश्चैव पितरश्चर्भुभिः[2] सह ॥ ४६ ॥
राकावाक् सरमाप्त्याश्च भृगवोऽध्न्या सरस्वती ।
यम्युर्वशी सिनीवाली पथ्यास्वस्तिरुषाः कुहूः ॥ ४७ ॥
पृथिव्यनुमतिर्धेनुः सीता लाक्षा[3] तथैव गौः ।
गौरी च रोदसी चैव इन्द्राण्याश्चैष वै पतिः ॥ ४८ ॥

*

---

* तथेन्दुश्च स्त्रियोऽदितिरित्यपि पाठः ।

१. ऋभूणामिति पाठान्तरम् । २. श्चर्तुभिरिति पाठान्तरम् ।

३. सीतेलाख्येति पाठान्तरम् ।

छन्दस्त्रिष्टुप् च पङ्क्तिश्च लोकानां मध्यमश्च यः ।
एतेष्वेवाश्रये विद्यात्सवनं मध्यमञ्च यत् ।। ४९ ।।
ऋतू च ग्रीष्महेमन्तौ यच्च सामोच्यते बृहत् ।
शक्वरीषु च यद्गीतं नाम्ना तत्साम शाक्वरम् ।। ५० ।।
आह चास्यैव तौ स्तोमावाश्रयौ शाकटायनः ।
यश्च पञ्चदशो नाम्ना संख्यया त्रिणवश्च यः ।। ५१ ।।
संस्तुतश्चैष पूष्णा च विष्णुना वरुणेन च ।
सोमवाय्वग्निकुत्सैश्च ब्रह्मणस्पतिनैव च ।। ५२ ।।
स बृहस्पतिना चैव नाम्ना यश्चापि पर्वतः ।
मित्रश्च स्तूयते देवो वरुणेन सहासकृत् ।। ५३ ।।
रुद्रेण सोमः पूष्णा च पुनः पूषा च वायुना ।
वातेनैव तु पर्जन्यो लक्ष्यते वै क्वचित्क्वचित् ।। ५४ ।।
रसादानं तु कर्मास्य वृत्रस्य च निवर्हणम् ।
स्तुतेः प्रभुत्वं सर्वस्य बलस्य निखिला कृतिः ।। ५५ ।।
इत्यैन्द्रो मध्यमस्थानो गणः सम्यगुदाहृतः ।
यः परस्तु गणः सौर्य्यो द्युस्थानस्तं निबोधत ।। ५६ ।।

सूर्य्यभक्तय

तस्य मुख्यतमौ देवावश्विनौ सूर्य्यमाश्रितौ ।
वृषाकपायी सूर्य्योषाः पत्न्यस्तिस्रो रवेरिमाः ।। ५७ ।।
अमुतोऽर्वाङ् निवर्तन्ते प्रतिलोमास्तदाश्रयाः ।
पुरोदयात्तामुषसं सूर्य्यां मध्यन्दिने स्थिते ।। ५८ ।।
वृषाकपायीं सूर्य्यास्तकाल आहुः स्तुतिष्वृचि* ।
तस्याश्रये सरण्यूश्च भगः पूषा वृषाकपिः ।। ५९ ।।

* सूर्य्यस्य तामेबाहुस्तु निम्रु चि—इत्यपि पाठः ।

अपो वैश्वानरो विष्णुर्वरुणौश्चकपादजः ।
पृथिवी च समुद्रांश्च देवाः सप्तर्षयश्च ये ।। ६० ।।
आदित्याः केशिसाध्याश्च सविता वसुभिर्मनुः[1] ।
दध्यङ्ङथर्वा विश्वे च वाजिनो देवयोषितः ।।६१।।

*

असौ लोक, स्तृतीयञ्च सवनं, साम रैवतम् ।
वैरूपञ्चैव, वर्षाश्च शिशिरोऽथ ऋतुस्तथा ।।६२।।
त्रयस्त्रिंशश्च यः स्तोमः क्लृप्त्या सप्तदशश्च यः ।
छन्दश्च जगतीनाम्ना तथातिच्छन्दसश्च याः ।।६३।।
पौरुषं चाहुरस्यैतत्सर्वमेव तु पौरुषम् ।
एतस्यैव तु विज्ञेया देवाः संस्तविकास्त्रयः ।।६४।।
चन्द्रमाश्चैव वायुश्च यञ्च संवत्सरं विदुः ।
हरणं तु रसस्यैतत्कर्मणाऽमुत्र रश्मिभिः ।। ६५ ।।
येन नातिविजानन्ति सर्वभूतानि चक्षुषा[2] ।
इत्थमग्नीन्द्रसूर्य्याणां भक्तयः समुदाहृताः ।। ६६ ।।
अग्नीन्द्रमरुतस्त्वष्टाऽश्विनौ देवावृतावृधौ ।
द्रविणोदा इमाः सप्त भवन्ति ऋतुदेवताः ।।६७।।
यो वायुरिन्द्रवायू यौ यौ मित्रावरुणावपि ।
यावश्विनौ य इन्द्रो ये विश्वेदेवाः सरस्वती ।। ६८ ।।
प्रातः सवनिके शस्त्रे प्रउगे सप्त देवताः ।
भवन्ति ताः कमेणैता अनुबन्धान्निरूपिताः ।। ६९ ।।

१. आदित्यपूगः साध्याश्च सार्द्धञ्च वसुभिर्मनुरिति पाठान्तरम् ।
२. येन नातिविजानन्ति सूर्य्यभूतानि चक्षुषा ।
यानीमानि च पश्यन्ति सर्वभूतानि तेजसा इति । पाठान्तरे

अग्नीन्द्रसूर्य्याणां नामभेदाः

अग्नेस्तु पञ्च नामानि यानि सूर्य्यस्य वा नव ।
षड्विंशतिस्तथेन्द्रस्य क्रमाद्वक्ष्यामि तान्यपि ॥ ७० ॥

अग्निनामानि पञ्च

१. अग्निः—सर्वे

जातो यदग्रे भूतानामग्रणीरध्वरे च यत् ।
अङ्गं संनयते तस्मात्स्तुताऽग्निरिति सूरिभिः ॥७१ ॥

२. द्रविणोदाः—कुत्सः

धनं बलं वा द्रविणं प्रायच्छद्येन कर्म्मणा ।
तत्कर्म दृट्ष्वा कुत्सस्तु प्राहैनं द्रविणोदसम् ॥ ७२ ॥

३. तनूनपात्

अयं तनूनपादग्निः, असौ हि तननात्तनुः ।
ततस्तु मध्यमे जज्ञे स्थानेऽयं मध्यमात्ततः ॥ ७३ ॥
अनन्तरां प्रजामाहुर्नपादिति क्रपण्यवः ।
नप्ताचामुष्य चैवायमग्निस्तेन तनूनपात् ॥ ७४ ॥

४. नराशंसः

पृथक्त्वेन समत्वेन यज्ञे यच्छस्यते नृभिः ।
स्तुवन्त्याप्रीषु तेनेमं नराशंसं तु कारवः ॥ ७५ ॥

५. पवमानः-वैखानसाः

पुनाति यदिदं विश्वमेषोऽग्निः पार्थिवोऽप्सु सन् ।
वैखानसर्षिभिस्तेन पवमान इति स्तुतः ॥ ७६ ॥

इन्द्रनामानि षड्विंशतिः

१. जातवेदाः

भूतानि वेद यज्जातो, जातैर्यद्वाऽथ विद्यते ।
यद्वैष जालविद्योऽभूद्, वित्तं जातोऽधिवेत्ति वा ॥७७॥
विद्यते सर्वभूतेषु, यद्वा जातः पुनः पुनः ।
तनैष मध्यभागिन्द्रो जातवेदा इति स्तुतः ॥७८॥

२. वायुः

अणिष्ठ एष यत्तु त्रीन् व्याप्यैको व्योम्नि तिष्ठति ।
तेनैनमृषयोऽर्वन्तः कर्मणा वायुमब्रुवन् ॥७९॥

३. वरुणः

त्रीणीमान्यावृणोत्येको मूर्त्तेन तु रसेन यत् ।
तयैनं वरुणं शक्त्या स्तुतिष्वाहुः क्रपण्यवः ॥८०॥

४. रुद्रः

अरोदीदन्तरिक्षे यद्विद्युद्वृष्टिं ददन्नृणाम् ।
चतुर्भिर्ऋषिभिस्तेन रुद्र इत्यभिसंस्तुतः ॥८१॥

५. इन्द्रः

चतुर्विधानां भूतानां प्राणो भूत्वा व्यवस्थितः ।
ईष्टे चैवास्य सर्वस्य तेनेन्द्र इति स स्मृतः ॥८२॥
इरां दृणाति यत्काले मरुद्भिः सहितोऽम्बरे ।
रवेण महता युक्तस्तेनेन्द्रमृषयोऽब्रुवन् ॥८३॥
रसान् रश्मिभिरादाय वायुनायं गतः सह ।
वर्षत्येष च यल्लोके तेनेन्द्र इति स स्मृतः (सूर्य्यः)[1] ॥८४॥

---

१. इन्द्रस्य पर्यायवाची

६. पर्जन्यः—अत्रिः, औवंशः

यदिमां प्रार्जयत्येको रसेनाम्बरजेन गाम् ।
कालेऽत्रिरौर्वशश्चर्षी तेन पर्जन्याप्राहतुः ॥८५॥

तपर्यत्येष यल्लोकान् जन्यो जनहितं च यत् ।
परो जेता जनयिता यद्वाऽऽत्रेयस्ततो जगौ ॥८६॥

७. बृहस्पतिः

बृहन्तौ पाति यल्लोकावेष द्वौ मध्यमोत्तमौ ।
बृहता कर्मणा तेन बृहस्पतिरितीडितः ॥८७॥

८. ब्रह्मणस्पतिः-शौनहोत्रः

ब्रह्म वाक् ब्रह्म सत्यञ्च ब्रह्म सर्वमिदं जगत् ।
पातारं ब्रह्मणस्तेन शौनहोत्रः स्तुवञ्जगौ ॥८८॥

९. वाचस्पतिः

वाचा वेदा ह्यधीयन्ते वाचा छन्दांसि तत्र ह ।
अथो वाक् सर्वमेवेदं तेन वाचस्पतिः स्तुतः ॥८९॥

१०. वास्तोष्पतिः-और्वशः

वास्तु प्रयच्छँल्लोकस्य मध्यमस्य तु पाति यत् ।
तेन वास्तोष्पतिं प्राह चतुर्भिरिममौर्वशः ॥९०॥

११. क्षेत्रस्य पतिः—वामदेवः

क्षेमं[1] क्षितिभ्यो विदधद्यदृतुष्वविशत् क्षितौ[2] ।
तेनैनमाह क्षेत्रस्य वामदेवःस्तुवन् पतिम् ॥९१॥

१. अन्नमिति पाठान्तरम् ।
२. ददाति यदिमं क्षेत्रे त्वृतावम्बरजं पुनरित्यपि पाठः

१२. ऋतम्

मनसेमं तु यं दृश्यं मध्यमं लोकमाश्रितम् ।
शंसत् सत्येन सत्ये वै स एष स्तुतवानृतम् ॥९२॥

१३. ऋतस्य श्लोकः

रवेणान्नरसैः क्षिप्तेः स्थितो व्योम्न्येष मायया ।
ऋतस्य श्लोक इत्येष पुनश्चैनं ततोऽब्रवीत् ॥९३॥

१४. अदितिः-गौतमः

न कुतश्चैष यद्दीनो वृत्वा तिष्ठति मध्यमः ।
राहूगण ऋषिस्तेन प्राहैनं गौतमोऽदितिम् ॥९४॥

१५. कम्

प्रजाभ्यस्त्वेष यच्छक्त एष वीरः शिवः सुखः ।[1]
हिरण्यगर्भस्तेनैनमृषिरर्चन्नुवाचकम् ॥९५॥

१६. यमः

इह प्रजाः प्रयच्छन् स संगृहीता प्रयाति च ।
ऋषिर्विवस्वतः पुत्रं तेनाहैनं यमो यमम् ॥९६॥

१७. मित्रः-विश्वामित्रः

मित्रीकृत्य जना विश्वे यदिमं पर्य्युपासते ।
मित्र इत्याह तेनैनं विश्वामित्रः स्तुवन् स्वयम् ॥९७॥

१८. विश्वकर्म्मा

निदाघमासातिगमे यदृतेनावति क्षितिम् ।
विश्वस्य जनयन कर्म विश्वकर्मैप तेन सः ॥९८॥

१. प्रजाभ्यस्त्वेष यच्छर्म कमिच्छन् मनसा सुखम् ॥ —बृहद्देवता २-४७

१९. सरस्वान्

सरांसि घृतवन्त्यस्य सन्ति लोकेषु यत् त्रिषु ।
सरस्वन्तमिति प्राह वाचं प्राहुः सरस्वतीम् ॥९९॥

२०. वेनः-भार्गवः

प्राणभूतस्तु भूतेषु यद्वितत्येह तिष्ठति※ ।
तेनैनं वेनमाहर्षिर्वेनो नामेह भार्गवः ॥१००॥

२१. मन्यु

ससृजे मासि मास्येनमभिमत्य ततो ब्रजन् ।
तेनैनं मन्युरित्याह मन्युरेव तु तापसः ॥१०१॥

२२. असुनीतिः-श्रुतबन्धुः

यदन्तकाले भूतानामेक एव नयत्यसून् ।
तेनासुनीतिरुक्तोऽयं स्तुवता श्रुतबन्धुना ॥१०२॥

२३. अपां नप्ता—गृत्समदः

निदाघमासातिगमे जन्म मध्ये भवत्यपाम् ।
नप्तारमाह तेनैनमृषिर्गृत्समदस्त्वपाम् ॥१०३॥

२४. दधिक्राः

अपामम्बरगर्भौघमादधत्सोऽष्टमासिकम् ।
यत्क्रन्दत्यसकृन्मध्ये दधिक्रास्तेन कथ्यते ॥१०४॥

२५. धाता

मासेन संभृतं गर्भं नवमेनाष्टमासिकम् ।
स्वयं क्रन्दन् दधात्युर्व्यां धातेत्यृग्भिः स गीयते ।१०५।

※ यद्वेनत्येषु तिष्ठतीति पाठान्तरम् ।

२६. तार्क्ष्यः

स्तीर्णेऽन्तरिक्षे क्षियति यद्वा तूर्णं क्षरत्यसौ ।
अरिष्टनेमिस्तार्क्ष्यर्षिस्तार्क्ष्यं तेनैनमुक्तवान् ॥१०६॥

सूर्य्यनामानि नव

१. पुरूरवाः

रुवन् व्योम्न्युदयं याति कृन्तन् भाद्विसृजन्नपः ।
पुरूरवसमाहैनं स्ववाक्येनोरुवासिनी ॥१०७॥

२. सविता

संवर्तयँस्तमः सूर्य्यादुषसञ्च प्रवर्तयन् ।
दिवा चरन् प्रसौत्येकः सविता तेन कर्म्मणा ॥१०८॥

३. भगः—वसिष्ठः

उदितोऽभासयल्लोकानिमांश्चैष स्वरश्मिभिः ।
स्वयं वसिष्ठस्तेनैनमृषिराह स्तुवन् भगम् ॥१०९॥

४. पूषा

उद्यन् जगत्पोषयति प्रणुदन् रश्मिभिस्तमः ।
तेनैनमस्तौत्पूषेति भरद्वाजस्तु पञ्चभिः ॥११०॥

५. विश्वानरः

संप्रत्येकैकशस्त्वेनं यन्मन्यन्ते पृथङ्नराः ।
विश्वे विश्वानरस्तेन कर्मणा स्तुतिषु स्तुतः ॥१११॥

६. मृत्युः

यत्तु प्राच्यावयन्नेति घोषेण महता मृतम् (मृधे) ।
तेन मृत्युमिमं सत्रं स्तौति मृत्युरिति स्वयम् ॥११२॥

नाम्ना संकुसुको नाम यमपुत्रो जघन्यजः ।

७. वृषाकपिः

वृषैष कपिलो भूत्वा यन्नाकमधिरोहति ।।११३।।

वृषाकपिरसौ तेन विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।
रश्मिभिः कम्पयन्नेति वृषा वर्षिष्ठ एव सः ।।११४।।

सायाह्नकाले भूतानि स्वापयन्नस्तमेति यत् ।
वृषाकपिरितो वा स्यादिति मन्त्रेषु दृश्यते ।।११५।।

८. केशी

कृत्वा सायं पृथग्याति भूतेभ्यस्तमसोऽत्यये ।
प्रकाशं किरणैः कुर्वन् तेनैनं केशिनं विदुः ।।११६।।

९. त्रिविक्रमः—मेधातिथिः

त्रीणि भान्ति रजांस्यस्य यत्पदानि तु तेजसा ।
तेन मेधातिथिः प्राह विष्णुमेनं त्रिविक्रमम् ।।११७।।

विष्णुः

विष्णातेर्विशतेर्वा स्याद्वेवेष्टेर्व्याप्तिकर्म्मणः ।
विष्णुर्निरुच्यते सूर्यः सर्वः सर्वान्तरश्च सः ।।११८।।

पञ्च षड्विंशतिस्तद्वन्नव नामानि यानि च ।
इत्थमग्नीन्द्रसूर्य्याणां तान्युक्तानि यथाक्रमम् ।।११९।।

दैवतोपपरीक्षेयं शौनकोक्ता प्रदर्शिता ।
प्रमाणं तस्य याथार्थ्ये भगवान् वेदपूरुषः ।।१२०।।

।। इति बृहद्देवतावर्गः १० ।।

वर्गा इमे दैवदिव्यनरधर्म्मक्रियाव्ययैः ।
नैगमद्वयनानार्थैर्बृहद्देवतयापि च ।।१।।

एतैस्तु दशभिर्वर्गैर्निघण्टूक्ता यथायथम् ।
गृहीता श्लोकबन्धेन शब्दाः प्रायेण वैदिकाः ।।२।।

इतीत्थं माधुसूदन्या सरस्वत्या प्रसन्नया ।
समीक्षाचक्रवर्तिन्या मणिमाला प्रवर्तिता ।।३।।

सन्ति यद्यपि भूयांसः शब्दा अन्येऽपि वैदिकाः ।
तथापीह निघण्टूक्ताः सर्वे तावत्प्रदर्शिताः ।।४।।

तेन मे भगवान् वेदपुरुषः परमेश्वरः ।
प्रसीदतु सदेत्येवमाशासे मधुसूदनः ।।५।।

मिथिलापश्चिमभागे श्री क्षेत्रस्यातिसन्निधौ पुण्ये ।
यो गाढासंस्थानेऽलभत श्रीवैद्यनाथतो जन्म ।। ६ ।।

भारतपश्चिमभागे पुष्करतीर्थातिसन्निधौ पुण्ये ।
जयपुरराजद्वारेऽलभत महीपालतोऽभ्यर्हाम् ।। ७ ।।

वयसः पश्चिमभागे वेदमहातीर्थसन्निधौ पुण्ये ।
कृतधीः श्रीमधुसूदनशर्म्मा सोऽकृत सरस्वतीमालाम् ।। ८ ।।

मालापश्चिमभागे विद्यातीर्थातिसन्निधौ पुण्ये ।
मनसो योगं कुर्वन् सुखतः सर्वं लभेत वेदार्थम् ।। ९ ।।

।। इति सरस्वतीमणिमालाख्यो वैदिकशब्दकोशः ।।

॥ ओ३म् ॥

अकारादि वर्णानुक्रमेणानुक्रमणिका

	पृष्ठ	श्लोक		पृष्ठ	श्लोक
अंसत्रम्	२७	६०	अघशंसः	९	७
अंहुरः	३१	१०१	अघ्न्या	३	२५
अकूपारः	३६	१	अघ्न्या	१३	३७
अक्तुः	५	१५	अङ्गिरसः	३	२४
अक्रः	३०	९०	अचक्रे	१७	२१
अक्षरम्	६	२४	अचक्ष्म	१६	२०
अक्षरम्	१२	२१	अच्छ	२७	६३
अक्षः	२९	१३	अजएकपा	३	२७
अक्षाः	२५	३२	अजगन्	१५	९
अक्षितम्	६	२१	अजाः	७	३४
अगन्	१५	९	अजिरम्	१४	४४
अग्नायी	२	१४	अजिराः	७	२८
अग्निः	१	५	अजीगः	३१	११२
अग्निः	४	३१	अज्म	१३	३३
अग्रिया	२९	८१	अज्म	१४	४०
अग्रुवः	७	२७	अज्राः	१४	४५
अग्रुवः	११	१३	अण्व्यः	११	१३

	पृष्ठ	श्लोक
अतति	१५	२
अत्यः	७	३१
अथर्यः	११	१३
अथर्यवः	२७	६५
अथर्युम्	२७	६४
अथर्वाणः	३	२४
अदितिः	४	४
अदितिः	१२	२१
अदितिः	१३	३७
अदितिः	२४	२०
अदितिः	३	२५
अदिती	४	१
अद्धा	११	१७
अद्धातयः	८	३
अद्‌भुतम्	९	१
अद्‌मसत्	२३	१२
अद्रिः	६	१७
अध्रिगुः	२८	६६
अध्वरः	११	१६
प्रध्वरम्	५	७
अध्वा	५	८
अनभिशस्तः	१०	९
अनर्वा	३२	११९
अनर्शरातिः	३२	११३

	पृष्ठ	श्लोक
अनवः	८	२
अनवद्यः	१०	९
अनवब्रवः	३२	११०
अनवायम्	३१	१०५
अनिति	१५	५
अनिन्द्यः	१०	९
अनुमतिः	३	२३
अनुष्टुप्	१२	२१
अनेद्यः	१०	९
अनेमा	१०	९
अन्तमम्	९	५
अन्तरिक्षम्	५	७
अन्धः	२५	३०
अन्धः	२०	७
अन्नम्	६	२२
अपः	६	२१
अपः	११	१५
अपत्यम्	९	८
अपान्नपात्	३	२२
अपारे	४	३
अपीच्यम्	१०	८
आपः	२	१४
अप्सः	१०	१०
अप्नवाना	१०	१२

	पृष्ठ	श्लोक
अप्नः	९	८
अप्नः	१०	१०
अप्नः	११	१५
अप्नः	३६	२
अप्रतिष्कुतः	३०	९२
अप्रायुवः	२४	२३
अणवा	३०	१००
अप्सः	१०	१०
अभि	१८	१
अभिख्या	१२	२२
अभिधेतन	३१	१११
अभीके	१३	३४
अभित्वे	३५	२
अभीशवः	११	१४
अभीषु	२	१५
अभीषवः	५	१०
अभीशू	१०	११
अभ्यर्द्धयज्वा	२९	८४
अभ्यर्ष	१६	१२
अभ्रम्	६	१७
अभ्वः	९	२
अभ्वम्	६	२१
अमतिः	१०	१०
अमतिः	३०	९४
अमत्रः	३२	११५

	पृष्ठ	श्लोक
अमवान्	३०	१००
अमा	१४	३९
अमिन	२९	८८
अमीवा	३०	९९
अमूरः	२९	८८
अमृतम्	४	५
अमृतम्	६	२३
अम्भः	६	२६
अम्भसी	४	२
अम्भृणः	९	२
अम्बरम्	५	७
अम्बरम्	९	५
अम्बु	६	२१
अम्यक्	३०	९३
अयः	४	५
अयते	१४	१
अयथुः	१५	९
अयवः	८	३
अया	३५	१
अरण्यानी	२	१२
अररिन्दानि	६	२६
अरुण्यः	७	३५
अरुषति	१५	५
अरुष	७	३१

	पृष्ठ	श्लोक
अरुषम्	१०	१०
अरुषी	५	१४
अर्कः	१३	३०
अर्कः	१३	३८
अर्कः	२५	३९
अर्चति	१६	१३
अर्चिः	१४	४३
अर्जुनम्	१०	१०
अर्जुनी	५	१३
अर्णः	६	२६
अर्णाः	७	२८
अर्दति	१५	३
अर्दयति	१७	२६
अर्भकः	९	३
अर्भकम्	३५	१
अर्यः	८	६
अर्वा	७	३१
अर्वाके	९	५
अलातृणः	२८	६९
अल्पः	९	३
अवः	१३	३८
अवचाकशत्	१६	२०
अवटः	१४	४१
अवतः	१४	४१

	पृष्ठ	श्लोक
अवतिरति	१८	२७
अवति	१४	१
अवनयः	७	२७
अवनयः	११	१३
अवनि	४	४
अवमे	९	५
अविष्यन्	१७	२३
अव्यथयः	७	३३
अशत्	१५	११
अश्नः	६	१९
अश्नुते	१५	११
अश्मा	६	१७
अश्वः	२	१३
अश्वाः	७	३३
अश्विनौ	४	३२
असक्रा	३१	१०३
असश्चन्ती	२५	४१
असामि	३१	१०७
असिक्नी	५	१५
असिन्वती	२८	७४
असुः	१२	२३
असुनीतिः	३	२३
असुरः	६	१८
असूर्त्ते	३०	९०

	पृष्ठ	श्लोक
अस्कृधोयुः	२८	७४
अस्तम्	१४	३९
अस्तमीके	९	५
अस्मे	३०	९६
अस्य	२४	२४
अस्याः	२४	२४
अस्रेमाः	१०	९
अहना	५	१३
अहिः	६	१८
अहिः	६	२४
अहिः	३	२३
अही	१३	३७
अही	४	१
अह्लाय	१०	७
अह्वयाणः	२७	५७
आ	१९	१४
आ	१८	१
आकाशम्	५	७
आकीम्	१९	१३
आकृतम्	१९	१३
आके	९	५
आके	१०	६
आकेनिपः	८	३
आक्रन्दे	१३	३१

	पृष्ठ	श्लोक
आक्षाणः	१५	११
आखण्डलः	१७	२६
आगनीगन्ति	१५	९
आघृणिः	२६	४३
आङ्गूषः	२६	४५
आचके	१७	२१
आचक्ष्म	१६	२०
आजौ	१३	३२
आणौ	१३	३२
आताः	५	९
आतिरत्	१८	२८
आदित्याः	१	३
आधवः	३३	१२६
आनट्	१५	११
आनशे	१५	११
आनुषक्	३०	९८
आनुषक्	३०	८
आपः	२	१४
आपः	५	७
आपः	६	२२
आपानः	१५	११
आपान्तमन्युः	२६	४९
आप्त्याः	३	२४
आप्त्याः	४	३३

	पृष्ठ	श्लोक
आयती	१०	१२
आयवः	८	३
आयुः	१३	३८
आयुधानि	६	२४
आरितः	२६	५१
आरे	१०	६
आर्त्नी	२	१६
आर्यति	१५	२
आवयति	१७	२३
आवयाः	६	२४
आशाः	५	९
आशाः	२८	६८
आशिरम्	३०	९५
आशिषः	१६	१२
आशु	१४	४४
आशुः	७	३२
आशुशुक्षणिः	२८	६८
आष्ट	१५	११
आष्ठाः	५	९
आसात्	९	५
आहनः	२५	३२
आहनाः	२३	१६
आहवे	१३	३१
आहिकम्	१९	१३

	पृष्ठ	श्लोक
इत्थम्	२६	४२
इत्था	११	१७
इत्था	२६	४२
इ[illegible]	६	२०
इदंयुः	३३	१२५
इदा	१०	७
इदानीम्	१०	७
इध्मः	२	११
इनः	८	६
इन्दुः	३	२३
इन्दुः	६	२२
इन्दुः	११	१६
इन्द्रः	३	२१
इन्द्राणी	३	२५
इन्द्राणी	४	३१
इन्द्रियम्	२३	३५
इन्वति	१५	११
इन्वति	१५	४
इयक्षति	१५	६
इर्यति	१५	६
इरज्यति	१५	१२
इरज्यति	१६	१७
इरा	१३	३८
इरावत्यः	७	२९

	पृष्ठ	श्लोक
इलः (ईलः)	२	११
इला	४	४
इला	११	१८
इला	१३	३८
इला	१३	३७
इलीबिशः	२८	७०
इलीबिशः	३०	१००
इव	१९	१४
इषति	१५	७
इषम्	१३	३८
इषिरम्	२३	१६
इषुः	२	१५
इषुधिः	२	१५
इषुध्यति	१६	१८
इष्टिः	११	१६
इष्मिणः	२३	१७
ईक्षे	२९	८३
ईङ्खते	१५	२
ईम्	६	२२
ईम्	१९	११
ईमहे	१६	१८
ईर्त्ते	१५	६
ईर्मान्ताः	२२	५
ईषतिः	१५	३

	पृष्ठ	श्लोक
उक्थ्यः	१०	९
उक्षा	९	२
उक्षितः	९	२
उच्चैःश्रवाः	७	३१
उत्सः	१४	४१
उदकम्	६	२६
उधाः	६	१६
उपजिह्विका	३५	३
उपब्दिः	११	२०
उपमे	९	५
उपरः	६	१८
उपराः	५	९
उपलः	६	१८
उपलप्रक्षिणी	२८	७६
उपसि	३१	११०
उपाके	९	५
उराणः	३१	११०
उरु	९	४
उर्वशी	३	२५
उर्वशी	२६	४८
उर्वी	४	२
उर्वी	४	५
उर्व्यः	७	२८
उलूखलम्	२	१६

	पृष्ठ	श्लोक
उल्वम्	३१	१०३
उश्मसि	१७	२१
उशिक्	१७	२१
उशिजः	८	३
उषाः	३	२६
उषाः	३	२८
उषासानक्ता	२	११
उस्राः	१३	३७
उस्राः	५	१०
उस्रिया	१३	३७
ऊतिः	२५	३३
ऊधः	६	१६
ऊर्क्	१३	३८
ऊर्जस्वत्यः	७	३०
ऊर्जाहुती	२	१६
ऊर्दरम्	३५	२
ऊर्म्या	६	१६
ऊर्व्यः	७	२८
ऋक्	११	२०
ऋक्षाः	३५	१
ऋचीषमः	३२	११६
ऋच्छति	१५	५
ऋच्छति	१६	१७
ऋजुनीतिः	३२	११६

	पृष्ठ	श्लोक
ऋञ्जति	३२	११८
ऋणद्धि	१६	१७
ऋणोति	१५	४
ऋण्वति	१५	४
ऋतम्	६	२३
ऋतम्	११	१७
ऋतः	३	२१
ऋतस्य योनिः	७	२७
ऋतु	११	१५
ऋदूदरः	२८	७२
ऋदूपे	२८	७३
ऋधक्	२४	२८
ऋध्नोति	१६	१७
ऋबीसम्	३३	१२७
ऋभवः	३	२४
ऋभुः	४	३३
ऋभुः	८	३
ऋभुक्षाः	९	२
ऋश्यदाः	१४	४१
ऋष्वः	९	२
ऋहन्	९	३
एजति	१५	४
एतग्वाः	७	३२
एतशः	७	३२

	पृष्ठ	श्लोक
एति	१५	५
एनम्	२७	६२
एना	३५	१
एनाम्	२७	६२
एन्यः	७	२८
एरिरे	२४	२२
एहः	१२	२८
ओजः	६	२३
ओजः	१२	२५
ओण्यौ	४	१
ओदती	५	१३
ओदनः	६	१८
ओमना	२८	७६
ओमासः	२९	८७
ओषम्	१४	४४
ओषधयः	२	१४
औच्चैःश्रवसः	७	३१
कः	३	२२
ककुभः	५	९
ककुहः	९	१
कक्ष्याः	११	१३
कण्टति	१५	२
कण्वः	८	३
कति	१५	९

	पृष्ठ	श्लोक
कत्पयः	२८	७१
कणति	१५	१०
कनकम्	५	६
कपनाः	२९	७७
कबन्धम्	६	२६
कम्	७	२७
कम्	१२	२४
कम्पि	१७	२५
करण	११	१५
करन्ती	११	१५
करान्सि	११	१५
करस्नौ	१०	१२
करिक्रत्	११	१५
करुणम्	११	१५
करूलती	३२	१२३
कर्त्तः	१४	४१
कर्त्तवै	११	१५
कर्त्तोः	११	१५
कर्त्तुम्	११	१५
कर्त्वम्	११	१५
कर्वरम्	११	१५
कल्पते	१६	१५
कल्पलीकीनम्	१४	४२
कवते	१५	७

	पृष्ठ	श्लोक
कवन्धम्	६	२६
कवि:	८	३
कश:	६	२६
कशा	११	२०
कशा	२	१५
कसति	१५	७
काकुद्	११	२०
काकुदम्	२७	५९
काञ्चनम्	५	६
काट:	१४	४१
काणुका	२६	४५
कातु:	१४	४१
कानिषत्	१७	२१
कायमान:	२३	६
कारु:	८	४
कारोतर:	१४	४१
कारोतरात्		†
कालयति	१५	२
काशि:	२८	७२
काष्ठा:	५	९
कि:	२८	७४
किमीदी	२९	८८
कियेधा:	३१	१०५
किरणा:	५	१०

	पृष्ठ	श्लोक
कीकटेषु	३१	१०७
कीरि:	८	४
कीलालम्	१३	३८
कीस्तास:	८	३
कुट:	२७	६४
कुणारु:	२८	७१
कुत्स:	१२	२९
कुरव:	८	५
कुरुतन	२३	१०
कुलिश:	१२	२९
कुलिश:	३१	११२
कुल्या:	७	३०
कुवित्	९	४
कुशय:	१४	४१
कुहू:	३	२५
कूप:	१४	४१
कृण्वति	१७	२६
कृत्ति:	१४	३९
कृत्ति:	२८	६६
कृत्वी	११	१५
कृदर:	१४	३९
कृदरम्	३५	२
कृधु	९	३
कृन्तति	१७	२७

	पृष्ठ	श्लोक
कृपण्यति	१६	१५
कृपण्यु:	८	४
कृपा	२९	७७
कृपायति	१६	१५
कृपीटम्	६	२०
कृशनम्	५	६
कृशनम्	१०	१०
कृष्टि:	८	२
केत:	१२	२२
केतु:	१२	२२
केनिप:	८	३
केपय:	२७	५९
केवट:	१४	४१
केशिन:	१	८
कोश:	६	१९
कौरयाण:	२७	५४
क्रतु:	११	१५
क्रतु:	१२	२२
क्राण:	२३	१७
क्रिवि:	१४	४१
क्रिविर्दती	३२	११४
क्षत्रम्	६	२२
क्षत्रम्	१३	३५
क्षद्म	६	२६

	पृष्ठ	श्लोक
क्षद्म	१३	३८
क्षद्म	३७	१५
क्षद्म:	३७	१५
क्षपा:	६	१६
क्षमा	४	५
क्षयति	१५	१२
क्षा	४	५
क्षिणोति	१५	६
क्षितय:	८	१
क्षिति:	४	४
क्षिप:	११	१३
क्षिपस्ती	१०	१२
क्षियति	१५	३
क्षीरम्	६	२५
क्षु	१३	३८
क्षुत्	१३	३८
क्षुमत्	१३	३८
क्षुम्पति	१५	६
क्षुम्पम्	२७	५४
क्षुल्लक:	९	३
क्षेत्रपति:	३	२१
क्षीण:	२९	८३
क्षोणम्	२९	८३
क्षोणि:	४	४

	पृष्ठ	श्लोक		पृष्ठ	श्लोक
क्षोणी	४	४	गम्भरम्	६	२०
क्षोदः	६	२६	गम्भीरा	११	१९
क्षोदति	१५	५	गम्भीरे	४	१
क्ष्मा	४	५	गयः	९	८
खजे	१३	३१	गयः	१३	३५
खले	१३	३१	गयः	१४	३९
खाः	७	२८	गर्त्तः	१४	३९
खातः	१४	४१	गल्दा	३१	१०६
खेदा	५	१०	गल्दा	१२	२१
खेदा	३५	२	गवते	१५	७
गणः	११	१८	गह्नम्	६	२०
गणः	१	३	गाति	१५	२
गधिता	२६	५०	गातुः	४	४
गध्यम्	२६	५१	गातुः	२४	२५
गन्ति	१५	६	गाथा	११	१९
गनीगन्ति	१५	९	गान्धर्वी	११	१८
गभस्तयः	५	१०	गायति	१६	१३
गभस्तयः	११	१४	गावः	७	३५
गभस्ती	१०	१२	गावः	४	१०
गभीरः	९	२	गावः	३५	२
गभीरम्	६	२०	गिरिः	६	१७
गभीरा	११	१९	गिर्वणाः	३०	९४
गभीरे	४	१	गीः	११	१८
गमति	१५	९	गूर्द्धयति	१६	१३

	पृष्ठ	श्लोक		पृष्ठ	श्लोक
गृणाति	१६	१३	घृताची	६	१६
गृत्सः	८	३	घोषः	११	१८
गोत्रः	६	१७	घ्रंसः	५	१२
गोत्रा	४	४	चकमानः	१७	२१
गौः	३	२५	चक्रत्	११	१५
गौः	४	४	चतति	१५	८
गौः	२४	२७	चनः	३९	७९
गौः	३५	१	चन्द्रम्	४	५
गौः	११	१८	चन्द्रमाः	४७	४५
गौः	८	४	चमसः	६	१८
गौः	२४	२७	चम्वौ	४	१
गौरी	११	१८	चयसे	२४	२९
ग्ना	१२	२१	चरुः	६	१८
ग्नाः	३५	१	चर्षणयः	८	२
ग्मा	४	५	चर्षणी	२७	६१
ग्रावा	६	१८	चष्टे	१६	२०
ग्रावा	२	१३	चाकन्	३२	११८
घर्मं	११	१७	चाकनत्	१७	२१
घर्मः	५	१२	चाकनत्	१६	२०
घृणः	५	१२	चिक्यत्	१६	२०
घृणिः	३८	२१	चित्	१९	१४
घृणिः	१४	४३	चित्	२६	४२
घृतम्	६	२१	चित्तम्	१२	२२
घृतवती	४	२	चित्रामघा	५	१३

	पृष्ठ	श्लोक
चेतः	१२	२२
चोष्कूयमाण	३२	१२०
च्यवानः	२४	२८
च्यवाना	१०	१२
च्यात्नम्	१२	२६
छदयते	१६	१६
छदिः	१४	४०
छन्त्सत्	१७	२१
छन्दः	८	४
छन्दति	१६	१६
छर्दिः	१४	४०
छाया	१४	४०
जगतः	८	१
जगती	१३	३७
जङ्गन्ति	१५	६
जगाति	१५	१०
जगायात्	१५	९
जज्झतीः	३२	१२४
जञ्जणाभवत्	१४	४२
जठरम्	२२	५
जन्तवः	८	१
जन्म	६	२५
जवारु	३२	११९
जमत्	१४	४३

	पृष्ठ	श्लोक
जमति	१५	९
जरते	१६	१३
जरते	१४	२८
जरिता	८	४
जरूथम्	३२	११८
जलम्	६	२०
जलाषम्	१२	२४
जलाषम्	६	२०
जल्पति	१६	१५
जल्हवः	३१	१०७
जवति	१५	९
जसति	१५	९
जसुरिः	२४	२१
जहा	२२	५
जाः	९	८
जातरूपम्	५	६
जातवेदाः	२	१०
जामयः	११	१४
जामि	२४	२१
जामिः	६	२४
जामिवत्	६	२६
जारयायि	३०	९७
जिगाति	१५	४
जिन्वन्ति	१५	३

	पृष्ठ	श्लोक
जिन्वन्ति	३१	११२
जिह्वा	१२	२१
जीरा	१४	४४
जुषते	१७	२१
जुहुरे	२४	२९
जूर्णिः	१२	२८
जूर्णिः	१४	४४
जूर्णिः	२८	७६
जूर्वति	१८	२८
जेहते	१५	३
जोषवाकम्	२६	५२
ज्मा	४	५
ज्या	२	१५
ज्युति	१७	२४
ज्रयति	१५	२
डीयते	१५	५
तकति	१५	८
तक्म	९	८
तक्वा	९	७
ततनुष्टिः	३१	१०१
तथा	१९	१४
तनयः	९	८
तना	१३	३५
तनूनपात्	२	११

	पृष्ठ	श्लोक
तपः	१४	४३
तपुषी	१२	२८
तमः	५	१५
तमस्वती	५	१५
तरणिः	१४	४५
तरः	१२	२५
तरस्वत्यः	७	३०
तरुष्यति	२५	३३
तड़ित्	९	५
तड़ित्	१७	२६
तवः	१२	२५
तवसः	९	१
तविषः	९	१
तविषी	१२	२७
तस्करः	८	६
तस्थुषः	८	१
ताजत्	१४	४५
तामुः	८	४
ताम्रम्	१०	११
तायुः	८	६
तार्क्ष्यः	७	३२
तार्क्ष्यक	३	२२
ताढि	१७	२६
तिग्मम्	१३	३०

	पृष्ठ	श्लोक
तितउ	२३	९
तिरः	३५	२
तिस्रोदेवीः	२	१२
तुक्षः	९	२
तुग्ग्रचा	६	२४
तुग्व	२३	१०
तुक्	९	८
तुजः	१२	२९
तुज्यमानासः	१४	४३
तुञ्जः	३०	९९
तुञ्जति	१७	२२
तुरीपम्	३२	११४
तुरीयति	१५	५
तुर्वणिः	२९	८५
तुर्वशा	८	१
तुर्वशे	९	५
तुवि	९	४
तूताव	२४	२५
तूतुजानः	१४	४३
तूतुजिः	१४	४३
तूतुमाकृषे	२७	५८
तूयम्	६	२१
तूयम्	१४	४५
तूर्णाशम्	२६	५०

	पृष्ठ	श्लोक
तूर्णिः	१४	४४
तृक्वा	९	७
तृक्षम्	१२	२५
तृणेढि	१७	२७
तृपुः	९	७
तृप्तिः	६	२४
तृषम्ः	९	३
तृषु	१४	४४
तेजः	६	२०
तेजः	१४	४३
तोकम्	९	८
तोका	९	८
तोदः	२६	४७
तोयम्	६	२१
तौरयाणः	२७	५४
त्यजः	१२	२८
त्वः	३५	४
त्वक्षः	१२	२५
त्वष्टा	२	१२
त्वष्टा	३	२२
त्वष्टा	३	२९
त्सरति	१५	३
था	१९	१४
दंसः	११	१५

	पृष्ठ	श्लोक
दंसयः	२४	२५
दक्षः	१२	२६
दघ्नोति	१५	७
दघ्यति	१५	७
दत्रम्	५	६
दद्धि	१६	१९
दधिक्राः	७	३२
दधिक्राः	३	२२
दधिक्रावाः	७	३२
दध्यङ्	३	२८
दनः	३३	१२६
दभ्नोति	१५	१०
दभ्नोति	१७	२६
दभ्रम्	९	३
दभ्रम्	३५	१
दमे	१४	४०
दमूनाः	२२	२
दयते	२०	३
दयते	२३	१४
दाति	१७	२२
दावा	२४	१८
दासति	१७	२२
दिद्युत्	१३	३०
दिनम्	५	१२

	पृष्ठ	श्लोक
दिवा	५	१२
दिविष्टय	३१	१११
दिवेदिवे	५	१२
दीदयति	१७	२४
दीधितयः	५	१०
दीधितयः	११	१४
दीयति	१५	६
दुन्दुभिः	२	१५
दुरितम्	२९	८५
दुरोणे	१४	३९
दुर्याः	१४	३९
दुवस्यति	१६	१७
दूतः	२५	३१
दूतः	३२	११८
दूरेअन्ते	४	३
दृतिः	६	१८
देवताता	११	१६
देवपत्न्यः	४	२९
देवयवः	८	५
देवाः	३	२८
देवाच्या	२९	७७
देवी (ऊर्जाहुती)	२	१६
देवी (जोष्ट्री)	२	१६
दैव्याहोतारा	२	१२

	पृष्ठ	श्लोक
दोधति	१७	२५
दोषा	६	१६
दौर्गहः	७	३२
द्यविद्यवि	५	१२
द्युः	५	१२
द्युगत	१४	४५
द्युति	१७	२४
द्युमत्	१७	२४
द्युम्नम्	१३	३६
द्युम्नम्	२६	४४
द्योतना	५	१३
द्यौः	५	१२
द्रमति	१५	४
द्रवत्	१४	४४
द्रवति	१५	४
द्रविणम्	१२	२७
द्रविणम्	१३	३६
द्रविणोदाः	२	१०
द्राति	१५	४
द्रुघणः	२	१४
द्रुपदम्	२३	७
द्रुम्मति	१५	१०
द्रुह्वः	८	१
द्रूणाति	१७	२६

	पृष्ठ	श्लोक
द्रूलति	१५	४
द्वारः	२	११
द्विता	२५	३५
द्विबर्हा	३२	११७
धनुः	२	१५
धन्व	५	७
धन्व	२५	३९
धन्वा	२५	३९
धन्वति	१५	७
धमति	१५	८
धमति	१७	२६
धमति	१६	१५
धमनि	११	२०
धरुणम्	६	२५
धर्णसिः	१२	२७
धवाः	८	१
धवति	१५	५
धस्मन्वत्	६	२६
धाता	३	२३
धारा	११	१८
धावति	१५	५
धासिः	१३	३८
धिषणा	११	२०
धिषणे	४	१

	पृष्ठ	श्लोक
धीः	११	१५
धीः	१२	२३
धीतयः	११	१३
धीरः	८	३
धुनयः	७	२७
धुरः	११	१३
धूर्वति	१७	२६
धेना	११	२०
धेनुः	३	२६
धेनुः	११	२०
ध्रजतिः	१४	१
ध्रति	१५	४
ध्रपति	१५	३
ध्राति	१५	३
ध्रुवति	१५	७
ध्वंसति	१४	१
ध्वरति	१७	२७
न	१९	१४
नसन्ते	२३	९
नकिः	१९	१३
नकीम्	१९	१३
नक्ता	५	१५
नक्षति	१५	३
नक्षति	१५	११

	पृष्ठ	श्लोक
नक्षद्दाभम्	२८	७१
नख्यति	१५	१०
नदः	८	४
नदः	२५	३३
नदति	१६	१३
नदतुः	१३	३०
नद्यः	२	१४
नद्यः	७	३१
नना	११	१९
नपात्	९	८
नप्त्रो	४	३
नभः	३५	१
नभः	६	२६
नभते	१७	२६
नभन्वा	७	२९
नभसी	४	२
नमः	१३	३८
नमः	१२	२९
नमस्यति	१६	१७
नम्या	६	१६
नरः	७	३४
नरः	८	१
नराशंसः	२	११
नवते	१५	७

	पृष्ठ	श्लोक
नवम्	१०	७
नवेदाः	८	३
नव्यम्	१०	७
नशत्	१५	११
नसते	१५	८
नसन्त	२३	९
नहुषः	८	२
नाकः	३५	१
नादः	८	४
नाम	६	१२
नार्यः	११	१७
नाड़ी	११	२०
निघृण्वः	९	३
निचुम्पुणः	२६	५३
निण्यम्	१०	८
नितोशते	१८	२७
निधा	२३	८
निबहयति	१८	२८
नियुतः	७	३५
नियुत्वान्	८	६
निर्ऋतिः	४	४
निर्णिक्	१०	११
निवपन्तु	१७	२७
निवित्	११	२०

	पृष्ठ	श्लोक
निशृम्भाः	३१	१०५
निष्षपी	२१	१२
निष्षपी	२७	५८
नीडम्	१४	३९
नीरम्	६	२५
नु	१४	४३
नु	१९	१४
नुकम्	१९	१३
नूच	२४	१९
नूचित्	२४	१९
नूतनम्	१०	७
नूत्नम्	१०	७
नृम्णम्	१२	२६
नृम्णम्	१३	३६
नेमः	१३	३८
नेमः	३५	४
नेमधिता	१३	३४
नेमिः	१२	२९
नौः	११	२०
नौति	१६	१४
पचता	२९	८१
पञ्चजनाः	८	२
पड्भिः	२५	३५
पणते	१६	१५

	पृष्ठ	श्लोक
पणायति	१६	१५
पतङ्गाः	७	३३
पतति	१५	४
पतिः	८	६
पत्यते	१५	१२
पथ्या	३	२६
पदिः	२७	५५
पनस्यति	१६	१४
पनायते	१६	१४
पपृक्षा	१६	१३
पयः	३९	३१
पयः	३९	३१
पयः	१३	३८
पयः	५	१५
पयस्वती	५	१५
पयस्वत्यः	७	३१
परशुः	१२	२९
पराके	१०	६
पराचैः	१०	६
परावतः	१०	६
पराशरः	३१	१०८
परि	१८	४
परि	२७	५५
परितक्म्या	२३	१२

	पृष्ठ	श्लोक
परिस्रव	१६	१२
परीणसा	९	४
पर्जन्यः	३	२१
पर्वतः	६	१७
पवते	१५	३
पवस्व	१६	१२
पस्त्यम्	१४	३९
पविः	१२	२१
पविः	१२	२९
पविः	२५	३५
पवित्रम्	६	२१
पवित्रम्	२६	४४
पाकः	१०	९
पाजः	१३	३८
पाजः	१२	२५
पायः	२९	७७
पादुः	२७	५५
पार्वत्यः	७	२९
पार्श्वौ	४	२
पितरः	३	२४
पिता	२४	२१
पितुः	१३	३८
पितुः	१३	३८
पिनाकम्	३५	३

	पृष्ठ	श्लोक
पिप्पलम्	६	२५
पिष्टम्	१०	१०
पिस्यति	१५	७
पीपरत्	१६	१८
पुरन्धिः	३२	१२२
पुरन्धिः	३२	१२२
पुरन्धी	४	१
पुरीषम्	६	२५
पुरु	९	४
पुरुभोजा	६	१९
पुरूरवाः	३	२३
पुलुकामः	२८	७५
पुष्करम्	५	७
पूजयति	१६	१४
पूरवः	८	२
पूर्णम्	६	२२
पूर्द्धि	१६	१८
पूर्व्यम्	१०	७
पूषा	४	४
पृक्ष	१३	३८
पृक्षे	१३	३१
पृच्छति	१६	१५
पृणक्षि	१७	२२
पृणाति	१७	२२

	पृष्ठ	श्लोक
पृतनाः	८	३
पृतनाः	१३	३१
पृतनाज्यम्	१३	३१
पृत्सु	१३	३१
पृथिवी	५	७
पृथिवी	२	१४
पृथिवी	३	२५
पृथुज्रयाः	२५	४०
पृथ्वी	४	४
पृथ्वी	४	२
पृश्निः	३५	१
पृषत्यः	७	३४
पेलयति	१५	२
पेशः	५	६
पेशः	१०	१०
प्रैद्धः	७	३२
पौंस्यम्	१२	२७
पौंस्ये	१३	३१
प्रकलवित्	२९	७९
प्रजा	९	८
प्रजापतिः	११	१६
प्रजापतिः	३	२३
प्रतद्वसु	३१	१०६
प्रतिष्ठा	९	३

	पृष्ठ	श्लोक
प्रतीच्यम्	१०	८
प्रत्नम्	१०	७
प्रदिवः	१०	७
प्रघने	१३	३०
प्रपित्वे	३५	२
प्रयः	६	२३
प्रवते	१५	७
प्रवयाः	१०	७
प्राशुः	१४	४४
प्लवते	१५	७
प्सरः	१०	१०
प्साति	१५	४
प्सुः	१०	१०
फणति	१५	८
फलिगः	६	१८
बहिष्ठः	९	१
बकुरः	३१	१०२
बट्	११	१७
बत	३२	१२१
बतः	३२	१२१
बन्धुः	१३	३५
बप्सति	१७	२३
बब्धाम्	१७	२३
बभस्ति	१७	२३

	पृष्ठ	श्लोक
बर्बुरम्	६	२५
बर्हणा	३२	११७
बर्हिः	२	११
बर्हिः	५	७
बर्हिः	६	२२
बर्हिषद	९	१
बल	६	१७
बलाहकः	६	१७
बलिशानः	६	१९
बहुले	४	२
बाधः	१२	२६
बाहू	१०	११
बिस्यति	१५	७
बीजम्	९	८
बुन्दः	३१	१०९
बुसम्	६	२५
बृबदुक्	२९	७८
बृबूकम्	६	२५
बृहत्	९	१
बृहस्पतिः	३	२१
बेकनाटा	३१	१०९
बेकुरा	१२	२१
ब्रध्नः	७	३२
ब्रध्नः	९	१

	पृष्ठ	श्लोक
ब्रह्म	१३	३८
ब्रह्म	१३	३६
ब्रह्मणस्पति	३	२१
भगः	३	२७
भगः	१३	३५
भनति	१६	१४
भन्दि	१७	२४
भन्दते	१६	१६
भन्दनाः	२५	३२
भरताः	८	५
भरित्रे	१०	१२
भरे	१३	३१
भर्म	५	६
भर्वति	१७	२३
भविष्यत्	६	२३
भसथः	१७	२३
भाऋजीकः	२८	७५
भानुः	५	१२
भामिः	१७	२५
भामः	१२	२८
भारती	११	१८
भारती	१	९
भास्वती	५	१३
भास्वत्यः	७	३१

	पृष्ठ	श्लोक
भुरण्यति	१५	३
भुरण्युः	१४	४४
भुरिजौ	१०	११
भुवनम्	६	२४
भूः	४	४
भूः	५	७
भूतः	३६	२१
भूतम्	६	२४
भूमिः	४	४
भूरि	९	४
भृगवः	३	२४
भृमिः	३२	१२१
भेषजम्	६	२४
भेषजम्	१२	२४
भोजि	१७	२५
भोजनम्	१३	३६
भ्यसते	३५	४
भ्रमति	१५	२
भ्राजिः	१७	२४
भ्राशिः	१७	२४
भ्राश्यति	१७	२४
भ्रीणति	१७	२५
भ्रेषति	१७	२५
मंहते	१७	२२

	पृष्ठ	श्लोक
मक्षु	१४	४४
मखः	११	१६
मघम्	१३	३५
मज्मना	१२	२७
मण्डूकः	२	१३
मतयः	८	३
मतुथाः	८	३
मदति	१६	१३
मदेमहि	१६	१८
मधु	६	२५
मध्या	२३	१०
मनश्चित्	८	३
मनामहे	१६	१८
मनीषिणः	८	३
मनुः	३	२८
मनुष्याः	८	२
मन्त्रयते	१६	१६
मन्दिः	१७	२४
मन्दते	१६	१६
मन्दी	२४	१९
मन्दू	२३	१५
मन्द्रयते	१६	१६
मन्द्रा	११	१९
मन्द्राजनी	११	१९

	पृष्ठ	श्लोक
मन्महे	१६	१८
मन्धाता	८	३
मन्यते	१७	२१
मन्यते	१६	१३
मन्युः	१२	२८
मन्युः	३	२२
ममसत्यम्	१३	३४
मयः	१८	२४
मयूखाः	५	११
मरीचिपाः	५	१०
मरुत्	४	५
मरुत्	१०	१०
मरुतः	१	७
मरुतः	८	५
मरुतः	३	२४
मर्त्ताः	८	१
मर्त्त्या	८	१
मर्दति	१५	३
मर्दति	१८	२८
मर्याः	८	१
मलिम्लुचेः	९	७
मल्मलाभवत्	१४	४२
महः	६	२२
महत्	६	२२

	पृष्ठ	श्लोक
महत्	९	१
महयति	१६	१६
महाधने	१३	३०
महिषः	९	१
मही	४	४
मही	१२	२१
मही	१३	३७
मही	४	१
माश्चित्व	७	३२
माकिः	१९	१३
मातरः	७	२९
मायते	१६	१८
माया	१२	२२
मायुः	११	२०
मायुकः	९	३
मार्ष्टि	१४	१
माहिनः	९	२
मित्रः	३	२०
मित्रः	३	२९
मिनाति	१५	८
मिनाति	१७	२६
मिनोति	१७	२६
मिनोति	१५	८
मिमिड्ढि	१६	१९
मिमीहि	१६	१९
मिस्यति	१५	७
मीढुम्	१३	३५
मीढ्	१३	३१
मुषीवान्	९	७
मूषः	२२	४
मृध्रः	१३	३१
मेघः	६	१७
मेधः	११	१६
मेधा	१३	३६
मेना	११	२०
मेना	३५	१
मेनिः	१२	२९
मेडिः	११	२०
मेहना	२२	३
मोकी	५	१५
म्यक्षति	१५	३
यज्ञः	४	३२
यज्ञः	११	१६
यतते	१५	६
यतस्रुचः	८	५
यथा	१९	१४
यदवः	८	२
यन्तारः	१६	१८
यन्धि	१६	१८
यमः	३	२१
यमः	४	२७
यमी	३	२५
यम्या	६	१६
यव्याः	७	२७
यशः	६	२२
यशः	१३	३६
यशः	१३	३८
यहः	६	२३
यहः	१२	२६
यहुः	९	८
यह्वः	९	२
यातयति	१७	२६
याति	१५	४
यादुः	६	२३
यादृस्मिन्	३०	९८
यामि	१६	१८
युगत्	१४	४५
युध्यति	१५	५
योक्त्राणि	११	१४
योजनानि	११	१३
योनिः	७	२७
योनिः	१४	३९
योषिष्टि	१५	६
यौति	१६	१४
रंसु	३०	९३
रंहति	१५	६
रजः	५	१५
रजः	४०	४०
रजः	२३	१३
रजति	१५	८
रजयति	१६	१४
रजसी	४	२
रञ्जयति	१६	१३
रणः	१३	३४
रत्नम्	१३	३५
रथः	२	१५
रथर्यति	१५	६
रथर्यति	३२	१२३
रभसः	९	१
रम्णति	१७	२६
रम्भः	३५	३
रयिः	६	२३
रयिः	४०	४०
रशनाः	११	१३
रश्मयः	५	१०
रश्मयः	३५	२

	पृष्ठ	श्लोक
वर्चः	१३	३८
वर्णः	१९	१४
वर्त्तंत्ते	१४	१
वर्पः	१०	१०
वर्म	१४	४०
वर्यः	७	२८
वल्गुः	१२	२१
वल्गूयति	१६	१३
ववक्षिथः	९	२
वव्रः	१४	४१
वव्रिः	१०	१०
वशिष्ठाः	३	२४
वश्मि	१७	२१
वष्टि	१७	२१
वसुः	३	२८
वसुः	१३	३६
वसवः	५	११
वसवः	१	३
वस्तोः	५	१२
वस्वी	५	१५
वहते	१५	८
वह्नि	७	३२
वाः	६	२०
वाक्	१२	२१

	पृष्ठ	श्लोक
वाक्	३	२५
वाघतः	८	३
वाघतः	८	५
वाचस्पतिः	३	२१
वाज	१३	३८
वाजगन्ध्यः	२६	५२
वाजपस्त्यः	२६	५२
वाजयति	१६	१४
वाजसातौ	१३	३२
वाजिनी	५	१३
वाजिनीवती	५	१३
वाजी	७	३१
वाजे	१३	३४
वाञ्छति	१७	२१
वाणः	११	१८
वाणी	११	१९
वाणीची	११	१९
वातः	३	२२
वातंरहा	१४	४५
वाताप्यम्	३२	१२२
वाति	१५	३
वामः	१०	९
वायुः	३	२१
वारि	६	२०

	पृष्ठ	श्लोक
वार्यम्	२५	३१
वावशानः	२५	३०
वाशी	११	१९
वाशी	२४	१८
वासरम्	५	१२
वास्तोष्पतिः	३	२१
वाहः	२३	१५
वाहिष्ठः	२५	३६
विखादः	१३	३०
विग्रः	८	३
विचष्टे	१६	२०
विचर्षणिः	१६	२०
विजानाता	२९	८२
विदथः	११	१६
विदथानि	२१	१७
विद्रधं	२३	७
विधाता	८	३
विधाता	३	२३
विधति	१६	१७
विनङ्गृसौ	१०	११
विपः	११	१३
विपः	८	३
विपन्यवः	८	३
विपश्चित्	८	३

	पृष्ठ	श्लोक
विपा	१२	२१
विपाट्छुतुद्र्यौ	२	१७
विप्रः	८	३
विभावरी	५	१४
वियत्	५	७
वियातः	१७	२६
वियुते	२४	२८
विर्पशी	९	१
विवस्वन्तः	८	२
विवाक्	१३	३०
विवासति	१६	१७
विशः	८	१
विश्वम्	९	४
विश्वकर्मा	३	२२
विश्वचर्षणिः	१६	२०
विश्वरूपाः	७	३५
विश्वानरः	३	२३
विश्वानरः	३	२७
विश्वेदेवा	३	३०
विषन्धि	६	१८
विषम्	६	२५
विषिष्टि	१५	६
विषुणः	२४	१९
विष्टप्	३५	१

	पृष्ठ	श्लोक
विष्ट्वी	११	१५
विष्णुः	११	१६
विष्णुः	२६	४८
विष्पितः	३३	१२६
विस्रुहः	२९	८३
विहाया	९	१
वीरीटे	२७	६०
वीरुधः	२९	७९
वीडु	१२	२६
वृक्	१२	२६
वृकः	१२	२९
वृकः	९	७
वृकः	२६	४९
वृक्तवर्हिषः	८	५
वृजनम्	१२	२६
वृणक्ति	१७	२६
वृतम्	१३	३६
वृत्रः	६	१८
वृत्रम्	१३	३६
वृत्रतूर्ये	१३	३२
वृन्दम्	३१	१०९
वृश्चतिः	१७	२७
वृषन्धि	६	१८

	पृष्ठ	श्लोक
वृषभः	२	१४
वृषाकपिः	३	२७
वृषाकपायी	३	२८
वेति	१७	२१
वेति	१७	२३
वेति	१५	४
वेदः	१३	३५
वेधाः	८	३
वेनः	८	३
वेनः	११	१६
वेनः	३	२३
वेनति	१७	२१
वेनति	१५	४
वेनति	१६	१४
वेपः	११	१५
वेवेष्टि	१७	२३
वेशति	१७	२१
वेषः	११	१५
वैतसः	३५	३
वैश्वानरः	२	१०
व्यथि	१२	२८
व्यन्तः	२३	११
व्यानशि	९	४
व्योम	५	७

	पृष्ठ	श्लोक
व्योम	५	९
व्योम	६	२४
व्रजः	६	१७
व्रजति	१५	५
व्रतम्	११	१५
व्रन्दी	२८	६७
व्राः	२५	३६
व्राताः	८	१
व्राधन्	९	१
व्रिशः	११	१३
शयुः	२४	२२
शसति	१६	१४
शकुनिः	२	१३
शक्तिः	११	१५
शक्म	११	१५
शक्वरी	१०	१२
शक्वरी	१३	३७
शग्धि	१६	१९
शग्मम्	१२	२४
शची	१२	२१
शची	११	१५
शची	१२	२२
शतम्	९	४
शतरा	१२	२३

	पृष्ठ	श्लोक
शब्दः	११	१८
शम्	१२	२५
शम्नाति	१७	३६
शमी	११	१५
शम्बः	२७	६१
शम्बरः	६	१७
शम्बरम्	६	२१
शम्बरम्	१२	२६
शरणम्	१४	३९
शरारुः	३३	१२६
शर्धः	१२	२५
शर्म	१४	४०
शर्या	११	१३
शर्या	२६	४२
शर्वरी	५	१५
शवति	१५	८
शवः	६	२३
शवः	१२	२५
शशमानः	१६	१३
शशमानः	२९	८०
शश्वत्	९	४
शाखाः	११	१४
शातपन्ता	१२	२४
शाशदानः	२९	८०

	पृष्ठ	श्लोक		पृष्ठ	श्लोक
शिक्षति	१७	२२	शूर्त्ता	१४	४४
शिताम	२२	४	शूषम्	१२	२६
शिपिविष्टः	२६	४६	शूषम्	१२	२४
शिप्रे	३०	८९	शृङ्‌गम्	१४	४२
शिमी	११	१५	शृणाति	१७	२६
शिम्बाता	१२	२३	शेपः	३५	३
शिरिणा	६	१६	शेवम्	१२	२३
शिरिम्बि	३१	१०८	शेवृधम्	१२	२३
शिल्गुः	१२	२५	शेषः	९	८
शिल्पम्	११	१५	शोकी	५	१५
शिल्पम्	१०	१०	शोचति	१७	२४
शिवम्	१२	२३	शोचिः	१४	४३
शिशीते	२४	२०	श्चोतति	१५	२
शीभम्	१४	४४	श्मशा	२६	४७
शीरम्	२३	८	श्यावाः	७	३४
शु	१४	४४	श्यावी	५	१५
शुक्रम्	६	२१	श्येनः	३	२३
शुनम्	१२	२४	श्येनासः	७	३३
शुनासीरौ	२	१६	श्रत्	११	१७
शुभम्	६	२२	श्रथति	१८	२८
शुरुधः	२९	७९	श्रद्धा	२	१४
शुष्मम्	१२	२६	श्रवः	१३	३८
शूधनासः	१४	४५	श्रवः	१३	३६
शूरसातौ	१३	३२	श्रायन्तः	२९	८१

	पृष्ठ	श्लोक		पृष्ठ	श्लोक
श्रुष्टी	२९	८६	सतः	३५	२
श्लथति	१८	२८	सतीनम्	६	२४
श्लोकः	११	१८	सत्यम्	६	२३
श्वघ्नी	२८	६७	सत्रा	११	१७
श्वसति	१८	२७	सदनम्	६	२२
श्वसिति	१७	२७	सदसो	४	१
श्वात्रति	१५	८	सद्मनी	४	२
श्वात्रम्	१३	३५	सदान्वे	३२	१२४
श्वात्रम्	२५	३३	सद्म	६	२२
श्वेत्वा	५	१२	सद्म	१३	३२
ष्वःकति	१५	९	सद्म	१४	३९
संयत्	१३	३३	सनाभयः	११	१४
संयुगे	१३	३३	सनुतः	१०	८
सक्षति	१५	३	सनेमि	१०	७
सगरः	५	८	सपति	१६	१७
सङ्काः	१३	३३	सपर्यति	१६	१७
सङ्‌ख्ये	१३	३३	सप्तऋषयः	५	११
सङ्‌गथे	१३	३३	सप्तऋषयः	३	२८
सङ्‌गमे	१३	३३	सप्तर्षयः	३	३०
सङ्‌गे	१३	३३	सप्तिः	७	३१
सचति	१५	८	सप्रथाः	२९	७७
सचते	३५	४	सबाधः	८	५
सचा	२५	४०	समत्सु	१३	२
सत्	६	२१	समनम्	१३	३३

	पृष्ठ	श्लोक
समनीके	१३	३४
समरणे	१३	३४
समर्ये	१३	३२
समः	२७	६३
समितिः	१३	३३
समीके	१३	३४
समुद्रः	५	८
समोहे	१३	३२
सरण्युः	४	२८
सरमा	३	२५
सरः	११	१८
सरः	६	२३
सरस्वान्	३	२२
सरस्वती	११	१९
सरस्वती	३	२५
सरस्वत्यः	१	९
सरस्वत्यः	७	३०
सरितः	७	२८
सर्गाः	६	२२
सर्णीकम्	६	२४
सर्पति	१४	१
सर्वम्	६	२१
ससृते	१५	२
सललूकम्	२८	६८

	पृष्ठ	श्लोक
सलिलम्	६	२६
सलिलम्	९	४
सवनम्	११	१६
सविता	३	२२
सविता	३	२७
सवीमेति	२८	७२
सश्चति	१५	२
ससम्	१३	३८
ससम्	२५	३४
सस्ति	१८	२९
सस्निः	२५	३०
सस्रति	१५	१०
सस्रुतः	८	२८
सस्वः	१०	८
सहः	६	२३
सहः	१२	२६
सहस्रम्	९	४
साचिवित्	१४	४४
साध्याः	५	१०
साध्यदेवाः	३	३०
सायकः	१२	२९
सिनम्	१३	३८
सिनम्	२५	४०
सिनीवाली	३	२३

	पृष्ट	श्लोक
सिन्धवः	७	२९
सिरा	७	२७
सिषक्तु	३५	४
सिस्रति	१४	१०
सीनम्	१३	३८
सीम्	२७	६२
सीयते	१५	५
सीराः	१०	२८
सुकम्	१९	१३
सुक्षेम	६	२५
सुखम्	१२	२३
सुग्म्यम्	१२	२४
सुतः	१३	३८
सुतुकः	२४	२०
सुदत्रः	३०	९२
सुदिनम्	१२	२४
सुनीथः	१०	९
सुपर्णाः	३	२३
सुपर्णाः	५	११
सुपर्णाः	७	३३
सुपर्णी	१२	२१
सुप्रायणाः	२४	२५
सुमत्	३०	९९
सुम्नम्	१२	२४

	पृष्ठ	श्लोक
सुम्नावरी	५	१३
सुविते	२३	१३
सुविदत्रः	३०	९२
सुशिप्रः	३०	८९
सूदः	१४	४१
सूनरी	५	१४
सूनुः	९	८
सूनृताः	५	१४
सूनृताः	१३	३८
सूनृतावती	५	१४
सूनृतावरी	५	१४
सूरिः	८	२४
सूर्त्ते	३०	९०
सूर्यः	३	२७
सूर्या	३	२८
सृकः	१२	२९
सृणिः	२७	६१
सृप्रः	३०	८९
सेधति	१५	४
सोमः	३	२३
सोमः	४	३२
सोमानम्	२९	८७
स्तामुः	८	४
स्तिपाः	२९	८६

	पृष्ठ	श्लोक		पृष्ठ	श्लोक
स्तिया	२९	८५	स्वः	३५	१
			स्वञ्चा	२६	४७
स्तुप्	८	४	स्वदति	१६	१५
स्तृणाति	१७	२६	स्वधा	६	२०
स्तृभिः	३५	१	स्वधा	१३	३८
स्तोभति	१६	१५	स्वधितिः	१२	२९
स्तौति	१६	१४	स्वधे	४	१
स्नथयति	१७	२७	स्वनः	११	१८
स्नेहति	१८	२७	स्वपिति	१८	२९
स्नेहयति	१८	२७	स्वयम्भूः	५	७
स्पृधः	१३	३१	स्वरः	११	१८
स्फुरति	१८	२८	स्वरति	१५	२
स्फुलति	१८	२८	स्वरति	१६	१५
स्यन्दते	१४	१	स्वसराणि	५	१२
स्यन्द्रासः	१२	२७	स्वसराणि	२८	६७
स्यमति	१४	१	स्वसराणि	१४	३९
स्यूमकम्	१२	२४	स्वसारः	११	१४
स्योनम्	१२	२४	स्वादः	७	२८
स्रंसति	१४	१	स्वस्तिः	३	२६
स्रवति	१४	१	स्वाहा	११	१९
स्रवन्तिका	७	३०	स्वाहाकृतयः	२	११
स्रोतः	६	२४	स्वृतीकम्	६	२४
स्रोत्याः	७	२७	हँसास	७	३३
स्वः	६	२२	हनति	१५	८

	पृष्ठ	श्लोक		पृष्ठ	श्लोक
हन्ति	१५	३	हिकम्	१९	१३
हन्तात्	१५	९	हिनोत	३१	१०९
हम्मति	१५	१०	हिमा	.५	१५
हयः	७	३२	हिरण्यम्	४	५
हयति	१५	९	हिरण्यवर्णाः	७	३०
हयन्तात्	१५	९	हिरुक्	१०	८
हरयाणः	२७	५६	हुरश्चित्	९	७
हरः	२३	१६	हृणिः	१४	४३
हरः	१४	४३	हृणिः	१२	२८
हरः	१२	२८	हृणीयते	१७	२५
हरिः	८	१	हेति	१३	३०
हरस्वत्य	७	३०	हेम	४	५
हरितः	५	९	हेम	६	२२
हरितः	७	२८	हेडः	१२	२८
हरितः	७	३५	होत्रा	११	२०
हरितः	११	१४	होत्रा	११	१६
हरी	७	३६	ह्रस्वः	९	३
हर्म्यम्	१४	४०	ह्वयते	१६	१५
हर्यति	१५	२	ह्वरः	१२	२८
हर्यति	१७	२१	ह्वरति	१७	२३
हविः	६	२१	ह्वार्या	७	३३
हविर्धाने	२	१६			
हस्तघ्नः	२	१५			
हासमानम्	२५	३४			

शुभम्

इति ।

परोपकारिणी सभा द्वारा सद्यःप्रकाशित ग्रन्थ

वैदिक संध्या मीमांसा	१२/-	आर्यसमाज और शोध	१५/-
आर्यसमाज की मान्यताएं	६/-	ऋषि दयानन्द की वेदभाष्यशैली	२०/-
प्राणायाम चिकित्सा	२०/-	वेद और कर्मकांडीय विनियोग	३१/-
प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत	८/-	अथर्ववेद समस्याएं और समाधान	३५/-
		वेद और विदेशी विद्वान्	३५/-
दयानन्द सूक्ति-सुमन	२५/-	यजुर्वेद भाष्य विवरणम्	२५/-
दयानन्द सूक्ति-मुक्तावली	१५/-	श्री भवानीदयाल संन्यासी	२५/-
वेदार्थ विमर्शः	२५/-	वैदिककोषः (निघण्टु)	२५/-

चारों वेद संहिताएं ३२०/-

ऋग्वेद भाष्य (१२ खण्ड)	७५०/-	यजुर्वेद भाष्य (४ खण्ड)	३००/-
ऋग्वेद भाषाभाष्य (१२ खण्ड)	२८५/-	यजुर्वेद भाषाभाष्य (२ खण्ड)	१००/-
सत्यार्थप्रकाश	४०/-	संस्कारविधि	१५/-
ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	२०/-	वेदांगप्रकाश (१३ भाग)	१७०/-
दयानन्द ग्रंथमाला (२ खण्ड)	१२०/-	नवजागरण के पुरोधा म. दयानन्द	६०/-

म. दयानन्द निर्वाण शति स्मृति ग्रंथ १००/-

महर्षि दयानन्द का जीवन चरित (अंग्रेजी) २००/-

प्राप्ति-स्थल

वैदिक पुस्तकालय

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

* ओ३म् *

आर्यसमाज के नियम

१—सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदिमूल परमेश्वर है।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३—वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४—सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७—सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें॥